कालिंदी प्रवाह

॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज
रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-
मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके
मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की
आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्री-रामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावण-वध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभाव-न रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

दोहा—दै पत्री इहि भाँति चहुँ, भेजे दूत अपार ॥
सिय गुण रूप विदेह प्रण, विदित भयो संसार ॥ २८ ॥
सुनि मानी महिपाल बहु, विपुल बली हुलसाय ॥
आये मिथिला नगरमें, निज निज साज सजाय ॥ २९ ॥
सन्माने सबही जनक, यथा उचित शुचि भाय ॥
पुनि दरशायो चाप नृप, निज प्रण सकल सुनाय ॥ ३० ॥
लखि कोदंड अखंड अति, परम प्रचंड उदंड ॥
भूप महावर बंडते, हृदय भये शत खंड ॥ ३१ ॥
कोऊ नृप लखि दूरही, रहे न लायो हाथ ॥
कोऊ भूपति हेरिकै, चापहि नायो माथ ॥ ३२ ॥
कोऊ अतिमानी सुते, गहि बल कियो अपार ॥
रंचहु डगो न शंभु धनु, रहे मानि हिय हार ॥ ३३ ॥
कोऊ धनु गरुता सुनत, गवने नहीं सुठाम ॥
कोऊ आवत बीचते, लौट गये निजधाम ॥ ३४ ॥
कोऊ हठि सिय लेन हित, ठानो कुटिल बिचार ॥
युद्धकियो मिथिलेश ते, तऊ न पायो पार ॥ ३५
तन मन धन जन मान गुन, ज्ञान सान घनकान ॥
खोय गये निज निज सबै, रावणसे बलवान ॥ ३६ ॥
याही विधि आवैं सदा, जनकनगर बहु भूप ॥
चाप डगत नहिं काहुते. खोय जात सब रूप ॥ ३७ ॥
जनक नगर नित रैनि दिन, भारी भीर रहात ॥
चहूँ ओरके भूप वर, इक आवत इक जात ॥ ३८ ॥
पुनि भेजे नृप पत्र वर, सकल मुनिनके धाम ॥
आये कौतुक लखनको, धनुष यज्ञ अभिराम ॥ ३९ ॥
येही विधि बहु दिवसलौं, आये बली अपार ॥
डगो चाप नहिं जनक तब, दुखित भये हिय हार ॥ ४० ॥
निशि दिन नृपरानी सकल, पुरजन दैव मनाय ॥
कहैं सियाको व्याह वर, निरखैं ईश सहाय ॥ ४१ ॥

इति श्रीरामरसायन व्या० वि० धनुषयज्ञारंभ
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

चौ०-दिशि दिशि ते बहु ऋषिगण आये ❀ मिथिला चहूँ ओरसब छाये
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❀ धनुषयज्ञ दरशन मति ठानी १॥
पै मुनि मन अति खेद रहावै ❀ पूरण होम होन नहिं पावै ॥
अनल धूम लखि निश्चर भारी ❀ करैं विघ्न ऋषि रहैं दुखारी ॥ २ ॥
कौशिक मुनि मन सोच अपारा ❀ किमि पूरण मख होय हमारा ॥
पुनि ऋषिराज सुहीय विचारी ❀ जाते बनै यज्ञ रखवारी ॥ ३ ॥
ह्वै प्रसन्न मुनि अवध सिधाये ❀ दशरथ राजद्वार पहँ आये ॥
सुनि नरेश उठि आगे आने ❀ करि प्रणाम पूजे सनमाने ४ ॥
सिंहासन पर मुनि पधराये ❀ वेगि चारहू कुवँर बुलाये ॥
ऋषि चरणन मेले तिन भूपा ❀ कौशिक भये मगनलखिरूपा५॥

सो०-पुनि करजोरि बहोरि, भूप सभाशिर नायकै ॥
किये प्रणाम निहोरि, मुनि अशीश सबहीदयो ॥ ६ ॥
पुनि वसिष्ठ द्विजवृंद, मिले यथोचित कौशिकहि ॥
बूझि कुशल सानंद, निज निज थल बैठे सकल ॥ ७ ॥
तब कर जोरि बहोरि, भूप कही ऋषि राजसों ॥
कीनी कृपा करोरि, नाथ मोहिं दरशन दियो ॥ ८ ॥
जो कुछ होय रजाय, सो शिर धरि वेगै करौं ॥
सुनि कौशिक हुलसाय, बोलै दशरथ रायसों ॥ ९ ॥
यज्ञ न पूरण होत, याते हम अति दुखित हैं ॥
सदा निशाचर गोत, विघ्न करत हैं आय बहु ॥ १० ॥
याते तुव सुत राम, लषण देहु खल दलन हित ॥
ह्वो परिपूरणकाम, सुयशरहै तिहुँ लोकमें ॥ ११ ॥
सुनि मुनि वचन नृपाल, विकल भये बहु शोचवश ॥
पुनि धरि धीर उताल, कह्यो कौशिकहि जोरिकर ॥ १२ ॥
नाथ बाल रघुनाथ, युद्ध कहा जानैं अबै ॥
सजि अनीक प्रभु साथ, हौं चलि मख रक्षा करौं ॥ १३ ॥
सुनि बोले मुनि बैन, हम कानन वासी तपी ॥
संग लेंय नाहिं सैन, राम लषण याचत तुमैं ॥ १४ ॥

सुनि चुपरहे नरेश, तब वसिष्ठ बहु भाँतिते ॥
नृपहि दियो उपदेश, ज्ञान धर्म वर नीति कहि ॥ १५ ॥
तब ह्वै मुदित भुवाल, कहो कौशिकहि जोरि कर ॥
दुहूँ रावरे बाल, लै निज संग सिधारिये ॥ १६ ॥
पैजो होहि रजाय, राम सखा सँग रहहिं तौ ॥
सुनि बोले मुनिराय, नृपशंका निरवारिकै ॥ १७ ॥

चौ०सुनिय अवध पति वचन हमारे ❀ तुव सुत सकल प्राणते प्यारे ॥
याते राम लषण हम याचे ❀ निरखे सबै प्रेम पन साँचे १८॥
लषण रहैं रघुवरके संगा ❀ संयुत प्रीति प्रतीति उमंगा ॥
और समाज साज नहिं कोऊ ❀ केवल चहिय भूप सुत दोऊ१९॥
रंचहु कछु कलेश नाहिं पैहैं ❀ गृहते सरस सुखी नित रैहैं ॥
ज्यौं सुत हैं तुव प्राण अधारे ❀ तिहिते अधिक मोहिं दुहुँ प्यारे२०
सुनि भूपति दुहुँ सुतन बुलाई ❀ धर्मनीति रणरीति शिखाई ॥
कह्यौ जाहु सँग दोऊ भाई ❀ निज पितु गुरु जानौ ऋषिराई२१
सुनि प्रमुदित पितु पद शिरनाई ❀ लै धनु बाण सुअंग सजाई ॥
चरण वंदि सब मातन केरे ❀ दई धीर कहि बचन घनेरे २२॥
बंधु सखन मिलि मिलि बहुवारा ❀ नृपहि कियो पुनि आय जुहारा॥
पुनि प्रोहित द्विज वृंद समेता ❀ वंदन किये सुबुद्धि निकेता २३॥
तब भूपति दुहुँ सुत उर लाये ❀ गद्गद कंठ नैन जल छाये ॥
बोले मुनिहि दीन करजोरी ❀ सुनिय नाथ यह विनती मोरी२४
सो उपाय कीजे मुनिनाथा ❀ निरखौं वेगि लषण रघुनाथा ॥
यों कहि दुहुँ सुत कर गहि राई ❀ सौंपे मुनिहिं प्रतीति दिढाई२५॥
सहित समाज ऋषिहि नृप वंदे ❀ पुनि मिलि द्विज गुरु सकल अनंदे
दे अशीश भूपहि मुनिनाथा ❀ चले राम लछमन लै साथा२६

तोमरछंद।

लै राम लछमन संग ॥ मुनि चले पुलकित अंग ॥
मग जातहीं अधबीच ॥ लखि ताड़का तिय नीच ॥ २७ ॥
आई सुप्रेरितकाल ॥ धाई सक्रोध कराल ॥

लखि कही कौशिक राम ॥ इहि हतौ यह खल वाम ॥ २८ ॥
रघुवीर आयसु मान ॥ मारो जु इक शर तान ॥
तनु भयो प्राणविहीन ॥ लखि दीन तिहि गतिदीन ॥ २९ ॥
तिहि वध विलोकि मुनीश ॥ रघुवरहि दीन अशीश ॥
दुहुँ बंधु हिय हुलसाय ॥ लीने सुहृदय लगाय ॥ ३० ॥
पुनि दुहुँनको ऋषि भूप ॥ दीने सु अस्त्र अनूप ॥
विद्या सु और अनेक ॥ इकते विशद वर एक ॥ ३१ ॥
मुनि राम लषणहि दीन ॥ भे दुहूँ बंधु प्रबीन ॥
तनु तेज बल सरसान ॥ उर अमित सुख दरशान ॥ ३२ ॥
पुनि आश्रमहिं निज आय ॥ मुनि कही अब रघुराय ॥
हम करहिं यज्ञरचाय ॥ दुहुँ बंधु रहहु सहाय ॥ ३३ ॥
ह्वै सजग नृपति किशोर ॥ दुहुँ वीर वर वर जोर ॥
मखपाल भये उतंक ॥ मुनि कियो यज्ञ निशंक ॥ ३४ ॥
दिन पंच मख मुनि कीन ॥ जब पूर्ण आहुति दीन ॥
तब उठो धूम अपार ॥ भो गगन लों विस्तार ॥ ३५ ॥
अवलोकि नभ मख धूम ॥ धाये असुर करि धूम ॥
मारीच दल युत नीच ॥ आयो सुबाहु समीच ॥ ३६ ॥
कीने अमित उतपात ॥ तम छयो कछु न दिखात ॥
बरषै उपल मल धूरि ॥ दशहूँदिशा भरि पूरि ॥ ३७ ॥
नभ भूमिमें चहुँ ओर ॥ बहु घोर छावत शोर ॥
कितहूँ न कोउ जनात ॥ दुहुँ बंधु अति अकुलात ॥ ३८ ॥
तब मरुत शर रघुवीर ॥ छोड़ो सकोप सुधीर ॥
ह्वै तुरत सब तम नाश ॥ भो दशहुदिशहि प्रकाश ॥ ३९ ॥
वह बाण विन फर जाय ॥ मारीच लागसुधाय ॥
सो करत घोर चिकार ॥ उड़ि परो जलनिधि पार ॥ ४० ॥
लखि यातुधान सकोप ॥ धाये दशौ दिशि गोप ॥
कीनो अमित सँग राम ॥ निरद्वंद लछमन राम ॥ ४१ ॥
करि क्रोध दोउ सुबीर ॥ छोडे विशिखवर तीर ॥
सो कालदंड समान ॥ लीने जु खलबल प्रान ॥ ४२ ॥

लगि अनलशर कर दाहु ॥ भो भस्म बीर सुबाहु ॥
पुनि अपर दलहि सँहार ॥ कीनो सु पलक मझार ॥ ४३ ॥
इहि भाँति मारि सुरारि ॥ दुहुँ बंधु अंग सम्हारि ॥
आनंद हिय हुलसाय ॥ आये गहे गुरु पाय ॥ ४४ ॥
हिय लाय मुदित मुनीश ॥ दुहुँ दीन अमित अशीश ॥
आकाश अवनि मझार ॥ चहुँ भयो जैजैकार ॥ ४५ ॥
इहि भाँति ऋषि मखपाल ॥ बोले दुहू रघुलाल ॥
अब और काह रजाय ॥ सो भाषिये मुनिराय ॥ ४६ ॥
दोहा—सुनि बोले कौशिक हरषि, सुबल तिहारे राम ॥
निरखि यज्ञपूरण भये, हम परिपूरण काम ॥ ४७ ॥
सुनि दुहुँ बंधु सुजोरि कर, कही सकुचि शिरनाय ॥
बनै बाल ते काह यह, सब रावरो प्रभाय ॥ ४८ ॥
तब दोऊ नृप सुतनसों, बोले पुनि सरवज्ञ ॥
चलौ जनकपुर देखिये, रचो जनक धनुयज्ञ ॥ ४९ ॥
सुनि आज्ञा मन मुदित ह्वै, गुरु पद नायो माथ ॥
चले जनकपुर बंधु दुहुँ, कौशिक मुनिके साथ ॥ ५० ॥
चले गाधिसुत मुदित मग, वर्णत बहु इतिहास ॥
रामलषण मुनिजन सकल, सुनि हिय होत हुलास ५१
इहि विधि आये बिपिन इक, लखी उपलमय वाम ॥
पूछो भेद सु मुनिहिसे, चकित चित्त ह्वै राम ॥ ५२ ॥
विश्वामित्र प्रसन्न ह्वै, कही सुनौ रघुनाथ ॥
यह तिय पाहन जिमि भई, वर्णत हौं सब गाथ ॥ ५३ ॥
चौ०—गौतम ऋषि सर्वज्ञ सुजाना ❋ जिनकी कीरति विदित जहाना ॥
है तिनही मुनिकी यह वामा ❋ अति सुंदरी अहल्या नामा ५४ ॥
या मिलि कियो अमरपति पापा ❋ उपल भई निज पतिके शापा ॥
ताको फल सुरेश भल पायो ❋ जो सहस्रभग नाम कहायो ५५ ॥
ऐक समै सुरराज सिधाये ❋ गौतम भवन मुदित ह्वै आये ॥
लखिमुनिनारि निपटमन लोभे ❋ मनसिज विवशाचित्त अतिछोभे ५६

तहँते गये विकल निज धामा ❀ सुरपति हिये वसी मुनि वामा ॥
पुनि वासव दृढ़ युक्ति विचारी ❀ जाते मिलै अहल्यानारी॥५७॥
ऋषि आश्रम आये सुरराया ❀ अर्धरैनि कीनी यह माया ॥
कछु उजासभो प्रात समाना ❀ बोलन लगे पक्षिगण नाना५८॥
मंजन समय जानि मुनिराई ❀ गये वेगि तिय सदन विहाई ॥
ताही दिन ऋतुते मुनि नारी ❀ भई पुनीत रीत युत सारी॥५९॥
सून भवन जब सुरपति देखा ❀ तब आये करि गौतम भेषा ॥
सोमुनि तिया इन्द्र पहिचानो ❀ पै चुपरही मदन उमगानो६०॥
लखि बोली हँसि बचन सुहाये ❀ आज वेगि मंजन करि आये ॥
सुनि मुनि कपट वेष सुरराई ❀ कहे बचन बहु प्रीति बढाई६१॥
तब दोऊ अनंग उमगाई ❀ कियो विहार वेगि भय छाई ॥
तहँते बहुरि रूप सोधारे ❀ सुरपति शंकित चलन विचारे६२
तब तिय कही सुनिय सुरराई ❀ निज मम रक्षा करहु सदाई ॥
जो मुनि भेद रंचहू पैहैं ❀ हम तुम दुहुँके प्राण नशै हैं६३
तब सुरेश बोले तिहि पाहीं ❀ रहौ निशंक शंक कछु नाहीं ॥
यौं कहि इन्द्र तियहि उरलाई ❀ कढ़े वेगि गृहते सचुपाई ॥६४॥
इत यह इन्द्र कियो छल भूरी ❀ उत ऋषि गये जबहिं कछु दूरी॥
तब नभ दिशि हेरे मुनि ज्ञानी ❀ हैबहु निशा अबहिं यह जानी ६५
ह्वै विस्मित धरि ध्यान मुनीशा ❀ देखो सो जु कियो सुरईशा ॥
क्रुधित वेगि निज भवन सिधारे ❀ वासव कढत लखो वपु धारे६६॥
तब मुनीश कटु वचन उचारी ❀ इन्द्रहि दई शाप अति भारी ॥
खल वृषण नष्ट होजाई ❀ भग सहस्र तो तनु प्रगटाई६७॥
तुरतहिं वृषण गिरे तब ताके ❀ सुरप विकल भो विवश विथाके॥
तत्क्षण भग सहस्र सब अंगा ❀ प्रगटे स्रावित रुधिर अभंगा६८
दुखित होय सुरपति गृह गयऊ ❀ गौतम तियहि शाप तब दयऊ॥
हो अधमा तुव उपल शरीरा ❀ बन बासि सहै पवन तप नीरा६९

दोहा—सुनत शाप तिय विकल ह्वै, गिरी चरण पै धाय॥
रोई दीन अधीन बहु, विनय करी सतभाय॥ ७० ॥

तब दयालु ह्वै मुनि कही, होय न मिथ्या शाप ॥
पुनि कछु दुख भोगे बिना, मिटै नहीं तुव पाप ॥ ७१ ॥
याते पाहन रूप ह्वै, बन कछु काल रहाय ॥
पुनि राघव पद परसते, होय शुद्ध हरषाय ॥ ७२ ॥
इत तिय मुनिवर शापते, भई सुपाहन रूप ॥
वृषणहीन तनु भगनते, उतै विकल सुरभूप ॥ ७३ ॥
लज्जा विवश न धामते, कबहूँ कढ़त सुरेश ॥
भग सहस्र तनुमें भये, लागत निपट भदेश ॥ ७४ ॥
वासव व्याकुल देखिके, सकल देव समुदाय ॥
करि विचार लै मेषके, दीने वृषण लगाय ॥ ७५ ॥
पुनि सब सुर गंधर्व मुनि, देवराज लैसाथ ॥
आये गौतम निकट बहु, विनय करी सुरनाथ ॥ ७६ ॥
तब मुनि बोले इन्द्रसों, घोर पाप तुव आय ॥
या कारणते चिह्नतौ, रैहैं अंग सदाय ॥ ७७ ॥
पै सहस्रभगते सकल, दृग होवैं अभिराम ॥
रैहै एक भग अंगमें, तीन होय तुव नाम ॥ ७८ ॥
मेष वृषण इक दूसरो, हो सहस्र भग जान ॥
सहसनैन पुनि तीसरो; सुरपति नाम प्रमान ॥ ७९ ॥
वर प्रभाव भग दृगभये, सुरह्वै पूरण काम ॥
मुनिहिवंदि वासव सहित, सकल गये निज धाम ॥ ८० ॥
सो सुरेश शुचिह्वै सुखी, अब यह पाहननारि ॥
तुव पद रजके परशकी, रही आश उरधारि ॥ ८१ ॥
याते अब रघुवीर इहि, वेगि सुपद परशाय ॥
करौ अहल्या शुद्धतौ, पुनि पति सेवै जाय ॥ ८२ ॥
गुरु आज्ञा सुनि सकुचिकै, राम सकल गुणधाम ॥
निज पद परसायो तुरत, भई शुद्ध बर वाम ॥ ८३ ॥
मुनिगण जैजैकार किय, तिय हिय अति हरषानि ॥
करी अहल्या विनय बहु, दीन जोरि युगपानि ॥ ८४ ॥

अस्तुति करि शिरनाय उत, गई वाम पति धाम ॥
जनकनगर गमने इतै, मुनि सँग लछमनराम ॥ ८५ ॥
सुरसरि आदिक बहु कथा, कही सुनी हरषाय ॥
मुनि दुहुँ नृपसुत जनकपुर, पहुँचे सुख सरसाय ॥ ८६ ॥
लखि सब भाँति सुपास थल, शुचि रसाल आराम ॥
दुहूँ बंधु मुनि सहित मुनि, कियो तहाँ विश्राम ॥ ८७ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० विश्वामित्र आगमनवर्णनोनाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

दोहा—कौशिक आगम सुनि जनक, शतानंदलै संग ॥
संयुत सकल समाज शुचि, आये भरे उमंग ॥ १ ॥
मुनिहिं यथेोचित वंदि पुनि, तब सब कियो प्रणाम ॥
कुशल प्रश्न करि परस्पर, बैठे निज निज ठाम ॥ २ ॥
मुनिहिं प्रशंसि महीपमणि, पुनि निज विनय सुनाय ॥
निरखि रामदिशि नेह युत, बूझौ हिय हुलसाय ॥ ३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

सरस सलोने लोने रूप अनहोने दोउ मंजु मृग छौने रचे कोने जग जो हैं ये। निरखि अनंगदंग होवैं यौं सुढंग अंग आनँद अभंगते उमंग संग सोहैंये॥ वरसे उमेह मेह नेहको अछेह देखि देह धर कोहै पै विदेह मन मोहैं ये॥ रसिकविहारी सुखकारी धनु बान धारी चित्तचोरि युगल किशोर वर कोहैं ये ॥ ४ ॥

सो०—सुनि सनेह युत बैन, मंजुलमिथिला नाथके ॥
मुनि कौशिक मति ऐन, बोले हृदय हुलास भरि ॥ ५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

लोक अवतंसी दिव्य अंशी रघुवंशीवीर असुर विधंसी औ प्रशंसी प्रण वारेहैं॥ सब गुण वारे प्रीति वारे नीति रीति वारे यज्ञरखवारे ये हमारे प्राणप्यारे हैं॥ लाजके जहाज राज साजके समाज साज राजदोऊ कौशलाधिराजके दुलारे हैं॥ रसिकविहारी सुखकारी धनु धारी सदा सब दुखहारी प्रिय पाहुने तिहारेहैं ॥ ६ ॥

दोहा—यौंकहि पुनि कौशिक सकल, कथा सहित विस्तार ॥
वरणी जनक नरेशसों, प्रमुदित बारंबार ॥ ७ ॥

चौ०—सुनिमुनिबचन भूपहुलसाये ❋ उठि दुहुँ बंधु सु अंक लगाये
अवधनाथकी सब कुशलाई ❋ पूछी राम सु सकल सुनाई॥८॥
शतानंद मुनि मात उधारा ❋ पायो उर आनंद अपारा ॥
उमँगि हीय दुहुँ नृपसुत भेटे ❋ दुसह शोक संभव दुख मेटे ॥९॥
पुनि मुनि मुनिहि प्रशंसन लागे ❋ सरस सनेह परस्पर पागे ॥
शतानंद अति हिय हुलसाई ❋ सबहि गाधिसुत कथा सुनाई १०
प्रथम रहे कौशिक वर भूपा ❋ शोभित राज समाज अनूपा ॥
सबल सैन चतुरंग अपारा ❋ सकल साज वरणै को पारा ११॥
एक समय वर विपिन मँझारी ❋ करि अहेर अति भये सुखारी ॥
कछुक दूर चलि लखि शुचि ठामा ❋ दल समेत कीनो विश्रामा १२
सो आश्रम वशिष्ठ ऋषि रहहीं ❋ जो विधिपुत्र विदित जग अहहीं॥
सुनि महीप प्रमुदित तहँ जाई ❋ दरशलये सादर शिरनाई॥१३॥
नृपहि यथोचित ऋषि सनमाने ❋ भूप बहोरि पाहुने जाने ॥
याहित वर विचार मुनि कीना ❋ राजहि सदल निमंत्रण दीना १४
सुनि आज्ञा शिर धरि नृप आये ❋ मनही मन विस्मित सचुपाये ॥
इत वशिष्ठ ढिग ऋधि सिधि धामा ❋ कामधेनु सबला जिहि नामा १५
सो वशिष्ठकी आयसु पाई ❋ सौंज यथोचित बहु प्रगटाई ॥
असन वसन भूषण धन धामा ❋ दासी दास अमित अभिरामा १६
सुर दुर्लभते सकल पदारथ ❋ अगणित उचित अनूपयथारथ
इहिविधि सबला साज सजाई ❋ करी सदल कौशिक पहुनाई १७
नृत्य गान भोजन बहु भोगा ❋ सबनिशि पगे भूप सब लोगा॥
प्रातहोत सो कछु न दिखाना ❋ विश्वामित्र आचरजमाना॥१८॥
निरखी भूप अमित प्रभुताई ❋ मनहीं मन विस्मय अधिकाई॥
वेगि वशिष्ठ निकट तब जाई ❋ करि प्रणाम बैठे सचुपाई ॥१९॥
चपल चित्त चहुँ इत उत देखी ❋ संपति वस्तु न कछु कहुँ पेखी॥
परन कुटी वल्कल इक गाई ❋ दंड कमंडलु यही लखाई २०॥

विश्वामित्र देखि दृढठानी ❀ है यह कामधेनु सुखदानी ॥
याहीके प्रभाव मुनिराई ❀ अनुपम कीनी मम पहुनाई२१॥
यह विचारि नृप अधिक लुभाने ❀ कहे बैन बहु स्वारथ साने ॥
दास जानि मुनि कृपा करीजे ❀ एक वस्तु मुहि माँगे दीजे॥२२॥
भूषन वसन धेनु धन धामा ❀ मणि मुक्ता गज वाजि सुग्रामा॥
जो भावै सो सब कछु लेहू ❀ मुनि यह कामधेनु मुहिं देहू२३
सुनि वशिष्ठ बोले वर बैना ❀ कछू वस्तु हम रंच चहैंना ॥
है सबला यह धेनु अनूपा ❀ सो न देहिं गवनो गृहभूपा॥२४॥

दोहा—सुनि बहोरि बोले नृपति, सकल राज्य मम लेहु ॥
पै मुनिवर करिकै कृपा, यह सुरभी मुहिं देहु ॥ २५ ॥
तब पुनि कही वशिष्ठ हम, देहिं न सबला काहु ॥
तुम नृप उचित न याचिबो, यह विचारि घरजाहु ॥ २६ ॥
सुनि कौशिक करि कोप तब, दीनी तुरत रजाय ॥
वरवस धेनु छुराय लै, चले हिये हरषाय ॥ २७ ॥

सोरठा—जब नृप सदल वलिष्ठ, कामधेनु वरवस लई ॥
व्याकुल भये वशिष्ठ, तब निज धर्म विचारिकैं ॥ २८ ॥
उत सबला अकुलाय, दृढ बंधन तिहि भंजिकै ॥
धाय परी मुनि पाय, बोली दीन विलाप करि ॥ २९ ॥
अनुचित कीनो काह, जाते त्यागी नाथ मुहि ॥
सुनि बोले मुनिनाह, लिये जात हठकै नृपति ॥ ३० ॥
कहो तबहिं वरगाय, जो प्रभु आज्ञा होय तौ ॥
अमित बीर प्रगटाय, कौशिक दल नाशों सबै ॥ ३१ ॥
सुनि सबलाके बैन, प्रमुदित मुनि आज्ञा दई ॥
भयो धेनु चित चैन, प्रगटे बीर सुअंगते ॥ ३२ ॥
यमन अनेक प्रकार, पह्लवादि हुंकारते ॥
प्रगटे बीर अपार, विदित जक्त बर्बर सकल ॥ ३३ ॥
बहुरि शृंगते वीर, विविध किये उत्पन्न पुनि ॥
रोम कूपते भीर, कढी मलेक्षनकी अमित ॥ ३४ ॥

योनि अंगते भूरि, यवन भये बलवान बहु ॥
रहे विविध भट पूरि, सबला तनु प्रगटायकै ॥ ३६ ॥
दोहा–पह्लव सक बर्बर यवन, अरु कंबोज अपार ॥
पुनि हारीत किरात ये, म्लेक्ष सकल निरधार ॥ ३६ ॥
चौ०–धेनु अंगते वीर अपारा ❀ प्रगटि सकल नृप दल संहारा ॥
नीति जानि भूपतिहि बचायो ❀ सबला आय मुनिहि शिरनायो३७
पुनि कौशिकके शत सुत धाये ❀ सबल शस्त्र गहि मुनि पहँ आये॥
निरखि वसिष्ठ कियो हुंकारा ❀ ते सब भये तुरत जरि छारा ३८
लखि कौशिक ह्वै अमित दुखारी ❀ गे हिमि निकट सुदुर्ग मँझारी ॥
तहाँ भूप तप कीन अपारा ❀ भये प्रसन्न महेश उदारा ॥३९॥
आय कौशिकहि अस्त्र सिखाये ❀ अमित उदंड प्रत्यक्ष दिखाये ॥
लहि बहु अस्त्र भूप हरषाये ❀ सहित प्रहार निवारण पाये ४०
अग्नि अस्त्र१ ब्रह्मास्त्र२ प्रचंडा ❀ विष्णुचक्र ३गन्धर्व ४ उदंडा ॥
कालपाश५द्वै शक्ति६–७सुघोरा ❀ वज्र अस्त्र८कापाल९सजोरा४१॥
वरुणअस्त्र१०असि११शूल१२विलापन१३प्रश्वापन१४मादन१५संतापन १६
गदा१७शक्ति१८असि१९बाण२०वज्र२१वरइनहिआदिबहुअस्त्रदियेहर४२
पाय अस्त्र बल बहु दल साजा ❀ आये पुनि वशिष्ठ ढिग राजा ॥
त्रिकालज्ञ मुनिवर विज्ञानी ❀ दये अस्त्र शंकर यह जानी४३॥
तंब वशिष्ठ करि कोप प्रचंडा ❀ लैकर ब्रह्मदंड बरिबंडा ॥
वेद मात सुमिरन युत गाढे ❀ बाहर कुटीद्वार भे ठाढे ॥ ४४ ॥
विश्वामित्र मंत्र बलभारी ❀ पुनि बहु संग अनीकजुझारी ॥
आये मुनि सन्मुख अति क्रुद्धा ❀ कियो अपार अस्त्रमय युद्धा४५॥
दोहा–जिते अस्त्र शिवदत्तते, सब घाले नृपचंड ॥
ब्रह्मदंडते मुनि सकल, बिन श्रम कीने खंड ॥ ४६ ॥
अग्नि अस्त्र ब्रह्मास्त्रजे, घाले नृपति कराल ॥
ब्रह्मदंडमें सब मिले, बढ़ी अनल सम ज्वाल ॥ ४७ ॥
ताप भई तिहुँ लोकमें, सुर मुनि सब अकुलाय ॥
मुनि सन्निध द्रुत आय बहु, विनय करी समुझाय ॥ ४८ ॥

तब वशिष्ठ द्विज दंडको, तेज शांत सब कीन ॥
ब्रह्मदंड बल हेरिकै, नृप मुख भयो मलीन ॥ ४९ ॥

चौ०-ब्रह्मदंडकर देखि प्रतापा ❀ भूपति कही सहित संतापा ॥
धिगधिग धिग क्षत्रिय बल तोही ❀ राज साज धिग धिग धिगमोही५०
यौं गलानि उर आनि नृपाला ❀ गये बहुरि तपहेतु उताला ॥
तप बल हूजे ब्रह्म ऋषीशा ❀ यह दृढ़ प्रण कीनो अवनीशा ५१
यौं विचारि बहु काल न रेशा ❀ तप कीनो सहि अमित कलेशा॥
तब विरंचि नृप संनिध आई ❀ भये राजऋषि कही बुझाई५२ ॥
भूपति मन अभिलाष न पूरी ❀ बहुरि करन लागे तप भूरी ॥
होउँ ब्रह्मऋषि मन हठ एही ❀ सहैं अपार कष्ट निज देही५३॥
तब यह भयो विघ्न इक भारी ❀ जाते निफल गई तप सारी ॥
रविकुल नृपति नाम पृथिपाला ❀ तिनके सुत त्रिशंकु भूपाला५४
सो त्रिशंकु नरपति मतिमाना ❀ भावीवश विचार यह ठाना ॥
काहू विधि इमि बात बनाई ❀ बसौं सदेह देवपुर जाई॥५५॥
तब वासिष्ठ ढिग भूपति जाई ❀ करि विनती अभिलाष सुनाई ॥
सुनि मुनि कही सुनी दृढ़ राजा ❀ हम न करैं यह अनुचित काजा५६

दोहा-तहँते भूपति वेगि उठि, करि क्रोधित दृगलाल ॥
जहँ वसिष्ठ शत सुत करत, तप तहँ आये हाल ॥ ५७ ॥
तिन प्रति निज इच्छा कही, अरु वासिष्ठ संवाद ॥
कहि बोले नृप करदुसो, हो जिहि हिय अहलाद५८॥
सुनि वसिष्ठ शत सुत कही, पितु न कियो जो काम॥
सो अनुचित हम क्यों करैं, जाहु भूप निजधाम ॥५९॥
सुनि त्रिशंकु बोले रहौ, पिता पुत्र निज ठौर ॥
तव करनी जानी अबै, हम करिहैं गुरु और ॥ ६० ॥
अनुचित इच्छा भूपकी, पुनि कृत पितु अपमान ॥
सुनि मुनि सुत नृपको दई, शाप क्रोध उर आन॥६१ ॥
शापित है चंडाल भो, नृप तब कियो विचार ॥
कौशिक ढिग जो जाउँ तौ, यह दुख मिटै अपार॥६२॥

चौ०—करि त्रिशंकु इहि भाँति विचारा ❀ विश्वामित्र निकट पगधारा ॥
आतुर जाय गहे ऋषि चरना ❀ कहि प्रभु पाहि दीन दुख हरना६३॥
नृपहि सकल बूझी ऋषिराई ❀ सो निजगति वरणी अकुलाई ॥
भूप बैन सुनि कौशिक बोले ❀ वृथा चहूँ इत उत बहु डोले ॥६४॥
अब उर धीर धरौ भूपाला ❀ जैहौ स्वर्ग सदेह उताला ॥
यौं कहि यज्ञ साज सजवाये ❀ चहुँदिशि ते मुनि सकल बुलाये६५॥
ऋषि रजाय सुनि सब मुनि धाये ❀ शत सुत युत वासिष्ठ नहिंआये॥
सोलखिक्रोधकौशिकहिछावा ❀ जानत हिये मुनीश प्रभावा ॥६६॥
याते नहिं वसिष्ठ हित भाषे ❀ दीनी सुतन शाप मन माषे ॥
शत सुत मुनिकेअबहिं नशावैं ❀ सप्तजन्म लघुयोनि सुपावैं ॥ ६७॥
कौशिक शाप देत ततकाला ❀ जरे वासिष्ठ पुत्र शत ज्वाला ॥
सोई सब निषाद कुल जाई ❀ जनमें नीच कर्म नित पाई ॥ ६८॥
तिन महँ जेष्ठपुत्र अभिरामा ❀ रहो अनूप महोदयनामा ॥
सोई राम सखा गुह भयऊ ❀ जन्म निषाद भवन जब लयऊ६९॥
पुनि कौशिक इत यज्ञ सुठाना ❀ कीने सकल प्रमान विधाना ॥
पै कोऊ सुर तहाँ न आये ❀ तब कौशिक बहु क्रोध समाये७०॥
ले जल दर्भ संकलप कीना ❀ निज तप फल बहु भूपहि दीना ॥
सो प्रभावते नृपति सदेहा ❀ चले अमित प्रमुदित सुर गेहा७१॥
देवन लखो मनुज तनुधारी ❀ नरपति आवत स्वर्ग मँझारी ॥
तब सुरगण बोले अकुलाई ❀ भूमि पतन हो वेगि पराई ॥ ७२ ॥

दोहा—द्रुत सुर बचन प्रभावते, पद ऊरध अधशीश ॥
स्वर्ग पंथते पलटिकै, गिरन चहो अवनीश ॥ ७३ ॥
तब त्रिशंकु अति दीनह्वै, ऋषिहि कही कर शोर ॥
त्राहि त्राहि कौशिक जबहि, सुन्यो महा रव घोर ॥ ७४ ॥
निरखि नृपहि आवत अवनि, बोले ऋषी बलिष्ठ ॥
गच्छ गच्छ भो भूपवर, तिष्ठ तिष्ठ नभतिष्ठ ॥ ७५ ॥

चौ०—यौंकहि मुनि अमर्ष करि भारी ❀ रचना करी अनूपम न्यारी॥
भूपहेतु नवरीति चलाई ❀ निज प्रभाव दीनो दरशाई ॥ ७६ ॥

अमित अन्न कौशिक प्रगटाये ❀ नवल लोक नव धाम वसाये ॥
दूजो स्वर्ग विरचि नृपकाजा ❀ राखो तहँ त्रिशंकु ऋषि राजा ७७
दोहा—एकबार कौशिक सु यह, महा आचरज कीन ॥
जाते गाधिकुमार को, भो सब तप बल छीन ॥ ७८ ॥
चौ०—पुनि ऋषि पुष्कर तीरथ जाई ❀ महा घोर तप प्रबल दिढ़ाई॥
तब हूँ एक विघ्न यह आयो ❀ अंबरीष नृप अवध सुहायो ७९॥
करनलगे वर यज्ञ सुदेशा ❀ तिनको मख पशु हरो सुरेशा ॥
सो नृप पशु हेरत चहुँ धाई ❀ भृगु आश्रम पहुँचे अकुलाई ८०
तहँ ऋचीक मुनि युत सुत दारा ❀ करत रहे तप प्रबल उदारा ॥
तिनके तीन पुत्र लखि राजा ❀ माँगो एक यज्ञ बलि काजा ८१॥
लघु पुत्रहि माता नहिं दीनो ❀ जेठहि निज ऋचीक करि लीनो॥
रहो मध्य शुनशेफ जु नामा ❀ सो जानौं हौं एक निकामा ८२॥
तब शुनशेफ दीन ह्वै भाषो ❀ मोहिं लेहु नृप कोउ न राषो ॥
सुनि महीप गोलक्ष सुदीनी ❀ गहि शुनशेफहि मारग लीनी ८३
भूपति पुष्कर किय विश्रामा ❀ सुनि ऋचीक सुत कौशिक नामा॥
ऋषि ढिग जाय कहो सब हाला ❀ गाधिसुवनह्वैअतिहि दयाला ८४॥
तप बलदै द्वै मंत्र सिखाये ❀ कियो अभै शिर कर परशाये ॥
सो शुनशेफ हीय हुलसायो ❀ अंबरीष सँग अवध सिधायो॥८५॥
दोहा—लै शुनशेफहि सविधि जब, बाँधो जूपहि आन ॥
तब मुनि सुत सो मंत्र दुहुँ, पढ़े समय अनुमान ॥ ८६ ॥
मंत्र पढ़त सब देवगण, तुष्ट भये सुख पाय ॥
यज्ञ समापत मुनि तनय, बचो सदेह सुहाय ॥ ८७ ॥
दूजो विघ्न जु कौशिकहि, भयो तबै ऋषिराज ॥
पुनि तप ठान्यो प्रबल अति, त्यागि सकल जगकाज ८८॥
एक समै वर अप्सरा, लखि लोभे ऋषिनाथ ॥
बहुत वर्ष तप त्यागिकै, रमन कियो तिहि साथ ॥ ८९ ॥
एही विधि बहु वार ऋषि, कियो अमित तप जाय ॥
चहूँ ओर सहि दुसह दुख, भये विघ्न बहु आय ॥ ९० ॥

चौ०–तप महँ भये विघ्न बहु बारा ❀ जाते रहो निफल श्रमसारा॥
तऊ न कौशिक तपहि विहाई ❀ करीअमित विधि चहुँ दिशिजाई९१
पुनि बहु तप कीना ऋषि कानन ❀ तब अतिमुदित भये चतुरानन॥
आय दियो जिय रुचि वरदाना। ❀ कहे ब्रह्म ऋषि युत सनमाना९२
तब कौशिक बोले करजोरी ❀ जक्तपिता इक विनती मोरी
आय वशिष्ठ ब्रह्म ऋषि भाषैं ❀ सो कीजे हम यह अभिलाषैं९३
ह्वै दयालु विधि वेगहि जाई ❀ कही वशिष्ठहि बहु समुझाई॥
पितु आज्ञावश मुनि तहँ आये ❀ बोलि ब्रह्मऋषि भवन सिधाये९४

दोहा–जब कौशिकहि वशिष्ठ मुनि, कहे ब्रह्मऋषि आय॥
तबते गाधिकुमार द्विज, भये सु तपबल पाय॥ ९५॥
यदपि ब्रह्मऋषि ह्वै गयो, तपबलते महिपाल॥
तदपि सुमिरि पूरबदशा, होय कबौं उरशाल॥ ९६॥
पुनि वसिष्ठ तप तेज लखि, कौशिक कीन विचार॥
जौ लग रहैं वशिष्ठ जग, तौ लग मोर नसार॥ ९७॥
यौं दृढ़ ठानि विचार हिय, महि विचरत इक बार॥
मुनि वशिष्ठ आश्रम गये, आधीरैनि मँझारि॥ ९८॥
कुटी निकट तरु ओट गहि, ठाढे करत विचार॥
जो वशिष्ठ बाहर कढैं, तो अब डारौं मार॥ ९९॥
सो निशि पूरण शरद शशि, छायो विशद प्रकाश॥
लखि वशिष्ठ सो शिष्य प्रति, बोले सहित हुलास॥१००॥
आज शरद शशी चंद्रिका, यों अनूप दरशाय॥
ज्यों कौशिक तप तेज जग, रहो विमल यश छाय॥१०१॥

चौ०–मुनिवशिष्ठकेबचन सुहाये ❀ कौशिकमुनिअति हिय पछिताये
विधिसुतकी विलोकि सरलाई ❀ गहे धाय पद पंकज जाई १०२
लखि कौशिक वसिष्ठ हियलाये ❀ मिले परस्पर दुहुँ हुलसाये॥
मुनि मुनि कियो परम दृढ प्रेमा ❀ हृदय शुद्ध दोऊ युत क्षेमा१०३
तबते दुहूँ मुनीशनमाहीं ❀ काहूविधि कछु अंतरनाहीं॥
इहिविधि गाधिपुत्र अवनीशा ❀ तप बल भये सु ब्रह्मऋषीशा१०४

त्रिकालज्ञ ज्ञानी गुणमाना ❀ इन सम कोउ नहीं जग आना॥
परम समर्थ मुनीश उदारा ❀ इनै न कछु दुर्घट संसारा१०५
यों कहि शतानंद विज्ञानी ❀ पुनिमुनिकीरति अमित बखानी
सुनि निजगुरुकी विपुल बडाई ❀ राम लषण हियअतिहुलसाई१०६
दोहा--सतानंद मुखते कथित, कौशिक कथा अपार॥
धन्यवाद दीनो अमित, सुनि समस्त दरबार॥ १०७॥
पुनि मिथिलाधिप विनय युत, ऋषिहि समाज समेत॥
सब सुपासकरि वासवर, दीनों नगर निकेत॥ १०८॥
चौ०-मुनिहि वंदि नृप भवन पधारे ❀ वर्णतकौशिक गुणगणसारे॥
इत ऋषि वृंद सहित ऋषि नाथा ❀ कहत अमित भूपति यशगाथा१०९

इति श्रीरामरसायण वि० वि० विश्वामित्र चरित्र वर्णनो
नाम तृतीयोविभागः॥ ३॥

दोहा-राम लषन मुनि सहित मुनि, कियो सुभोजन पान॥
तीन याम दिन बीतिगो, नृप यश करत बखान॥ १॥
चौ०-शेष दिवस इक याम निहारी ❀ दुहूँ बंधु जन आनँदकारी॥
गुरु आयसुलै हिय हुलसाये ❀ वेगि जनकपुर लषण सिधाये२॥
चहुँदिशि जाय लखी पुरशोभा ❀ राम लषण चकृत चितलोभा॥
जनकनगर छबि वरणि न जाई ❀ कहत शेष शारद सकुचाई॥३॥

त्रिभंगी छंद।

मंगलमय अवनी अद्भुत रवनी हिय दुख दवनी सुखधामा॥
नव सदन सुहाये सुर मन भाये स्वकर बनाये जनुकामा॥
जहँ ऋधिसिधि डोलैं कोउ न बोलैं करत कलोलैं पुरवासी॥
अमरावति निंदैं सब जन वंदैं जनक नरिंदैं सुखरासी॥ ४॥
सब धनिक सुजाना धनद समाना परमप्रधाना गुण माना॥
निज सुकृत विशेषैं सिय मुख देखैं धन्य सुलेखैं अभिमाना॥
अतिरूप उज्यारी सुंदर नारी सक शृंगारी अभिरामा॥
पतिधर्म सयानी बहु गुणखानी नवरस ज्ञानी सुखधामा॥५॥

बहु छैल छबीले गुणगरबीले रंग रँगीले कुकरोटा ॥
सब सुखमासागर अति नयनागर शुभमति आगर पुर ढोटा ॥
दशहूँ दिशि दरशैं आनँद बरसैं मंगल सरसैं जनकनगर ॥
मनमोद न मावैं अतिसुखपावैं सिय गुण गावैं डगर बगर ॥ ६ ॥
तहँ राजमहलकी अति छबि छलकी लखिमति ललकी रतिपतिकी॥
शारद बुधि हरनी अद्भुतकरनी कछू न करनी विधि गतिकी ॥
बहु उपवन बागा सरस तड़ागा हिय अनुरागा इमि शोभा ॥
सुंदर अमराई नव फुलवाई निरखि सुहाई मनलोभा ॥ ७ ॥
इक बाग सुहावन लखि मनभावन सुंदर पावन सुखकारी ॥
तहँ अगणित भांती द्रुम बहुजाती कहि न सिराती छबि भारी ॥
फल फूल अनेका सहित विवेका रक्ष कटेका अति शोभा ॥
अमरावति कोहै इहि विधि सोहै सुर नर मोहै मन लोभा ॥ ८ ॥
चहुँ ओर दिवालैं लसति विशालैं बहु मणि जालैं ललित खची ॥
मुक्ता मणि जट्टी महिगत पट्टी सरल उलट्टी सुगम रची ॥
निर्मल जल नहरैं राजति गहरैं लेती लहरैं सुठि सोहैं ॥
सर सुभग सुहावन तपनि सिरावन लखि मनभावन अस कोहैं ९
हाटकमय साजे घाटविराजे बहु छबि छाजे, क्यों कहिए ॥
तिहि तीर अगारा लघु विस्तारा वरणि न पारा सो लहिए ॥
सोपान सुहाए विशद बनाये मणिन जड़ाये छबि सरसै ॥
अतिनिर्मल नीरा अधिकगँभीरा त्रिविध समीरा तनपरसे ॥ १० ॥
पंकज बहुरंगा लसत अभंगा गुंजत भृंगा, मदमाते ॥
सारस चक हंसा सर अवतंसा करत प्रशंसा रँगराते ॥
अगणित लघुमीना अरु पाठीना रंग रँगीना प्रेमभरी ॥
डोलैं मन हरषी रंच न करषी प्रीति न परषी जातपरी ॥ ११ ॥
मानस मति थाकी लैसर झाकी यह समताकी छटाकहां ॥
लखि लजत पुरंदर पावन सुंदर गिरिजा मंदिर लसैतहां ॥
शिव प्राणपियारी रूप उज्यारी सब सुखकारी राजिरही ॥
इच्छित फल दानी शुभगुण खानी मात भवानी प्रगटसही॥ १२ ॥

जो वरणै शोभअस कवि को भा लघुमति छोभा रहत थकी ॥
सर सरस भिगा अनुपम बागा अगम सुलागा बुद्धिजकी ॥
द्रुम वेलि अतूला नव फल फूला सब सुख मूला छबिछाजैं ॥
बहुरण विहंगा अगणित रंगा निज निज संगा मिलिराजैं ॥१३॥

भुजंगप्रयातछंद ।

कहूंहैं कदंबा कहूंहैं रसाला ॥ कहूं दाड़िमो शिंशुपा औ तमाला ॥
कहूं पीपरो पाकरीहैं अशोका॥लवंगी लतासो कहूं लेति झोका॥१४॥
कहूं चिंचिनी श्रीफलौ हैं बदामा ॥ कहूँ नागवल्ली सुएला ललामा ॥
कहूं वृक्ष फूले कहूँसो फरे हैं ॥ कहूं पत्र पीरे झरे औ हरे हैं ॥ १५ ॥
कहूं तौ गुलाबौ चमेली जुसोहै ॥ निवारी जुही सेवती चित्त मोहै ॥
कहूं मालती और बेला विराजै ॥ कहूँ केवरो केतकी गंध छाजै १६॥
कहूं कुंद केसरसुगन्धैं झकोरैं । कहूँ सांवनी और गेंदा हिलोरैं ॥
सुवृंदारका वृंद सोहैं अनूपा । जुदौना कहूँ पानडी है सुरूपा ॥ १७ ॥
कहूँ भूमि चंपा जु गुलचाँदनी हैं । कहूं इश्कपेचा कि बेलैं घनी हैं ॥
कहूं विष्णुक्रांती छटा दै रहीहैं । सुचंपा सुगंधै कहूं छैरही हैं १८॥
गुलव्वास गुलदाउदीहै जुखासी । कहूँ रौसपै राजहीनातरासी ॥
कहूं फूल फूले कहूँ तौ कली हैं ॥ कहूँ वृक्ष बेली दुवीचे गली हैं १९॥
कहूं तौ भली भाँति छूटैं फुहारे ॥ भरेनीर राजैं कहूं हौज भारे ॥
कहूं दूबसे है हरी भूमि नीकी ॥ छटा बागकी मोहनी है सुजीकी२०॥
कहूँ कोकिला कूकदेकै पुकारैं । पपीहा कहूं शब्द ऊंचे उचारैं ॥
कहूँ शारिकाबैन मीठे सुनावैं । कहूँ कीरनीकी गिरा चित्त भावैं २१ ॥
कहूँ मोर नाचै महामोद मानैं । कहूं भौंर गुंजैं घने प्रीति सानैं ॥
कहूँ तीतरो लाल सोहैं कपोती।कहूं बुलबुलों की घनी जुट्ट होती२२॥
कहूँ नीलकंठा सुश्यामा सुहावैं ॥ कहूँ तौ हरे वालवा चित्त भावैं ॥
कहूँ हंसराजौ बटेरैं घनेरी । कहूँ बाज जुर्रा कुही देत फेरी ॥ २३ ॥
कहूँ तौ परेवा सु चंड्रल सोहैं । कहूं तौ चकोरी कहूँ खंजनो हैं ॥
भरे मोद पक्षी सबै मत्त डोलैं । कलोलैं करैं भावते बैन बोलैं ॥२४॥

दोहा–इमि शोभा लखि बागकी, मुदित भये दुहुँ भाय ॥
लखत फिरत चहुँ ओ[illegible]नंद इत उत जाय२५ ॥
निरखत निरखत नगर बिच, आये राजकुमार ॥
धाये पुर नर नारि बहु, शोभा लखत अपार ॥ २६ ॥
जब ते लखि आये नृपति, तब ही ते बहु शोर ॥
रूप तेज बल गुण सुयश, फैलि रहो चहुँ ओर ॥ २७ ॥
बाल युवा अरु वृद्ध सब, पुरवासी नर नारि ॥
राम लषणके लखनकी, रहे आश उर धारि ॥ २८ ॥
आये पुर अवलोकिबे, सुनि सबही हुलसाय ॥
धाम पंथ इत उत चहूँ, चितवत हैं चित लाय ॥ २९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

कोऊ धायहेरैं कोऊ काहूकहँ टेरैं कोऊ जाय लखैं नेरैं कोऊ दूरिते सिधारैं हैं। कोऊ काहु बूझैं कोऊ काहुते अरुझैं कोऊ काहू हठि झूझैं कोऊ काहू को निवारैं हैं॥कोऊद्वार कोऊ हैं दिवार कोऊ छज्जनपै कोऊ तौ अटारी नर नारी यों निहारैं हैं॥रसिकविहारी सुखकारी धनु धारी दोउ पुर अवलोकैं मंद मंदही पधारैं हैं ॥ ३० ॥ नृपति किशोर श्याम गोर द्वै अनूपरूप पुर अविलोकिवेको आये हैं बजारमें ॥ छायो शोर भारी चहुँ ओर नर नारी भीर सुरति नकाहू देह गेहकी सम्हारमें ॥ रसिकविहारी वरवामजे सुधाम सबैं आई धाय आँगन अटारी कोऊद्वारमें॥ फिरैं फिरकीसी भौंन थिरकी रहैं ना नेक कोऊ खिरकीमें कोउ हिरकी किवाँरमें ॥ ३१ ॥ कोऊ मिलकी सों कछू भाषै दिलकी ना नेक हिलकी जुलैलै हिय राखैं हियकी हिलोर॥कोऊ ससकैं हैं लै उसाँस मसकै हैं उर रसकैं करेजे कसकैं हैं मैनकी मरोर ॥ कोऊ मुख अंचल छिपायकै दुराय दीठ करि करि हाय रहि जायँ नेहकी झकोर ॥ रसिकविहारी लखि रसिकविहारी रूप सारी हैं दुखारी भारी विरह व्यथाके जोर ॥ ३२ ॥ झूमि झूमि हूमैं कोऊ हूमि हूमि दूमैं कोऊ दूमि दूमि घूमैं कोऊ घूमि गिरैं भू मैं हैं ॥ फेरि फेरि हेरैं कोऊ हेरि हेरि टेरैं कोऊ टेरि टेरि घेरैं कोऊ घेरि गहि

लूमैं हैं ॥ रसिकविहारी मिथिला की नौल नारी सारी रूप मद छाकी मतवारी करैं घूमैं हैं ॥ धाय धाय आवैं आय आय रहि जावैं जाय जाय गुण गावैं गाय गाय झुकि झुमैं हैं ॥ ३३ ॥ कोऊ कहैं कारो मणिवारो है बिसारो भारो कोऊ कहैं फंदी फंदवारो वटपारोरी ॥ कोऊ कहैं निपट धुतारो ठगहारो महा कोऊ कहैं सूधौ है विचारो संगवारोरी ॥ कोउकहैं गोरेहै न भोरो बिसबोरो सोउ जानो जनि थोरो ताहि नीकेहौं निहारोरी ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ नौल नारी अली कैसहु तुमैं है पै हमैं है प्राणप्यारोरी ॥ ३४ ॥ कोई कहैं दोई ननदोई तुव आली देखे कोई कहैं दोई बहनोई तो सिधारे हैं ॥ कोई कहैं दोई जेठ तेरे तून हेरे भट्ट कोई कहैं गोरे तोरे देवर निहारे हैं ॥ रसिकविहारी पुरनारी संगवारी सबै मोदते विनोद बैन विविध उचारे हैं ॥ तौलौं एक बोली कंत साँवरे हमारे सब बोलीं यों हमारे हैं हमारे हैं हमारे हैं॥३५॥कोऊ दूरहीते दृग जोरती निहोरती हैं कोऊ चित्त चोरतीं बहोरि मुखमोरतीं ॥ कोऊ मुसक्यावतीं सुनावती हैं व्यंग्य कोऊ सैनन बुलावती हैं नैनन मरोरतीं ॥ कोऊ नीरवारतीं उतारती हैं आरती लै आनन निहारती हैं कोऊ तृण तोरतीं ॥ रसिकविहारी गुण वारी रूपवारी नारी अवधविहारीको सनेह सिंधु बोरतीं ॥ ३६ ॥ कुंतल कृपाणनते काटत करेजो आन भ्रुकुटी कमान तान तानकै चढ़ाये हैं ॥ तापै नैनबाणको सँधानं हठिलेवैं प्राण जनकपुरी में घमसानयों मचाये हैं ॥ रसिकविहारी एक नारी धाय बावरी सी घावरी ह्वै द्वार द्वार बचन सुनाये हैं ॥ कोऊ मृगनैनी वाम धामते जुकाहू काम कितहूँ नजैयो दो सिकारी आज आये हैं ॥ ३७ ॥ धाये पुर बालक विलोकि जुरि वृंद वृंद आय ढिम सकल विनोद मोद भीने हैं ॥ जानैं नहिं सब रंक निपट निशंक बंक चंचल उतंक चपलाई चित्त दीने हैं ॥कोऊ पदपानि पट पीत धनु बाण कोऊ कोऊ लंक कोऊ जंघ जानु गहि लीने हैं॥रसिक-विहारी ह्वै अनंद रघुनंद तिनै कहि मृदुबैन मंन भाये तोष कीने हैं ॥ ३८ ॥ अंग अंग परशैं सुढंग रंगरंगरचैं सहित उमंग संग संग

चहुँ डोलैं हैं ॥ कोऊ इतरायँ अनखायँ औ रिसायँ कोऊ कोऊ बतरायँ कोऊ करत कलोलैं हैं ॥ रसिकविहारी नेहवश रघुलाल तिनैं करत निहाल प्रीति रीति अनमोलैं हैं ॥ कोऊ देत गारी कोऊ देत-करतारी कोऊ करैं मनुहारी कोऊ बालहँसि बोलैं हैं ॥ ३९ ॥ कोऊ कहैं श्याम तुव ग्राम है कहां सो कहो कौहै पितु मात औ बतावो कित धामहै ॥ कोऊ कहैं लाल किहि देशते पधारे फ़ेरि जैहौ किहि देश इस आये कौन कामहै ॥ कोऊ कहैं मीत हम आज यों सुनीहै मुनि दोय बाल लाये एक गौर एक श्यामहै ॥ रसिकविहारी पुर बालक अनंद छके बार बार बूझैं रावरोई नामरामहै ॥ ४० ॥ कोऊ बाल बालसों कहैं हैं हम ऐसी सुनी बीरता बढाय चाप तोरिबे सिधाये हैं ॥ कोऊ कहैं कौतुक विलोकिवे पधारे दोउ कोऊ कहैं कौशिक भुराय इन लाये हैं ॥ कोऊ कहैं हेरत बटोही पुर कोऊ कहैं रसिकविहारी आज भूपति बुलाये हैं ॥ कोऊ कहैं जानैं हम सत्य सो बखानैं सुनौ जनकललीके व्याहिबेको इत आये हैं॥४१॥ कोऊ बाल बोले लाल अब ना तजैंगे तुम्हैं कोऊ कहैं यार संग तेतौनाहिंटारौगे॥ कोऊ कहैं मीत प्रीत करि मिलि रैहैं सदा कोऊ कहैं श्याम कबौ रोष तो न धारौगे ॥ रसिकविहारी कहैं कोऊ तौ बनैगी बात जो पै कहूं काहू कुछ दोष ना निहारौगे ॥ कोऊ कहैं प्यारे हम सकल सुखारे संग चलिहैं तिहारे जब सदन सिधारौगे ॥ ४२ ॥ कोऊ बाल बोले धनु-शालको उताल चलौ ह्वै है अतिकाल तौ नृपाल बहु मारैंगे ॥ कोऊ कहैं श्याम इत आवहु हमारे धाम देहै मातु मेवा औ मिठाई मिलि चाखैंगे ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी हितकारी बात सुनहु हमारी तौ तिहारे कान भाषैंगे ॥ कोऊ कहैं कितहू न जाहु अब ह्याई रहौ जनकदुलारीकी सवारी संग राखैंगे ॥ ४३ ॥ कोऊ जे प्रवीण प्रौढ सरस सनेही शुद्ध ते लखि अनूपरूप अधिक लुभाने हैं ॥ तिनकी सुप्रीति श्याम सुंदर विलोकि साँची रसिकविहारी अतिहीय हुलसाने हैं ॥ कहिरस वैन चैन दीनोहै कमलनयन लाय निज ऐनते अपार सनमाने हैं ॥ सुख सरसाने मनमाने पहिचाने जाने सत्य प्रण ठाने

नेहजाल उरझानेहैं ॥ ४४ ॥ लूटीहै लुनाई लोनी मिथिला निवासिननें रसिकविहारी दुहूँ भाई प्रीति जूटीहै ॥ जूटी चहूँघाई छाई नेहकी सचाई तब छैल रघुराई निठुराई सब छूटी है ॥ छूटी धीरताई बीरताई औ गंभीरताई अंग अतुराई चतुराई चित्तखूटी है ॥ खूटी नूर भूरके गरूर की गरूरताई नेहमें निकाई प्रभुताई गई लूटीहै ॥ ४५ ॥ सुंदर अनूप रूप साँवरो किशोर लोनो देखि देखि मिथिलानिवासी हुलसावहीं ॥ सब नर नारी एक एकते कहैं हैं रुचि तोरे धनु येही तौ अपार सुख छावहीं ॥ जनककिशोरी मिलि जोरी श्याम गोरी भली विधिहि निहोरी करजोरी यौं मनावहीं ॥ रसिकविहारी हितकारी बात होवै वेगि सकल विचारी सत्य येही यश पावहीं ॥ ४६ ॥

चौ०-इहिविधि जनक नगर नर नारी ❀ राम लषण लखि भये सुखारी
प्रमुदित पुर विलोकि दुहुँ भाई ❀ गुरुढिग चले हीय हुलसाई ४७॥
संध्या समय आय दुहुँ भ्राता ❀ गहे मुदित मुनि पद जलजाता॥
करि संध्यावंदन शुचि रीती ❀ अमित सराहत पुरजन प्रीती ४८
पुनिमुनि सुनि लछमन अरु रामा ❀ करि भोजन रजनी इक यामा॥
कहत सुनत पुरछबि अभिरामा ❀ अर्ध रैनि कीनो विश्रामा॥४९॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० पुर दर्शन वर्णनो

नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

चौ०-प्रात समै दुहुँ राजकुमारा ❀ नित्यकृत्य कीनो शुचि सारा ॥
वेगि आय गुरुपद शिरनाई ❀ मुदित भये शुभ आशिष पाई १॥
गुरु पूजनको समय निहारी ❀ चले प्रसून लेन फुलवारी ॥
दुहूँ बंधु नख शिख वर अंगा ❀ कर धनु शर कटि कसे निखंगा२॥
करि प्रणाम गुरु आयसु पाई ❀ गये दुहूँ नृप सुत हरषाई ॥
गिरिजा बाग विचित्र अनूपा ❀ रहत जहाँ षट ऋतु धरिरूपा३॥
जाय दुहूँ नृपसुत तिहिद्वारे ❀ द्वारपाल रुचि लखि पग धारे ॥
लेत प्रसून फिरत चहुँ ओरा ❀ प्रमुदित हेरत राज किशोरा ॥४॥

दोहा–ताही औसर जनकजा, जननी आयसु पाय ॥
आई गिरिजा दरशहित, संग सखी समुदाय ॥ ५ ॥
करि मज्जन शृंगार सजि, सकल अलीन समेत ॥
पूजन सौंज अपार युत, गवनी गौरि निकेत ॥ ६ ॥
राजसुता अरु सखिनकी, शोभा अमित अनूप ॥
ध्यान किये सुख होय हिय, किमि वरणौं वह रूप ॥ ७ ॥

तोमरछंद।

पदकंज अधिक ललाम। सुखसीम वर छबिधाम ॥
जिनकी परत महि ज्योति। सो लाल मणिमय होति ॥ ८ ॥
पुनि चरण अंगुलि मंजु। मानहु मृदुल दल कंज ॥
उपमा सु और लखाय। जनु चंप कलिक सुहाय ॥ ९ ॥
नख गणनकी नव क्रांति। लखि कोटि शशि द्युति भ्रांति ॥
जनु रसिक जन सुख हेत। चिंता सुमणि छबिदेत ॥ १० ॥
बिछिया ललित सुखधाम। नूपुर अधिक अभिराम ॥
रव मधुर सरस सुहात। सुनि राजहंस लजात ॥ ११ ॥
युग जानु सुंदर गोल। लखि मन विकत बिनमोल ॥
जनु उभय कंचन खंभ। मिटिजात मनसिज दंभ ॥ १२ ॥
जंघा युगल अभिराम। जनु कदलि खंभ ललाम ॥
अतिसुभग उभय नितंब। मति कहत गहत बिलंब ॥ १३ ॥
कटि अधिक सूक्षम जान। उपमा न जगमहँ आन ॥
देखी न सुनियत लंक। ज्यों ब्रह्म निर्गुण शंक ॥ १४ ॥
लहँगा ललित लहरात। बहुघेर छबि छहरात ॥
जरतार जटित जराय। निज कर मनोज बनाय ॥ १५ ॥
जगमगत मणि गणजोत। द्युतिमंद रवि शशि होत ॥
सोहत अनूपम कोर। जनु दामिनी चहुँ ओर ॥ १६ ॥
बूटे सुललित ललाम। फैली प्रभा अभिराम ॥
सुंदर सरस सुखधाम। लखि लजत शत रतिकाम ॥ १७ ॥
मृदु उदर अधिक सुहात। जनु लसै सुरतरुपात ॥
ज्यों सिंधु सब गुणकेर। है कृपासदन निवेर ॥ १८ ॥

नाभी सुललित गँभीर । जनुसिंधु भँवर सुधीर ॥
है सुभगता कर खानि । उपमा जु यह पुनि जानि ॥ १९ ॥
मणि जटित पदिक सुहाय । नवग्रह रहे जनु आय ॥
कंठी सुकंठ विराज । भूषण अधिक छबिछाज ॥ २० ॥
भुज मूल बाहु विशाल । मनु मृदुल पंकजनाल ॥
युग सुभग वर भुजबंद । मणि जटित क्रांति अमंद ॥ २१ ॥
कर युगल कोमल मंजु । मानौ मृदुल दलकंज ॥
कंकन सुदेश अनूप । मिलि अंग एकहि रूप ॥ २२ ॥
नव बलय की झनकार । मृदुमंद अति सुखसार ॥
मुँदरी हरित नग क्रांति । मृग सावक़हि कर भ्रांति ॥ २३ ॥
पुनि कलित कंठ सहाय । जहँ पान पीक लखाय ॥
लखि लजत कंबु कपोत । भूषण सरस छविहोत ॥ २४ ॥
सोहै चिबुक छबिधाम । तिहि मध्य तिल अभिराम ॥
जनु हेम संपुट माहि । मणि नील जटित सुहाहि ॥२५ ॥
युग अधर सुंदर लाल । जनु लसत बिंब प्रवाल ॥
दंतावली छबिधाम । जनु कुंदकली ललाम ॥ २६ ॥
नासा अनूप सुढार । शुक तुंड सम सुखसार ॥
नथझूमका लहरात । मुक्ता बुलाक सुहात ॥ २७ ॥
हैं सुभग युगल कपोल । आदर्श मनहुँ अमोल ॥
आसन किधौं अभिराम । रसराजको सुखधाम ॥ २८ ॥
युग श्रवण हैं अभिराम । अति मृदुल अमल ललाम ॥
कुंडल सुझूमक झूल । भूषण विराज अतूल ॥ २९ ॥
लोचन युगल अभिराम । जनु कंज मीन ललाम ॥
खंजन मृगी सम जान । शरमैनके अनुमान ॥ ३० ॥
भ्रुकुटी कुटिल सुखरूप । युग धनुष मनहु अनूप ॥
ठौरतिहिवीच कुंकुम बिंदु । इकठौर शनि कुज इंदु ॥ ३१ ॥

नवगौर सरस सुरूप । सुंदर ललाट अनूप ॥
बेंदा बिशाल विराज । जनु नवग्रहन समाज ॥ ३२ ॥
बेंदी लसै कमनीय । मणिजटित द्युति रमनीय ॥
मुक्ता अमोल सुहाय । सुंदर अधिक छबिछाय ॥ ३३ ॥
शिरचंद्रिका लहराति । झुकि झूमि छबि छहराति ॥
मणि जटित क्रांति विराज । कोटिन प्रभा कर लाज ३४ ॥
चिक्कन कुटिल मृदुकेश । वेणीगुही वर वेश ॥
छूटत सुगंध झकोर । ह्वै मत्त डोलत भौर ॥ ३५ ॥
सारी सुनील सुहाय । जनु मेघमंडल छाय ॥
जरतार की नवकोर । सौदामिनी चहुँ ओर ॥ ३६ ॥
बरसै सुछबि मय नीर । सोपरत सीय शरीर ॥
दरशात आनँद रूप । शोभा अभंग अनूप ॥ ३७ ॥
नख शिख सबै सुठि सीय । शृंगार पुनि रमणीय ॥
गजगामिनी मृदुगात । गिरिजाहि पूजन जात ॥ ३८ ॥
जैसी सिया अभिराम । तैसी सखी छबि धाम ॥
शिख नख स्वरूप सुढंग । शृंगार शोभित अंग ॥ ३९ ॥
तिनके अमित गुणरूप । तनु तेज अमल अनूप ॥
सिय सहचरी जु अनेक । हैं सरस एकहि एक ॥ ४० ॥

दोवई-छंद।

रूपरँगीली गुणगरवीली सुघर सलोनी बाला ॥
नवल नागरी अति उजागरी छाकी प्रेमपियाला ॥
नखशिख भूषण अमल अदूषण ज्यों शशि पूरवन सोहैं ॥
वसन सुरंगा शोभित अंगा निरखि शची रतिमोहैं ॥ ४१ ॥
पंकजनैनी हैं पिकबैनी गजगामिनी ललामा ॥
वैसकिशोरी श्यामल गोरी मनहरनी सुखधामा ॥
उरज उतंगा नवल अनंगा परम प्रवीन पियारी ॥
रंगरँगीली नेह पगीली सुंदररूप उज्यारी ॥ ४२ ॥
गानकलामैं छंद छलामैं परम ललामैं राजैं ॥

बहु सुखदानी अधिक सयानी अंग अनूपम साजैं ॥
रसिकविहारी मति अति हारी कहत पारको पावै ॥
तिनकी दाया सों बल आया तिहि भरोस कछु गावैं ४३
काहूकी वेणी फूलन सों गुही विराजतनीकी ॥
काहूकी गूंधी मोतिनसों सरस मोहनी जीकी ॥
काहूके वरवेस पीठ पै छूटे केश सुहावैं ।
मानौं तरुण नागिनि कारी मदमाती लहरावैं ॥ ४४ ॥
अरुण सरस सिंदूर सुहावै मोतिन माँग भरी है ।
श्याम फरी पै शोणितसनी सुमानौं असी धरी है ॥
काहूकी पोशाक घनी है सुंदर रंग सुरंगी ॥
काहूकी कासनी बनी है काहू अंग नरंगी ॥ ४५ ॥
काहूकी जंगाली राजै काहू लसै हरीरी ।
काहूको बैंगनी सुहाई काहूके तनु पीरी ॥
काहूकी अरई चंपई काहू फालसई है ॥
काहूकी ऊदी असमानी काहू फाकतई है ॥ ४६ ॥
काहूलसै मजीठी प्याजी काहू है अव्वासी ।
काहूकी धानी अंगूरी काहूकी है मासी ॥
काहूकी सोसनी पिरोजी काहूकी है लाखी ॥
काहूकी मोतिया बदामी काहू चित्रित राखी ॥ ४७ ॥
काहूकी सरबती सुरमई काहूकी है नीली ।
काहूकी सरदई गुलाबी जरतारन चमकीली ॥
काहूकी सिंगरफी मूंगिया काहूकी सितसाजै ।
अमितरंगके वसन विभूषन सखियनके तनु राजै ॥४८॥
चंद्रमुखी सब रूप गुमानी चंचल हैं चपलासी ।
जनकनंदिनी संग सुहावै शारद शचीरमासी ॥
पहुँची गौरिसदन में सिय जू विधिवत पूजा कीनी ।
धूपदीप नैवेद्य आरती करि पुष्पांजलि दीनी ॥ ४९ ॥

दै प्रदक्षिणा पदपंकजगहि बहुविधि विनती कीनी।
मन भायो माँगो वर सुंदर परम प्रेम रस भीनी ॥
ताही समय अली इक लोनी गईविलोकनबागा।
डोलत फिरत लखत द्रुम बेली हिय उमँगेअनुरागा॥८०॥
ताहि छिन गुरु आयसु लैकै राजकुँवर दुहुँ आये।
निरखत बाग उतारत फूल न दोना करन सुहाये ॥
औचक दृष्टि परे सो ताके लखत विहाल भईहै।
भूषण वसन अपान चातुरी भोरी सबै गई है ॥८१॥
इकटकरही निहारि चकितह्वै नैन निमेष नलावै।
रघुनंदन छबि छकी छबीली मनमें मोद नमावै॥
लोक लाज कुलकानि त्यागि कै दौरि मिलनको चाहै।
ह्वै सकोच मनमारि रहै जिय अंतर मनसि जहा है॥८२॥
हिय विचारि कुलकानि जानितिय धर्मधीर कछु धारी।
चलीद्वैक डग परै न पग मग भई नेह मतवारी॥
तहँ ते चलै फेरि फिरि लोटै इहि विधि करि बरि आई।
झूमत झुकत चकित सी चितवत अली अलिन बिचआई ८३॥

बरवा छंद।

तिहि विलोकि सिय सखियां बूझति बैन॥ कहा भयो तुहि हेली तू मतिऐन ॥८४॥ सोहै रति नहिं काहुहि उत्तर देत॥ लै उसास युग अँखियां भरि भरि लेत ॥८५॥ पुनि कर गहि सिय बूझति बैन रसाल॥ निजगति कहति न काहे नवला बाल॥८६॥ सुमिरि श्याम उर अंतर हिय धरिधीर। सियसों बोली सुंदरि बैन गँभीर॥८७॥ अवधनृपति दशरथ के सुत अभिराम॥ कौशिक सँग सो आये सुखमाधाम ॥८८॥ राम लषण दुहुँ भैया श्यामल गौर ॥ सुंदर ताके सोहैं जो शिरमौर ॥८९॥ धनुषयज्ञ सुनि आये हैं अतिवीर ॥ इनहि ताड़कामारी एकहि तीर ॥९०॥ हति सुबाहु मारीचहिं बिनफलबान॥ सिंधुपार तिहि पठयो राखे प्रान ॥९१॥ गये जनकपुर देखन

दोऊ भाय। नगर नारि नर निरखत रहे लुभाय ॥६२॥ सुने सकल मैं उनके सुयश अनूप। लखन न पायो दृगभरि सुंदर रूप ॥ ६३ ॥ अबहीं मैं फुलवारी देखनकाज। गई रही इत तजिकै सखीसमाज ॥ ॥ ६४ ॥ राम लषण मुहिं मिले सुतहँ दुहुँवीर ॥ तिनहि विलोकत मैं अति भई अधीर ॥ ६५ ॥ यद्यपि हैं दुहुँ भैया सुखमा धाम। तदपि अधिक सुखसागर नागर राम ॥ ६६ ॥ शिर शोभित है ताज सुजटित जराय। जिहि लखि रवि शशि दोऊ मंद लगाय ॥ ६७ ॥ केश कुटिल चिकनारे शोभादेत। देखतहींसो वरवस मन हरि लेत ॥ ६८ ललित लिलार सुहाई केसर खौरि। सबै हिरानी जिहि लखि धीरज मोरि ॥ ६९ ॥ भृकुटी कुटिल सुहाई सुंदर रूप। जनु रति पतिके राजैं धनुष अनूप ॥ ७० ॥ रतनारे कजरारे लोचन लोल। को अस जो न बिकावै लखि बिन मोल ॥ ७१ ॥ कंज मीन मद खंजन गंजन नैन ॥ अमी सुरा विषप्याले सुखमाऐन ॥ ७२ ॥ पंच-बानहूँते अति तीक्षणमानि ॥ नैनबाण उर अंतर लगत न जानि ॥ ॥७३॥ पीछे अति कठिनाई कसकत जीय ॥ जिहि लागै सो जानै अपने हीय ॥ ७४ ॥ श्रवण सुहाए कुंडल छवि छहरात ॥ मोतिन झुमका झूमै बहु लहरात ॥ ७५ ॥ कलित कपोल अनूपम मन हरि लेत ॥ कबहुँ अलक झुकितापै शोभादेत ॥ ७६ ॥ सुभग नासि-का सोहै मुक्ताचारु ॥ हलनि हिएमें पैठी सुखमासारु ॥ ७७ ॥ अधर अधिक अरुणारे मनहुँ प्रबाल ॥ पानपीक द्युति सोहै सरस विशाल ॥७८॥ दशननकी द्युति दमकै अति सुखदान ॥ मंदहँसन है तीखी मनहु कृपान ॥ ७९ ॥ चिबुक छटा किमि भाषौं कहीन-जात ॥ जित निरखौं दृग तितहीं अधिक लुभात ॥८०॥ ग्रीवा सब सुखसींवा रेखा तीन ॥ गज मोतिनको कंठा लसत नवीन ॥ ८१ ॥ भुज आजानु अनूपम सुभग विशाल ॥ मनहु मृदुल युगराजैं पंकज-नाल ॥ ८२ ॥ रतन जटित भुजबंद सु अतिकमनीय ॥ बाल दिवा-कर शशि गुरु द्युति दमनीय ॥ ८३ ॥ अरुणारे कर कोमल अति अभिराम ॥ रतन जटित युग पहुँची लसत ललाम ॥ ८४ ॥ कर

अँगुरी नखराजैं विमलललाम ॥ हैं बहु सुखमासागर आगर राम ॥ ॥८५॥ अतिविशाल वक्षस्थल सुखमाधाम ॥ जहँ भृगुचिह्न विराजै बहु अभिराम ॥ ८६ ॥ उर मणिमाल सुहाई अधिक अमोल ॥ मनहुँ त्रिवेनी राजै रुचिर अलोल ॥ ८७ ॥ रतन जड़ित पदिकसो छबि सरसात ॥ बालभानु बिच ग्रह जनु चहूँ लखात ॥ ८८ ॥ बागो हरित सुहायो शोभादेत ॥ लसे रुचिर जरतारन मनहरिलेत ॥ ८९ ॥ उदर सुहावन पावन सब गुणगेह ॥ भरो सुभग सर मानो सलिल सनेह ॥ ९० ॥ नाभि गँभीर सुहाई सुखमाकुंड ॥ रोमावली विराजै जनु अलिझुंड ॥ ९१ ॥ पीतवसन कटि सोहै सो फहरात ॥ मानो घनबिच चपला दुरि दुरिजात ॥ ९२ ॥ धोती धवल सुहाई सुखमा ऐन ॥ अतिचिक्कन छबिछाई लखि हिय चैन ॥ ९३ ॥ जंघा युगल सुहाए सुखमा ऐन ॥ गोल गुल्फ छबि छाजै आनँददैन॥९४॥ पदपंकज अरुणारे अधिक अनूप।नूपुर ललित सुहाये सुखमारूप९५ जिहि महि परत सु हियरा मोर डराय। कहुँ गुलाबकी पखुरी गड़ि जनि जाय ॥ ९६ ॥ रघुनंदन आँखन बिच राखन योग। क्यों सहिये हे प्यारी विषम वियोग ॥ ९७ ॥ हम विधिसे यह माँगिय रुचि वरदान। तोरैं धनुष सुयेही श्याम सुजान ॥ ९८ ॥ यहीलाभ पुनि चाहिय कछू न और। दृगभरि हम अविलोकैं श्यामल गौर ॥९९॥ सुनत सखी मृदुवाणी सिय मनमाह ॥ भई प्रीति अति बाढ़ी दरशन चाह ॥ १०० ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

वानी नेह सानी सुखदानी मनमानी बहु प्रीति सरसानी सुनि रूपकी निकाईको ॥ संगलै सहेली अलबेली जो नवेली सबै देखन चली हैं घनश्याम रघुराई को ॥ जनकदुलारी सुकुमारी मोदभारी हिए रसिकविहारी सोनिहारी चहुँ घाईको ॥ निरखत झाँकी छबि बाँकी देहथाकी सिया प्रेममद छाकी लखि लालकी लुनाईको१०१

कुंडलिया छंद।

बोली सिय सखियानसों, हेली राजकिशोर ॥ हेरैछबिमुख चंदकी, लोचन चारु चकोर ॥ लोचन चारु चकोर इक टक रूप निहा-

रौ ॥ सरसमाधुरी पियौ भली विधि पलक न टारौ ॥ अलीआज सुखसाज सबै निज निज हिय खोली ॥ निरखिलेहु भरिनैन बैन यौं सिय जू बोली ॥ १०२ ॥

दोहा—औचकराज किशोरकी, परी दृष्टि इत आय ॥
जनकनंदिनी रूपलखि, प्यारे रहे लुभाय ॥ १०३ ॥
सिय मुख पंकज रसरसिक, रघुनंदन मनभौंर ॥
रम्यो सुछबि मकरंदमें, कछू सुहात न और ॥ १०४ ॥
राजकुँवर वर बंधुसे, बोले वचनरसाल ॥
धनुष यज्ञ इन हेतु ये, जनकलली नवबाल ॥ १०५ ॥
सिय सुंदरता नेहमय, कहत लषण रघुचंद ॥
भये लतनकी ओटमें, ज्यों घनबिच युगचंद ॥ १०६ ॥
अकुलानी सिय सखिन युत, लखे न श्यामसुजान ॥
बढ़ी अगिन तनु विरहकी, भूलो सबहि अपान ॥ १०७ ॥
भई सबै अतिबावरी, बोलति अटपटबैन ॥
राजकुँवर बिछुरे अबै, रंचहु परै नचैन ॥ १०८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

क्यौं न जर जायरी पतंग आय दीपकमें क्यौं न मणिहीन जो भुंजग प्राणत्यागैरी ॥ रजनीमलीन बिन चंद क्यों नहोय भटू स्वातिबिन चातक अधार क्यों न वागैरी ॥ रसिकविहारी बिन सुघर सनेही मिले कोटिहू उपायते न हीय अनुरागैरी ॥ बिछुरे सुनीर क्यों न मीन मरिजाय हेली जानै सो वियोग पीर जाके जिय लागैरी ॥ १०९ ॥ विरही वियोगिनींन देखिकै अधीन दीन अधिक सतावैं भटू मिलिकै अनेकसे ॥ कसकत छाती सुनिकारीकोकिलाकी कूक गरजतकारे घनमान तन नेकसे ॥ रसिकविहारी कारी जुलैंफैंचुभीहैं हिय विरह मनोज अंग दाहै अविवेकसे॥कारे कजरारे नैन कीनी कतलाम घनी हेली हम जानी कारे कारे सब एकसे॥११०॥बूझैंद्रुम वेली सबै विकल सहेलीघनी रसिक रसाल रघुलालको बतावोजू॥कलित कदंब कैसो बहत विलंब ऐसो नबल अशोक तुम शोक तौ नशावोजू ॥ तरुन

तमाल इत लाल अविलोके कहूँ रसिकबिहारी मोहिं वेगि दरशावोजू॥ एहो मृग छोना जाय करहु सहाय येती पीर यह मेरी दौरि श्यामको सुनावोजू॥ १११॥ कोऊ नवपल्लव गहति कर जानि कोऊ जानि पद पंकजको कंज शीश नावहीं॥ कलित कपोल जानि चूमत गुलाब फूल कोऊ गहिकै तमाल बिरह सुनावहीं॥ रसिकविहारी कोउ हेरतीं चरण चिह्न पावैं कहुँ ताकी रेणु दृगन लगावहीं॥ नेह रसमाती सिया आली बिलखातीं सबै पातींदै पतौवनकी पक्षिन पठावहीं॥ ११२॥ नृपति कुमार सुनि लीजिये पुकार येजू हमतौ तिहारे श्याम रूप रस प्यासीहैं॥ प्यावो छबि नीर तनु तपनि सिरावो लाल विरह विहाल हाल करि मति नासीहै॥ येहो रघुराय अबै जानोना वियोग पीर रसिकबिहारी तुमैं लागत जुहाँसीहै॥ नैननकी सैन दरशाय दुरे कुंजनमें हाय वह भई सो हमारे गर फाँसी है॥ ११३॥ कोऊ कहैं आली इमि होतीहौ अधीर काहे येई धनुतोरि तिहुँ लोक यश छायहैं। जोरी गौर श्यामकी संयोग रचि राखो विधि कंठ इनहींके जयमाला सरसायहैं॥ रसिकविहारी मन भाई सब ह्वैहै भटू राम घनश्याम सिया दामिनी सुहाय हैं॥ उमँगि चलैगो उर आनँद घनेरो सखी नागरी सहेली सबै मंगल जुगायहैं॥ ११४॥ कोऊ सखी बोलीं राजकुँवर सलोने मृदु शंभु चाप निपट कठोर क्यों चढावैंगे॥ कोऊ कहैं बैस अति थोरी पै अपार बल तोरि धनु पंकजकी नाल ज्यौं बहावैंगे॥ रसिकविहारी सुनि सकल सुखारी भईं हम सब धन्य ऐसो नैन फल पावैंगे॥ परशि सलोनो गात मुख जलजात देखि कोमल रसीलेबैन विहँसि सुनावैंगे॥ ११५ मन अकुलानी सिया सुमिरि पिताको प्रण अति सुकुमार घनश्याम राम जाने हैं॥ निपट कठोर शंभु चाप लखि भारी घनो केते भूप थाके वीर परम सयाने हैं॥ अधिक अधीर भई हीयनां धरैहै धीर दरशन हेत युगनैन अकुलाने हैं॥ रसिकविहारी दृग चंचल अचंचलभे मानौ जालबीच नवमीन उरझाने हैं॥ ११६॥ येरे विधि परम सयानो तू बनायो जग मेरे हित हेत ऐसो भयो मतिहीनो क्यों॥ जो पै श्यामसुंदर सो मिलकै

बिछोह भयो तोपै सुखमाँगो मोहिं मरनन दीनो क्यों ॥ रसिकविहारी रघुनंदन अनूपरूप तिनके हियेते मोह सब हरि लीनों क्यों ॥ जबै मिथिलामें धनुयज्ञ सुनि आये तबै शंभुको शरासन सुकोमल न कीनों क्यों ॥ ११७ ॥ येहो शंभु परमकृपालु हौं निहोरौं तुमैं मांगौं मनभायो बरदान यह पाऊंमैं ॥ दीजे ह्वै प्रसन्न अति दाता फल चारके हौ जाते गौरि संयुत तिहारो गुण गाऊंमैं ॥ कैतौ तात त्यागैं प्रण कैतौ मृदु होवैं चाप तबै साँवरेको जयमाला पहिराऊंमैं ॥ रसिकविहारी व्याहि आनँद उमंग रंग राम घनश्याम संग अवध सिधाऊंमैं ॥ ११८ ॥ कीजिये उपाय क्यों न कोटिन कछूना चलै सोई अब ह्वै है जो विधाता लिखि दीनों भाल ॥ शंभुचाप तात प्रणरेखा या ललाटकीसो टारेनाटरै है नेक तीनों ये अचल चाल ॥ रसिकविहारी सुखदानी मनमानी यही भाषि ये न काहूंसो कछूक निजहीको हाल ॥ जोपै रघुराय सों हमारो नेह साँचो लगो तोपै हम जानी हमैं साँचहू मिलैंगे लाल ॥ ११९ ॥

हरिगीतिका छन्द ।

इहि भाँति सिय जू सखिन युत रस नेहके छाकीं घनी ॥
प्रगटे लतनकी ओटते ताहीं समैं रघुकुल मनी ॥
आनंद हिय उमँगो रहीं जकि चित्रसी सब जहँ तहीं ॥
मानो शरद निशि चन्द्रको यकटक चकोरी लखिरहीं १२० ॥
कोऊ कहैं सखि दौरि मिलिये त्यागिये जग लाजको ॥
इनते विहीनो जो भयो सुरराज तो किहि काजको ॥
कोऊ कहैं हम धन्य सजनी लखे श्याम सुजानको ॥
ते मूढ़ कैसे श्याम राम विहाय ध्यावैं आनको ॥१२१॥
जरि जाय सो जप योग ज्ञान सनेहसो जरि जायरी ॥
जरि जाय जननी जनक सुत हित जिनहिं येन सुहायरी ॥
जरि जाय सो गुरु बंधु तन मन प्राण धन जरि जायरी ॥
जो भजत रघुकुल चन्दको नहिं करत अधिक सहायरी १२२

यह प्रीत साने बैन आली जनकनंदिनि युतकहैं ॥
सब श्याम छबि छाकी सखी कोऊ न गृह जैवोचहैं ॥
मन मानिकै भय मातकी तब सीय हिय धीरज धरी ॥
उर राखिकै रघुराय गमनी गेहको आनँद भरी ॥ १२३ ॥
लखि जात जनककुमारिको नृप नंद अति व्याकुल भये ॥
हा भामिनी गजगामिनी मृदु बैन यौं बोलत नये ॥
हा लाडिली नवला किशोरी प्राणप्यारी नागरी ॥
हा जानकी सुखदायिनी गुण रूप शील उजागरी ॥१२४॥
क्यों नैन बान चलाय प्यारी कुरिचली घायल हियो ॥
मुसक्यान मंद कृपानसी लागी सुतन व्याकुलकियो ॥
हे सुंदरी नवला सलोनी फेरि रूप दिखाइयो ॥ १२५ ॥
दृगनीर तुव छबि नीर बिन तलफत तिनै रसप्याइयो ॥
तुव रूप उर अंतर लिखो बिलगाय क्यों पल एकहू ॥
मन तो तिहारे संग गमनो धरत धीर न नेकहू ॥
इहि भांति कहि मृदुबैन राजिवनैन गुरु ढिगको चले ॥
इत लाल उतप्यारी चितव फिरि२ चितव आनँद भले १२६
इत आय दोऊ भाय गुरु पद पूजि अति आनँदलहै ॥
नृपबागके संवाद सरल सुभाय सुनिति सब कहे ॥
है अधिक हृदय प्रसन्न कौशिक सुभग शुभ आशिषै दये ॥
चिरजियहु मन अभिलाष पूरै राम सुनि प्रमुदित भये १२७
उत गई सखिगण संग सिय जू गौरिसदन बहोरिकै ॥
पदकंजगहि मृदुबैनते विनती करी करजोरिकै ॥
जैजैति जैशिव प्राणप्यारी जैति अभिमत दायनी ॥
जै दीनगन भय भंजनी जैभक्त जनमन भायनी ॥ १२८ ॥
जै शंभु तन अरधंग वासिनि जैति सुरगन मंडनी ॥
उत्पात्ति थितिलयकारिणी जै जैति खल दल खंडनी ॥
जगजननि जै गिरिजा भवानी जैति इच्छाचारिणी।
जै जैति जै गजवदन अंबा जैति मंगलकारिणी ॥ १२९ ॥

विश्वास करि अति प्रीतिसे पदकमल जो तुव ध्यावहीं।
तिनको अगम सब सुगम होत अभीष्ट फल सो पावहीं ॥
किहि भाँति मैं विनती करों तुम सकल अंतर्यामिनी।
मन भावतो वर दीजिये अब मोहिं शंकर भामिनी ॥१३०॥
बहु दिवस बीते तुमहि सेवत सफल सेवा कीजिये।
जा भाँति रघुवर वर मिलैं करि कृपा आशिष दीजिये ॥
धनु होय कोमल कै तजै प्रण तात रामहि देखिके।
जिहि विधि मिले मुहिं साँवरो सो जतन वन हि विशेषिके॥१३१॥
सुनि सीयकी वर विनय गिरिजा परमआनँद पायकै।
दीनी सुखद आशीश सीतहि सकल सखिन सुनायकै ॥
मन भावतो वर पाय हौ संशय तजौ सब जानकी ॥
दिन कछू बीते होहु दुलही रामरूप निधानकी १३२॥
सुनि गौरि वचन प्रमोद बाढो सीय हिय न समायसो ॥
आनंद जो सखियानके किहि भाँतिते कहि जायसो ॥
गिरिजाहि शीश नवाय आलिन संग सिय मंदिरगई ॥
रघुचंद दशरथ नंदमें उर प्रीति बाढी अतिनई ॥ १३३॥
दोहा–है सिय जिय रघुवीर बिच, सिय बिच रघुबर जीय ॥
प्रीति सनातन परस्पर, दुहू बसैं दुहुँ हीय ॥ १३४॥
वर्णत शोभा छिनहि छिन, उत सिय इत रघुलाल ॥
दोऊ दुहूँ निहारिकै, फँसे प्रेमके जाल ॥ १३५॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० वाटिका प्रसंग वर्णनो

नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा–रामसिया सियरामको, सुमिरत निज निज ठाम ॥
मनसंकल्प विकल्प मधि, बीती सकल त्रिजाम ॥ १ ॥
उठे प्रात लखि बंधु दुहुँ, नित्य कृत्य सब कीन ॥
गुरुपद पूजे मुदित है, मुनि अशीश वर दीन ॥ २ ॥

ताही छिन भेजै जनक, शतानंद मतिधाम ॥
सादर चले लिवाय मुनि, सहित लषण अरु राम ॥ ३ ॥
सुंदर विशद विशाल वर, बनी धनुष मखशाल ॥
मध्य चाप चहुँ ओर बहु, बैठे बली नृपाल ॥ ४ ॥
शतानंद कौशिक सहित, दोऊ राजकुमार ॥
गये तहां लखि सब उठे, कियो जनक सतकार ॥ ५ ॥
परम उच्च आसन सुभग, तहँ करगहि नृप आय ॥
राम लषण संयुत मुनिहि, बैठारे हुलसाय ॥ ६ ॥
राज कुँवर कौशिक सहित; आये धनु मखशाल ॥
सुनि धाये सब दरशहित, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥ ७ ॥
रुचिर यज्ञशाला निकट, उचित बने बहु धाम ॥
यथायोग मर्याद जहँ, बैठि लखैं सब वाम ॥ ८ ॥
ताछिन रघुवर रूप सब, निरखो निज निज भाव ॥
परम विचित्र चरित्र सो, नेक न परो लखाव ॥ ९ ॥
तब बंदीजन आयकै, कहो जनक प्रण टेरि ॥
सो सुनिकै भूपति बली, उठे धनुष दिशि हेरि ॥ १० ॥
जाय जाय सब लाय बल, थाके चाप उठाय ॥
रंच डगो नहिं करहुते, बैठे भूप लजाय ॥ ११ ॥
तब कौशिक लखि रामदिशि, बोले हिय हुलसाय ॥
तात विलोकौ धनुष तौ, लीजे जनक रजाय ॥ १२ ॥
सुनि रघुवर कर जोरिकै, कही जु आयसु होय ॥
तौ देखों धनु जाय मैं, नृपरुचि लीजे जोय ॥ १३ ॥

चौ० तब मुनीश औसर अनुमानी ❀ जनकहि कही मनोहर वानी ॥
राजराम धनु देखन चाहैं ❀ बड़ीबारते हृदय उमाहैं ॥ १४ ॥
सुनि कर जोरि कही अवनीशा ❀ परम उचित यह बात मुनीशा ॥
तब आज्ञा दीनी मुनिनाथा ❀ उठे राम गुरुपद धरि माथा १५॥
नख शिख सुभग श्याम मृदुगाता ❀ वय किशोर लोचन सुखदाता ॥
रघुवर रूप निरखि नरनारी ❀ भये नेहवश गिरा उचारी॥ १६॥

सवैया–कवित्त।

कोउ कहैं हित है इहि औसर भूपहि कोउ नहीं समुझावै ॥
काह करैं नरनाह वृथा जिहिते सबके उर दाह बढावै ॥
हैं कर कोमल राघवके यह शंकर चाप कठोर लखावै ॥
क्यों रसिकेश गहैं मिथिलेशके हीय दयालु को लेश न आवै ॥१७
कोउ कहैं इत होत अनीत लखौ न अबै चलिये निज गेहू ॥
कोउ कहैं नृप बावरोहै तब तो सब भाषत नाम विदेहू ॥
कोउ कहैं सब कोउ कठोर सुराज समाज दया नहिं केहू ॥
कोउ कहैं रसिकेश अबौं नृप लालहि बाल चलौ गहिलेहू ॥१८

दोहा–कोउ कहैं आली सुनौ, मोहिय इमि दरशात ॥
तृण समान धनु तोरिहैं, दृढ मानौ मम बात ॥ १९ ॥
इहि विधि पुर नर नारि सब, कहत परस्पर बैन ॥
हेरि हेरि रघुचन्द मुख, रंचहु धीर धरै न ॥ २० ॥
विकल सुनैना अति भई, कहैं सखिनसों बात ॥
कैसे धनुष उठाय हैं, राम श्याम मृदु गात ॥ २१ ॥
करति सोच सिय मनहिमन, शंकर गौरि मनाय ॥
कहति सखिन धीरे सकुचि, अलि अब ईश सहाय ॥२२॥
सुमिरि राम बल जनक नृप, छिनक हिये उमगात ॥
पुनि पिनाक गुरुता समुझि, मनहीमन अकुलात ॥ २३ ॥
सो गति सब हियकी लखी, रघुवर उर उमगाय ॥
आये वेगि पिनाक ढिग, हेरैं सहज सुभाय ॥ २४ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

आयो चाप भंग समै सबहि जनायो ढंग, मानी नृप हिय तबै धरकि धरकि उठे॥ रसिकविहारी नेहवारी पुर नारिनके कंचुकी सुबंद आप तरकि तरकि उठे ॥ उर उमगे हैं भूप कौशिक लषण आदि राम भुजदंड दोऊ थरकि थरकि उठे ॥ जनककिशोरी जूके सखिन समेत दोऊ लोचन सफल चारु फरकि फरकि उठे ॥ २५ ॥

दंडक छन्द।

राम धनु निरखि वर नृपन बल धरषि बहु परखि सब हीय गति हरषि रुख पायकै ॥ धर्मधुर धीर रघुवीर रणधीर तिहि सहज करधारि गुरु शिवहि शिर नायकै ॥ सपदि संधानि ध्रुव भंग अनुमानि कसि-कान लगतानि निरखो न कोऊ वियो ॥ वेगि वरिबंड जस मंड भुज-दंड ते चंडको दंड द्वैखंड खंडित कियो ॥ २६ ॥ घोर धनु भंगको शोरचहुँ ओरभो सुनत तिहुँ लोक चर अचर औचक चके ॥ विष्णु विधि शंभु सुरपाल दिगपाल अहिपाल महिपाल तिहिकाल झझके-जके ॥ होत धर धर धरा कुधर थर हलत सिंधु खलभलत उछलत रवि शशि थके ॥ चिक्करत मत्तगज सिंह मृग आदि बहु फिक्करत विकल मणि विपिन कंदरतके ॥ २७ ॥

दोहा—धनुष भंग इहि विधि भयो, औचक काहु न देख ॥
गिरो खंड द्वै भूमि तब, चकित रहे सब पेख ॥ २८ ॥
जै रघुवर जै राम जै, जैजै अवध किशोर ॥
जै रघुवीर सुधीर जै, चहूँ मचो यह शोर ॥ २९ ॥
निरखि शंभु धनु भंग सब, जनक नगर नर नारि ॥
करहिं निछावर आरती, बहु मणिगण धनवारि ॥ ३० ॥
जनक सुनैना सीय हिय, जो कछु भयो अनंद ॥
भाषिसकै नाहिं शेष सो, मैं वरणौं कहमंद ॥ ३१ ॥

सोरठ—कौशिक लषण अपार, मुदित भये धनु भंग लखि ॥
मानी नृपति निहार, सकुचाने श्रीहत सकल ॥ ३२ ॥
समय निरखि सानंद, शतानंद आज्ञादई ॥
जयमाला निरद्वंद, सियमेलै रघुचन्द उर ॥ ३३ ॥
तब नृप दई रजाय, सुनि सिय मन आनंद भो ॥
सखिन संग हुलसाय, चली विशद जैमाल लै ॥ ३४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आई रघुचन्द ढिग जनक किशोरी गोरी देखो खंड खंड तहँ शंभु धनु बंकको॥रसिकविहारी ऐसो आनंद सियाके चित्त जैसे वरवित्त पाय होवै सुख रंकको ॥ दोऊ कर उमँगि उठाये जयमाल लीने कवि हुलसाये हेरि उपमा उतंकको ॥क्षीरसिंधु गहिकै सनाल युग कंजनते मुक्तमाल देत मानो पूरन मयंकको ॥ ३५ ॥ सोहैं सिय सहित उमंग सखिसाजे अंग भूषण सुरंग रंग वसन विशाल सों ॥ करि कर ऊँचे दोउ ठाढ़ी हैं विदेहसुता कैसे कंठ डारैं माल छोटी रघुलालसों ॥ रसिकविहारी तिहि औसर निहारी छवि उपमा विचारी सो उचारी है उतालसों ॥ कनक लताकी नववल्ली द्वै अनूप कढ़ि ऊरध उठी हैं मनो मिलन तमाल सों ॥ ३६ ॥

सोरठा—एक सखी मुसकाय, तब बोली रघुचन्दसों ॥
सादर शीश नवाय, जयमाला उर धारिये ॥ ३७ ॥
सुनि रघुवर सकुचाय, शीश नवायो सियहि लखि ॥
जनकसुता हुलसाय, पहिराई जयमालउर ॥ ३८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अतिहि उताल ह्वै निहाल रघुलाल कंठ मेली जयमाल भयो आनँद अपारो है ॥ रसिकविहारी श्याम गोरी नवजोरी हेरी सब नरनारि निज प्राण धनवारो है ॥ माल पहिराई दुहुँछाई सो अपार शोभा ताछिन अनूप रूप रुचिर निहारो है ॥ धरि तिय भेष मंजु मुदित वसंत मानो आज ऋतुराज पै प्रसून जाल डारो है ॥ ३९ ॥

सोरठा—सखिन सिखाई सीय, गहे राम पद कंज तब ॥
आई प्रमुदित हीय, मातु निकट बैठी सकुचि ॥ ४० ॥
उत रघुवर हुलसाय, कौशिक पद शिरनायकै ॥
बैठे आशिख पाय, सहित लषण शोभित भये ॥४१॥
पुरवासी नर नार, निरखि शंभु धनुभंगको ॥
निज निज मति अनुसार, कहत परसपर मुदितमन ॥४२॥

दोहा—कोउ कहैं सब भाँति विधि, आज सुधारी बात ॥
दशरथ राजकुमारको, सुयशरहो कुशलात ॥ ४३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ताडका जु मारी करी यज्ञरखवारी फेरि तारी मुनिनारी येतो बल जस खूट तो॥ पुनि सुरनारी नरनारी औ सुरारिनारी हँसती जुन्यारी बीर नाम वह छूटतो॥ रसिकविहारी ईश सबहि सुधारी यह कीरति अपारी धौ न जानौं कौन लूटतो॥ जनकदुलारी होतीं निपट दुखारी भारी अवधविहारी ते न जो पै धनु टूटतो॥ ४४॥

दोहा–कोऊ कहति दिढायजिय, सबहि अधिक समुझाय॥
चाप आपही भंग भो, बात सत्य यह आय॥४५॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुनिकै उदंड बल प्रथमैकोंदंड दुरि जाय कै लजाय सो मँजूषा माहिं सोगयो॥ रसिकविहारी तऊ अवधविहारी ताहि हठकै उठायो मान ताको सबखोगयो॥ शंभु धनु हीय हो गरूर गरुताको भूर चूर धूर ह्वै सो सूरताकों नूर धोगयो॥ सोई हूक लूक की भभूक फूक फाटो हीय याही ते पिनाक आप टूक टूक होगयो॥४६॥

दोहा–कोऊ कहति विचारिजिय, भयो जु भंगपिनाक॥
सो कारण हम लखिलयो, सुनौ कहैं दै हाँक॥ ४७॥

घनाक्षरी कवित्त।

राम करकोमल कठोर शंभुचाप हेरी मिथिलानिवासिनके सोच हिय भरिगो॥ निपट हिरासलैं उसाँस सब भाषी यह रसिकविहारी कौन भूप मौन धरिगो॥ जीरन भयो पै तऊ आज लों कराल भारी येते द्यौस माहीं धनु गरिगो न सरिगो॥ एकै वार ऐसी परी आय सबहीकी धाय लाय लगी हायकी पिनाक याते जरिगो॥ ४८॥

दोहा–कोउ कहैं हम एकहू, नहिं माने ये बात॥
निज भुजबलते रामधनु, भंजो प्रगट जनात॥ ४९॥
सो सुनि बोली कोउ तिय, आली मेरी जान॥
जिहि प्रभाव टूटो धनुष, सो मैं करौं बखान॥ ५०॥

घनाक्षरी कवित्त।

परि परि पाय जाय गिरिजा निहोरी नित्य शंकर मनाये पूजे गण-पति भावसे॥ दीने दान विविध विधान जपकीने बहु नेम व्रत लीने

सिय सहित उछावसे ॥ रसिकविहारी मिथिलेशकी दुलारी दृढ प्रीति उरधारी अवधेश सुत चावसे ॥ जनक किशोरीके प्रतापते पिनाक टूटो टूटो है न जानौ राम बलके प्रभावसे ॥ ५१ ॥

दोहा—इहि विधि उत पुर नारि नर, कहैं परस्पर वैन ॥
मनभाई सबकी भई, उर आयौ अतिचैन ॥ ५२ ॥
इत सिय मात प्रमोद युत, कही नीरभरि नैन ॥
भंजौ राजकुमार धनु, क्यौं भाषौ यह बैन ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कबित।

कहति सखीसों सियमाय हुलसाय हीय हेली हौं भई हौं अति चकित निहारिकै ॥ रसिकविहारी भूरि भारी हो पिनाक जाहि निरखि अपार वीर बैठे बलहारिकै ॥ भंजो ताहि बाल रघुलालहौं न मानौं यह बात इक आई उर भाषौंसो विचारिकै ॥ मेरीजान काम राम रूप धरि आयो आज शंभु धनु तोरो वैर पाछिलो सम्हारिकै ॥ ५४ ॥

दोहा—यौं कहि रानी बहुरि लखि, सीताहि दई रजाय ॥
सखिनसंगलैसाजसजि, गिरिजहि पूजौ जाय ॥ ५५ ॥
मात वचन सुनि मैथिली, सकल सौंज लै साथ ॥
जाय अलिन युत पूजिकै, गिरिजहि नायो माथ ॥ ५६॥
ताछिन इक आली कही, सुन हेली मम बैन ॥
गौरि सरिस कितहूँ कहूँ, कोऊ सुर तिय हैन ॥ ५७ ॥
जाके पदपूजत सदा, पूजत सब अभिलाख ॥
सकल सुरासुर नारि नर, पूजत हिय दृढ राख ॥ ५८ ॥
सुनि बोलीं सबही सखी, आली कही प्रमान ॥
पै फल मिथिला वासको, है यह मेरी जान ॥ ५९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

शंभुगिरि वासी विंध्यवासी या गिरीशवासी रहतीं उमा क्यों तहाँ जानकी सिधावतीं ॥ काशीकी सुवासी तथा कांचीपुर वासी तऊ तितहूँ न जाय सीता सुमन चढ़ावतीं ॥ रसिकविहारी पूजी जनकदुलारी यातें नारी त्रिपुरारीकी त्रिलोकमें पुजावतीं ॥ मिथिला निवासिनी उपासिनी न होतीं फेरि कैसे यह ऐसी गरुताई गौरि पावतीं॥६०॥

दोहा—इहि विधि सबही परस्पर, कहत सुनत हुलसाय ॥
सिया सहित आई भवन, वेगहिं गौरि पुजाय ॥ ६१ ॥
छायो अति आनंद चहुँ, करैं नारि कलगान ॥
बजत बाजने विविध विधि, होत निछावर दान ॥ ६२ ॥
राम लषण मुनि जनक सिय, हिय बहु बढ़ीं उमंग ॥
पुर नर नारि अनंद युत, कहत भयो धनुभंग ॥ ६३ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० धनुषभंग वर्णनो
नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा—धनुषभंग लखि जनक नृप, अति अनंद उमगाय ॥
करत दान बकसीस बहु, भूषण वसन लुटाय ॥ १ ॥
ताही छिन चहुँ ओरते, भयो कुलाहल सोर ॥
औचक आये परशुधर, कंध कुठार कठोर ॥ २ ॥
जटाजूट शिर भस्म तनु, भाल त्रिपुंड्र विशाल ॥
करधनु शरवर तेज बहु, चपल चाल दृग लाल ॥ ३ ॥
परशुरामको सकल नृप, उठि उठि कियो प्रणाम ॥
शतानंद कौशिक तिनै, उचित मिले लखि वाम ॥ ४ ॥
मुनिहि मिलत लखि बंधु दुहुँ, सादर नायो शीश ॥
निरखि परशुधर रूप सब, विकल भये अवनीश ॥ ५ ॥
ताछिन औचक धनुष दिशि, हेरि कुठार उठाय ॥
अतिसकोप बोले तमकि, मिथिलापतिहि बुलाय ॥ ६ ॥
बोल मूढ़ नृप वेगि यह, किन भंजो भव चाप ॥
देव असुर नर कौन जो, भयो कालवश आप ॥ ७ ॥
सुनि कराल भृगुपति वचन, नृप चुप रहे सशंक ॥
तब रघुवीर सुवेगहीं, बोले निपट निशंक ॥ ८ ॥
परशु नाम ते डरपि कै, कहै न कोऊ नाम ॥
पै धनुभंजन हेतु सब, लेत रावरो नाम ॥ ९ ॥
सुनि भृगुनाथ रिसाय अति, परशु उठायो हाथ ॥
कही अबहिं सब खलनके, गात करों बिन माथ ॥ १० ॥

महि मंडल सब छिनकमें, अबहीं होत निक्षत्र ॥
माला क्षत्रिन शिरनकी, कोटिन बनैं इकत्र ॥ ११ ॥
परशुरामके वचन सुनि, लषण कहो अनखाय ॥
अवनी करै निक्षत्र अस, कोउ न हमैं लखाय ॥ १२ ॥
लषण ओर तब परशुधर, लखे विलोकनिबंक ॥
राम बंधु पुनि रोष युत, बोले वचन निशंक ॥ १३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

अनुचित भाषी तुम जैसी यह साखी सब राखी मनहींमें हम निज रिस मारिकै। एको ना दिखाय ऐसो वीर सामुहे जो आय फेरि घर जाय रघुवंशिन प्रचारि कै॥ वृद्ध जानि छोरौं कर जोरौं औ निहोरौं वेगि भवन सिधारो रोष सकल निवारिकै॥ रसिकविहारी छत्र धारी युद्ध कारी कोउ सकैना निहारी या कुठारीको निहारिकै॥ १४॥

पद्धरी छंद।

सुनि लषण लाल वाणी निशंक। द्विज नैन लाल करि भौंहबंक॥
बोले रिसाय रे मंदबाल। क्यों होत कालवश अतिउताल॥१५॥
तू अबहिंरंच जानै न मोहि। चुप जाय बैठ का कहहुँ तोहि॥
सुनि फेरि कही लछमन हँसाय। भाषो चरित्र निज मुखहि गाय१६
देखो विचारि यह जक्त रीति। जाने विना न हो प्रीति भीति॥
याते जु हाल पूछैं प्रशस्त। सो सत्य सत्य भाषौ समस्त॥ १७॥
तुव रूप देखि मम हीय माहिं। एकौ प्रतीति कछु होत नाहिं॥
सुर हौ तथापि हौ नाग कोउ। नरहौ सुभाषहू जोइ होउ॥ १८॥

घनाक्षरी कवित्त।

विप्र कहिये क्यों कर लीने हो हथ्यार याते क्षत्री कहिये क्यों वीरताई ना जनात है। संत कहिये क्यों क्रोध मंत हो अनंत अरु भूप कहिये क्यों रूप तौर ना लखात है॥ रसिकबिहारीहै तिहारी रीति न्यारी कछू संब दरशात शुद्ध एकौ ना मिलात है॥ आपनों बतावो नाम ठाम तब जानै हम भाषौ को गुरू है कौन तात मात भ्रात है॥ १९॥

पद्धरी छंद।

सुनि कही कुपित रे बाल वाम। मो नाम ख्यात जग परशुराम ॥
बहु बार भूमि कीनी निक्षत्र। बैठे महीप बहु बूझ अत्र ॥ २० ॥
दोहा—सुनि लछमन हँसिकै कही, धन्य भाग्य मम आज ॥
दीन जानि कीनी दया, दरश दियो द्विजराज ॥ २१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

पाऊं अनुशासन तौ आसन बिछाऊं, वेगि, वासन भराऊं वेगि धीर उर राखिये ॥ द्विज गुणमान ज्ञान त्यौं विचार मान, कीजे छोहकोहतें इतो न मनमाहँ माखिये ॥ देखि धनु बान, क्षत्री जान पुनि वीर माने कीनो हम रोषसो कृपाते दोष नाखिये ॥ रसिकविहारी सदा पूज्य हौ हमारे याते मीठो दधि मोदक मँगाऊं बैठि चाखिये ॥ २२ ॥

पद्धरीछंद।

तब कही कोपि भृगुवर जु छिप्र ॥ जनि जान मोहिं केवल सुविप्र ॥
मोसम न और जग कोउ वीर॥बहु शूर मोहिं लखत तजत धीर ॥२३॥
सौमित्र कही तब विहँसि धीर ॥ नव सुनी आज हम विप्र वीर ॥
पैजिय प्रतीति नाहिं रंच होय॥ द्विजराज सत्य गुण सुनहु सोय॥२४॥

घनाक्षरी कवित्त।

वेद पढ़ि जानैं जप यज्ञ बढ़ि जानैं पाप पुण्य मढ़ि जानैं बहु बातैं गढि जानैंहैं ॥ शापवेमें जानैं वर थापवे में जानैं दोष ढ़ापवेमें जाने तप तापवेमें जानैं हैं ॥ खाय जानैं खूब औ अजूबजा चिलाय जानैं रसिकविहारी बालहू पढ़ाय जानैं हैं ॥ येती पुनि औरहू अनेक रीति जानैं एक युद्धवर वीरताई विप्र नाहिं जानैं हैं ॥ २५ ॥

पद्धरी छंद।

भृगुनाथ फेरि बोले सक्रोध। अज्ञान तोहि रंचहु न बोध ॥
वर वीर मौलिमणि शूल पानि। सो शंभुदास ले मोहिं जानि२६
दोहा—लषण कहो गुरु शिष्यको, बल अरु सुयश अपार ॥
को अस जो जानै नहीं, विदित सकल संसार ॥ २७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मदन निहारो सो प्रसून बान वारो मारो दुर्बल विचारो यह शंभुबल भूरता ॥ अबला अपारी वृद्धनारी महतारी ताहि तमकि सँहारी या तिहारी तेज पूरता ॥ रसिकविहारी दुहुँकाज दुराचारी तिनैं भारी करि भाषैं या कवीनकी है क्रूरता ॥ हम तौ धनैयांहीं विलोकि अनुमानी जानी सकल पिछानी स्वामी सेवककी शूरता २८

दोहा—यौं कहि बोले लषण पुनि, मोंहिं रुची इक बात ॥
स्वामी सेवक दुहुँनके, गुण समान दरशात ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

उन द्विज मारो तुम क्षत्रिन संहारो उन लाज सब छोरी मरजाद तुम तोरीहै ॥ मुंड उनधारे तुम अक्षि गलधारे उन खप्पर लयो है हाथ लीनी तुम झोरीहै ॥ उनैं विष वारे तमैं क्रोध तनुजारैं उनैं भाई मति भोरी तुम वाद बुद्धि बोरी है ॥ रसिकबिहारी त्रिपुरारी औ तिहारी भली एकसी अनूप स्वामी सेवककी जोरीहै ॥ ३० ॥

पद्धरी छंद।

सुनि बैन लषणके परशुराम। बोले रिसाय रे बालवाम ॥
अब वेगि भाग ह्याँते दुराय। तन छनक माँह जम लोक जाय॥ ३१ ॥
सुनि स्वामि निंद जे चुप रहायँ। ते अधम मूढ़ वेगे नशाय ॥
हो रहौं दोष लखि रोष मार। भो आज काह कुंठित कुठार ॥ ३२ ॥

दोहा—सुनि बोले हँसि कै लषण, करौ न सोच अपार ॥
लाय देहुँ इक उपल तिहि, लेहु सुधारि कुठार ॥ ३३ ॥
कुंठित भयो कुठार जिहि, सो कारण यह आय ॥
लखि लीजे निज हीयते, मैं सब कहौं बुझाय ॥ ३४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैतो कर कंपत गिरो है कहुँ पाहन पै परशु तिहारो तबही ते छीन धार भो ॥ कैतौ कहुँ कानन कठोर तरु कीने छिंद जाते बाढ़ मंद है हथ्यार विन कार भो ॥ कैतो लोहकाचेको बनायोहै अजान कोऊ कैतो यह आजलों न काहू पै प्रहार भो ॥ रसिकबिहारी सत्य

येही दरशात याते कंध पै धरेही धरे कुंठित कुठार भो ॥ ३५ ॥
चौ०-सुनि भृगुनाथ लषण की बानी ❀ जनकहि कही महारिस सानी॥
रे नृप गहो मौन नहिं बोले ❀ लखौं काल द्रुव शिरपर डोलै॥३६॥
वेगि बताव चाप किन तोरो ❀ लखौं ताहि कैसो रिपु मोरो ॥
महावीर जेते जगलोगा ❀ कोउ न धनुष भंजिवे योगा॥३७॥
भारी भूरि कठिन कोदंडा ❀ परम उदंड प्रचंड अखंडा ॥
मम गुरु कर पिनाक जिन भंगा ❀ करौं खंड तिहिको द्रुत अंगा३८॥
सुनि भृगुपतिके वचन कठोरा ❀ कहो बहुरि लछमन वरजोरा॥
बारबार बूझौ भृगुनाथा ❀ धनुषभंग भो परशत हाथा ॥ ३९ ॥
सहज राम चापहि कर परसो ❀ तुरत टूटि अवनी पर दरसो ॥
धनु गरुता कछुनाहिं दिखानी ❀ भई बात सो सकल पिछानी४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

तेज ते न भारी गुणरूप ते न भारी शंभु संयुत तिहारे दीह दोषनते भारी भो। सुनो भृगुनाथ रघुनाथ हाथ लागतहीं चापके सुपापन-को भार जरि छारी भो ॥ रसिकबिहारी सब दुरित दुरानो तब धनुष पुरानो वृद्ध विशद विचारी भो ॥ फेरि अनुमानो तुव आगम पिनाक याते पातकडरन तन त्यागिकै सुखारी भो ॥ ४१ ॥

दोहा-यौं कहि बोले लषण पुनि, नेक न आवै लाज ॥
धनुही को बहु बार तुम, कहौ धनुष बिनकाज ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छोटे छोटे छोहरा छबीले रघुवंशिनके करत कलोलैं यूथ निज निज जोरि जोरि ॥ येहो भृगुनाथ चलौ अवध हमारे साथ देखौ तहँ कैसे चहुँ खेलत हैं कोरि कोरि ॥ रसिकविहारी ऐसी अमित अमानै सदा आनैं गहि तानैं एक एकनते छोरि २ ॥ कोऊ झकझोरैं कोऊ पकरि मरोरैं योंहीं खोरि खोरि नितहि बहावैं बाल तोरि तोरि ॥ ४३ ॥

दोहा-रही तिनहुँ ते अति हरू, निपट निजोर निकाम ॥
यह धनुहीं कैसी हुती, मोहिं बतावो राम ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

तूलकी रही कै काहू फूलकी रही कै मृदु मूलकी रही कै धूलसान कै सजाईती ॥ सांटीकी रही कै कहौं साँची स्वच्छ माटी लाय काँची काहू कुशल कुलाल ते कराईती ॥ रसिकबिहारी भृगुनाथ भाषिये तौ नेक शंकर समीप या कहाँ ते किमि आईती ॥ हौंतौ यह जानौ अनुमान ते जु कोऊ बाल ख्यालहेतु धनुही मृणालकी बनाईती ॥ ४५ ॥

चौ०–यों कहि लषण बहुरि मुसकाई ❀ बोले रोष तजौ भृगुराई ॥
भूले इक धनुहीं जो टूटी ❀ और अमित जगमें कह खूटी ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

ऐसीही कमान बालकेलिकी रुचै तौ बहु होवैंगी विदेह गेह अबहिं कढ़ाऊँमैं ॥ रसिकबिहारी जो तिहारी प्रीति याही माहिं तोपै दुहुँ खंड खैंचि वेगही बढ़ाऊँमैं ॥ नीकी जिय भावै भृगुनाथ तौ निर्देश दीजे हेमकी रचाय मणि माणिक मढाऊँमैं ॥ जोपै तुमैं चाहिये कहो तौ द्विजराज अबै याहू ते अनोखी चोखी अमित गढाऊँमैं ४७॥

दोहा–लषण वचन सुनि परशुधर, परशु उठायो घोर ॥
कहो हतहुँ इहिं बालकहि, मोहिं न दीजो खोर ॥ ४८ ॥
कटुवादी निंदक कुटिल, याहि वधे नाहिं दोष ॥
करौं क्षमा हठिकै तऊ, मोहिं बढ़ावै रोष ॥ ४९ ॥
सुनि भृगुपतिके बचन तब, रघुवर मृदु मुसकाय ॥
जोरि दुहूँ कर सामुहे, बिनय करी शिरनाय ॥ ५० ॥
महावीर वर धीर प्रभु, क्षमिये शिशु अपराध ॥
कृपा करत हैं बाल पै, सबही साध असाध ॥ ५१ ॥
लषण छुवो नहिं चापको, सत्य कहौं भृगुनाथ ॥
हौं अपराधी रावरो, यह तुव कर मम माथ ॥ ५२ ॥
सुनि रघुवर वाणी सरल, बिशद विनय गंभीर ॥
शमित भयो उर कोप कछु, भृगुपति धारी धीर ॥ ५३ ॥

चौ०—पुनि भृगुवर विचार उर कीना ❋ निजकर धनु रघुनाथहि दीना॥
नृप सुत छुअत सगुन भो चाप। ❋ लखो राम तब राम प्रतापा५४॥
तब भृगुनाथ प्रेम उर भारी ❋ बारबार रघुबरहि निहारी॥
नख शिख रूप अनूप अपारा ❋ चकित चित्त हिय करत विचारा५५॥

घनाक्षरी—कवित्त।

कैधौं जटा जूट,कैधौं कंचन मुकुट सोहे चंदनकी खौरि कैधौं चंद अभिरामहै॥ कैधौं मुण्डमाल कैधौं नाग मुकताकी माल कैधौं अंगराग कै विभूति छबि धामहै॥ कैधौं है त्रिशूल कैधौं शर सुख मूलकरे कैधौं पटपीत कै बघंबर ललामहै॥ रसिकविहारी छबि न्यारी या अनूप भारी राम रूप शंभु कैधौं शंभु रूप रामहै५६॥

चौ०—यौं विचारि पुनि दृढ़ अनुमाने ❋ सकल ईश धनुधर पहिचाने॥
तब जानो रघुवीर प्रभावा ❋ परमानन्द ज्ञान उर आवा॥ ५७॥
परशुराम हिय अति सकुचाई ❋ दुहुँ बंधुन वर विनय सुनाई॥
निज अनुचित सब क्षमा कराई ❋ प्रमुदित गये वेगि भृगुराई॥५८॥

दोहा—अतिसशंक जिय विकलह्वै, परे रहे दुखकूप॥
लखि पयान भृगुनाथको, सुखीभये सब भूप॥ ५९॥
पुनि मानी महिपाल सब, करि करि विविध विचार॥
गमन कियो निज निज भवन, अमित मानि मनहार॥६०॥

चौ०जनकनगर चहुँ आनँद भारी ❋ कहत परस्पर पुर नर नारी॥
अब दुख शोक सकलविनशाये ❋ खल मलीन सब भवन सिधाये६१
जनकराज उठि अधिक अनंदे ❋ सादर मुनि कौशिक पद वंदे॥
पुनि कर जोरि कही मृदुवानी ❋ अब सनाथ सीता मैं जानी ६२॥
मुनिवर करिय रजायसु सोई ❋ उचित होय इहि औसर जोई॥
सुनि कौशिक बोले हुलसाई ❋ लोकरीति अब चहिय सुहाई ६३
सजि वरात दशरथ नृप आवैं ❋ राम व्याह लखि हिय हुलसावैं॥
यह दृढ़ करि मुनि लछमन रामा ❋ परमानंद गये निज ठामा॥६४॥

इति श्री० रामरसायनवि० वि० परशुरामसंवाद
वर्णनोनाम सप्तमोविभागः॥ ७॥

दोहा–आये जे महिपाल ते, किते गये निज गेह ॥
किते सुजन मिथिला रहे, राखे नृपति विदेह ॥ १ ॥
पुनि मिथिलाधिप पत्र चहुँ, भेजे उचित लिखाय ॥
सकल ठौर मग साजते, निज दिशि दिये सजाय ॥ २ ॥

चौ०–पुनि प्रवीन वर दूत बुलाये ❀ दै पत्री तिन अवध पठाये ॥
शुचि सेवकन कही महिपाला ❀ व्याह साज सब सजौ उताला३
समै जानि नर तनु धरि देवा ❀ करत काज सियकी लखि सेवा॥
मंडप सजो अनूप विशाला ❀ रचित खचित कंचन मणिजाला४
असन वसन भूषन बहु नाना ❀ विविध वास वाहन वर जाना ॥
जनक भवन अरु नगर मँझारा ❀ सुर निर्मित सब साज अपारा॥५
उत वर दूत अवध पुर जाई ❀ युत मर्याद नृपहि शिर नाई ॥
करि बहु विनय पत्रिका दीनी ❀ ह्वै प्रमुदित सुमंत करलीनी ॥६॥
जनक पत्रिका बाँचि सुनाई ❀ पुनि मुनि पत्र पढो हरषाई ॥
नृप सुनि समाचार हुलसाने ❀ सकल लोग आनंद अघाने॥७॥
बूझी कथा दूत वर वरनी ❀ राम लषण नृप कौशिक करनी॥
कहो बहोरि सु व्याह विचारा ❀ साज समाज सहित विस्तारा८॥
सुनि सब चरित भूप हुलसाये ❀ भूषन वसन अनूप मँगाये ॥
प्रमुदित देनलगे बकशीशा ❀ लै सुदूत बोले धरि शीशा ॥९॥
कौशलपाल कृपा करि दीनी ❀ हम सानंद शीश धरि लीनी ॥
धर्मपाल महराजहि जानी ❀ विनती करैं जोरि दुहुँपानी १०॥
जिमि ममईश विदेह नृपाला ❀ तिमि स्वामी अवधेश कृपाला॥
पै हम हैं मिथिलापुरवासी ❀ जनकसुताके रहत उपासी ११॥
सो जानकी रामसों व्याहैं ❀ वह नातो जिहि भाँति निबाहैं ॥
याते धर्मनीति जिमि होई ❀ भूपति करिय रजायसु सोई १२॥
दूतवचन सुनि सकल सराहे ❀ कहे वचन नरपति जिय चाहे ॥
नृप रुख लखि सो शीश चढाई ❀ पुनि बकशीशधरी तिहि ठाई १३
बहुरि जोरि कर विनती कीनी ❀ राजराज आज्ञा मुहि दीनी ॥
अति उताल कौशलपुर जाई ❀ आवो वेगहि नृपहि लिवाई १४॥

यातै राज रजायसु दीजे ❋ वेगि जनकपुर पावन कीजे ॥
सुनि सुमंत दिशि भूप निहारी ❋ आज्ञा दई यथोचित सारी १५॥
सुनि सुमंत दूतन सँग लाये ❋ सहित सुपास निवास दिवाये ॥
पुनि बहु सेवक सुमति बुलाई ❋ साज सजन हित दई रजाई १६॥
पुनि बहु निवत पत्र लिखवाये ❋ दै सुदूत चहुँ ओर पठाये ॥
इहि विधि गुरु मंत्री मतिमाना ❋ किये काज सब सहित प्रमाना १७
जबते राम व्याह सुधि पाई ❋ सकल मातु तबते हुलसाई ॥
गानतान बकशीश सुदाना ❋ छिन छिन करैं अनेक विधाना १८
भरत शत्रुहन अति हुलसाये ❋ सकल सखा सेवक हरषाये ॥
निज निज साज सजैं सब भारी ❋ करैं जनकपुर चलन तयारी १९॥
पुरवासी अनंदमें फूले ❋ देह गेह सुधि बुधि सब भूले ॥
करैं सकल मंगल मय काजा ❋ साजैं बर बरात कर साजा २०॥
साजे सकल सदन बहु भाँती ❋ जटित हेम मुक्तामणि पाँती ॥
कंचन कलश सुबंदनवारे ❋ ध्वज वितान नव रंग अपारे २१॥

सोरठा—बीथी भवन बजार, राज महल बहु साज सजि ॥
छाई छटा अपार, राम व्याह मंगल अवध ॥ २२ ॥
मातु सकल हुलसाय, लोक वेद कुल रीति युत ॥
अति आनंद अघाय, नेग योग कीने विविध ॥ २३ ॥
पुरवनिता वर वृंद, मंगल साज सिंगार सजि ॥
गावत भरी उमंग, आवत राज अगारमें ॥ २४ ॥
इहि विधि सहित उमंग, भये सकल मंगल सुखद ॥
सजी बरात सुढंग, जुरो लोग चहुँ ओरते ॥ २५ ॥
समय विलोकि वसिष्ठ, बोले दशरथ राजसों ॥
है यह योग बलिष्ठ, वेगि बरात पयानको ॥ २६ ॥
सुनि गुरु वचन नरेश, दोऊ राजकुमार युत ॥
पूजे गौरि गणेश, कियो पयान मुहूर्त शुभ ॥ २७ ॥

दोहा—गज तुरंग रथ पालकी, सकल अनूप अपार ॥
पदचर संग समाज बहु, चले महीप उदार ॥ २८ ॥

गुरु नृप स्यंदन पै रुचिर, कुँवर तुरंगन पाहिं ॥
यथा उचित वाहन अपर, सजे जनकपुर जाहिं ॥ २९ ॥
बजत बाजने विविध विधि, गान तानको शोर ॥
जै जैजै अवधेश नृप, शब्द होत चहुँओर ॥ ३० ॥
जनक नगर ते अवध लग, जनक सजे सब साज ॥
मग सुपास गृहतें अधिक, लखि मन मुदित समाज ॥ ३१ ॥
अति उताल यौं जनकपुर, आये अवधनरेश ॥
इक योजन अगवान तिन, लाये सजि मिथिलेश ॥ ३२ ॥
दियो विशद जनवास नृप, करि बहु सकल सुपास ॥
दोऊ दिशि अति प्रीति भरि, छिन छिन बढत हुलास ॥ ३३ ॥
भयो शोर चहुँ जनकपुर, धाये सब नर नारि ॥
मुदित भये अवधेशको, साज समाज निहारि ॥ ३४ ॥
भरत शत्रुहन रूप लखि, चकित चितव सब कोउ ॥
कहत परस्पर कुँवर ये, राम लषण सम दोउ ॥ ३५ ॥
ताही छिन नृप सुतन युत, कौशिक हिय हुलसाय ॥
आय मिले अवधेशसों, परमानंद बढ़ाय ॥ ३६ ॥
राम लषण सौंपे नृपहि, प्रमुदित सकल निहारि ॥
देत अशीश उमंग सब, चिरुजीवो सुतचारि ॥ ३७ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, चारहु सुतन समेत ॥
जनकनगरमें अवधपति, राजे सहित जनेत ॥ ३८ ॥
पुनि कौशिक मिथिलेशसों, कहि ठाने चहुँ व्याह ॥
हरषाने दुहुँ ओर सब, बाढो अमित उछाह ॥ ३९ ॥
लोक वेद कुल रीति बहु, यथा उचित सतकार ॥
दान मान दुहुँ ओरते, नित प्रति होत अपार ॥ ४० ॥
तितहि भरत मातुल मुदित, नाम जुधाजित सोय ॥
आये सादर अवध ह्वै, लखि प्रसन्न सब कोय ॥ ४१ ॥
लखि मिथिलावासी मुदित, कौशल नाथ समाज ॥
सुखी अवधवासी निरखि, जनकराज वर साज ॥ ४२ ॥

इहि विधि बीते कछु दिवस, भई सकल जगरीत ॥
आयो समय विवाहको, शुभ दिन परम पुनीत ॥ ४३ ॥
अगहनकी सित पंचमी, वृषभलग्न भृगुवार ॥
सुखद समय गोधूलिका, रामविवाह विचार ॥ ४४ ॥

प्रमाण उत्सवसिंधौ-श्लोक।

विधिः-पंचम्यां मार्गशीर्षे तु शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥
संध्याकाले च रामस्य विवाहो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

दोहा-सजिबरात जनवासतें, चले जनकके धाम ॥
चहूँ बंधु दूलह बने, शोभित रूपललाम ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बागो पीत फेटा पीत पटका पिछौरा पीत सोहै खौर पीत मन मोहै मौर पीत है ॥ अंगराग पीत वर भूषण अमोल पीत तून धनु बान औ कृपान म्यान पीत है ॥ सजित तुरंग पीत सँग निज संगी पीत विपुल बराती पीत साज सब पीत है ॥ रसिकविहारी चारु दूलह विलोकि चारौ श्याम श्वेत हरित सुरंग भयो पीत है ॥ ४६ ॥

दोहा-ताछिन छटा अनूप लखि, जनक नगर नर नारि ॥
कहैं परस्पर वचन वर, परम प्रेम उर धारि ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैधौं मणि मौर कैधौं रुचिर रसाल मौर कैधौं फूल जाल कैधौं सेहरो दराज है ॥ कैधौं मुख मंजु कैधौं विकसो विशाल कंज कुंतल कि धौं है किधौं मधुप समाज है ॥ कैधौं है तुरंग कैधौं मारुत चलै है मंद कैधौं कल गान कैधौं कोकिल अवाज है ॥ कैधौं रघुराज साज दूलह सुहावे आज रसिकविहारी किधौं आवे ऋतुराज है ॥४८॥
निरखि बरात हुलसात बतरात वाम देखो रघुवंशी सबै सुखमानिधान हैं ॥ सोहत अदा तें नेक जोहत हीं मोहत हैं रसिकविहारी वीर धारे धनुबान हैं ॥ सकल सजीले औ छबीले उमगीले अंग सरस रसीले त्यौं रँगीले रूपमानहैं ॥ याते यौं जनात बात कौशल पुरीमें वीर चारों ओर गैल गैल छैलनकी खान हैं ॥ ४९ ॥ चारौ बंधु सु-

खमानिधान सुखसिंधु हेली रसिकविहारी नेक नैन भर हेरिले ॥ हि-
यरो डराय हाय डीठना लगाय कहूं याते तू लजायना छबीली टुक
घेरिले॥ हाहा खाय विनय सुनाय तुव पाय परौं धाय चहूं वदन दुरा-
य पट गेरिले ॥ वनरा विशाल वर वानिकबने हैं वीर वेगि ढिग जाय
लाय राई नोन फेरिले ॥ ९० ॥

दोहा–यौं प्रमुदित सब रूप लखि, कहैं परस्पर बैन ॥
सजि वरात चहुँ बंधु सुठि, जात जनकके ऐन ॥ ९१ ॥
नृत्य गान बहु वाद्यको, छयो शोर चहुँ ओर ॥
सुर नर नभ महि कहत सब, जैजै अवधकिशोर ॥ ९२ ॥

चौ०–इहि विधि चारो कुँवर सुहाये ❁ सहित समाज राज हुलसाये ॥
आये जनकद्वार भये ठाढे ❁ सबही मन प्रमोद बहु बाढे ॥ ९३॥
सियामात सब सखिगणसंगा ❁ परिछन कीनो सहित उमंगा ॥
लखि शोभा हरषीं महरानी ❁ सकल नारि आनंद अघानी॥९४॥
मोद भरीं मंजुल मृगनैनी ❁ करैं गान कल कोकिल बैनी ॥
राज कुँवर मंडपतर आये ❁ लखि दुहुँ राज हिये हुलसाये९५ ॥
भई अमित लौकिक कुल रीती ❁ पूजन दान नेग युत प्रीती ॥
प्रोहित समय विलोकि बुलाई ❁ सीतहि साजि सखी लै आई ॥९६॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

कंचन समान गात सहज सुहात फेरि दीपति दिखात दूनी
मंजन निषर पै ॥ रसिकविहारी सजे सकल सिंगार चारु शोभा
है अपार हेमबिंदुके विखर पै ॥ मंजुमणि मौरी लसै जनक किशोरी
शीश लगत सुहाई आई उपमा तिषरपै ॥ मानौ रसराज रघुराज
मन जीति बांधो विजय पताक लै सुमेरुके शिखर पै ॥ ९७ ॥
घांघरो घनेरो लाल बंद कंचुकी हू लाल चूनरी पिछौरी लाल
मौरी मंजुलाल हैं ॥ भूषण अनूप लाल शोभित शृंगार लाल रसिक-
विहारी नरनारी बहु लाल हैं ॥ मंडप विचित्र लाल महल विशाल
लाल चांदनी चँदोवा लाल साज सब लाल हैं ॥ उलही उमंग हिय
दुलही सुढंग देखि आवत भये जो लाल पीत पीत लाल हैं ॥९८॥

चौ०—जनकलली रघुलाल निहारी ❀ भये अनंद सकल नर नारी ॥
तब सब उचित विधान अपारा ❀ किये दुहूँ नृप रानि उदारा ॥ ५९ ॥
ते पुनि पद सरोज नृपधोये ❀ जे नित निजमानस मधि गोये ॥
पुनि विदेह गुरु आयसुपाई ❀ कन्यादान कियो हुलसाई॥ ६० ॥

दोहा—जनकराज सिय कर हरषि, राम पाणिमँहँ दीन ॥
छई छटा तब राजसुत, पाणिग्रहन जब कीन ॥ ६१ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

जनक किशोरी अरु अवध किशोर दोऊ होत पाणिग्रहण अनंद रसभीने हैं ॥ राम कर मध्य मंजु शोभित भयो है कर शोभा सो अपारमें सुजान चित्त दीने हैं॥ अति छबिवारी सिय आँगुरी अनूप हेरि बात निरधारी मति धारी जे प्रवीने हैं॥ रसिकविहारी विश्व विजय विचारी आज यातें पंचबान पंचवान संग लीने हैं ॥ ६२ ॥

चौ०—सीता पानि गहो रघुनाथा ❀ पुनिकरि सुविधि होम मुनिनाथा॥
सिया राम पट गाँठ सुजोरी ❀ होन लगी भाँवर सुठि जोरी ॥ ६३॥

घनाक्षरी कवित्त।

साजे व्याह साज ज्यों अनूप अवधेश लाल कीनेहैं सिंगार त्यों विदेहनृपकी लली ॥ दोऊ होत भाँवरी अपार ता समैकी छबि रसिकबिहारी सो अभूत उरमें रली ॥ ग्रंथित सुरंग चूनरीसोपटपीत संग निरखि सुढंग यों उमंग उमगी भली ॥ वृंद वृंद जुरिकै अनंद भरि इंद्र बधू कर गहि मानों दामिनीको घर लै चली ॥ ६४ ॥

देखि बनरी की छबि रति सकुचाति हीय हेरि वनराको त्यों मनोज होत झावरो ॥ सिय रघुचंदकी छटा निहारि व्याह समै रसिक बिहारी सब लोग भयो बावरो ॥ चूनरी ग्रथित पटपीत मणि मौर माथे लखि जन भाषैं मिथिलेश पुण्य रावरो ॥ नवलकिशोरी गोरी दुलहिनि जैसी बनी तैसो नव दूलह किशोर वर साँवरो ॥ ६५ ॥

जनक किशोरी गोरी राम अभिराम श्याम जोरी या करोरी रति काम सुषमा भली ॥ रसिकविहारी व्याह औसर अनूप रूप शोभित अपार शोभा हेरि हरषीं अली ॥ सिय छबि छाके पीय, पीय छबि

छाकी सीय जीकी गति दोऊ निजहीकी हियमें रली ॥ कंज दृग देखे उत श्याम भृंग लोभे इत हेरि मुखचंद फूली बालनलिनी कली ॥ ६६ ॥

चौ०-बजहिं बाजने विविध विधाना ❀ करहिं नारि मंगल कलगाना॥
भाँवर फेरि नेग बहु कीने ❀ धन मणि गण अगनित नृप दीने॥६७॥
ताछिन जनकनगरकी शोभा ❀ वरणिसकै अस कवि जग को भा॥
वरसै चहुँ अनंदकी धारा ❀ सुखी सकल नर नारि अपार॥६८॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जलद घिरे हैं जन उमड़ो विदेह मेह वरसै अनंद नीर धारन अनंतसें॥ दुंदुभी अवाजैं घन गाजैं जोरशोर छाजैं दुति दरशावैं तिय दामिनी दुरंतसें ॥ भूरि पूरि दान मान सरिता अपार बाढि पवन झकोर प्रीति पूरव दिगंतसें ॥ रसिकविहारी सिय व्याहके उछाह माँह भूलि कै भई है मनो पावस हिमंतसें ॥ ६९ ॥ बैठीं जे जठेरी निमिवंशकी घनेरी तिन नेगरीति उचित निवेरी सब भूरीहै॥ फेरि फेरि दम्पती विराजे मंजु शोभा वह रसिकविहारी प्राणजीवनकी मूरी है॥राम अभिराम श्याम करते सिंदूर जब दिनो सिय माँग सो अद्भुत छबिरूरी है ॥ महत मतंग मत्त मुदित निशंक मानो शुंडमें गुलाल लै कलिंदी धार पूरी है ॥७०॥

चौ०-पुनि मुनि सकल नेग निरवारे ❀ दंपाति एक ठौर बैठारे ॥
बहुरि वशिष्ठ रजायसु पाई ❀ सिय भगिनी तिहुँ जनक बुलाई७१ ॥

दोहा-सुता औरसी जनककी, एक उर्मिला नाम ॥
कुशध्वजकी मांडवी, श्रुतिकीरति अभिराम ॥ ७२ ॥

चौ०-सुंदरि सुता मांडवी नामा ❀ सो भरतहि व्याही सुखधामा ॥
पुनि कन्या उर्मिला अनूपा ❀ व्याहि दई लछमनहि सुभूपा ७३॥
जो श्रुतिकीर्तिनाम वर कन्या ❀ सो व्याही रिपुहनकहँ धन्या ॥
व्याहे राम सरिस तिहुँ भाई ❀ मुदित जनक दशरथ दुहुँराई॥७४॥

सो०–इहि विधि भयोविवाह, राम सहित तिहुँ बंधुको ॥
बाढो परम उछाह, महासुखी चर अचर सब ॥ ७५ ॥
तब नृप जनक उदार, हृदय हुलास सकोच युत ॥
दायज दियो अपार, सकल अलौकिक वस्तुते ॥ ७६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वच्छ युत धेनु कामधेनु सम पंचलच्छ दंती श्याम श्वेत दश लच्छ मद भीने हैं ॥हरित सुरंग रंग रंगके तुरंग कोटि स्यंदन सपाद कोटि हेमके नवीने हैं ॥ शिबिका अमोल रत्नजड़ित सुसत्त कोटि दासी दास अमित अनूप जे प्रवीने हैं ॥ बासन वसन भूरि भूषण अपार साज रसिकविहारी ये विदेह नृप दीने हैं ॥७७ ॥

सो०–जिते जनक नृप दीन, तिते सकल पुनि और बहु ॥
दासी दास विहीन, किये दान अवधेश बहु ॥ ७८ ॥
जितीकरी बकसीस, अवध नृपति हुलसायके ॥
ताहूते गुण बीस, साज सकल पूरित भयो ॥ ७९ ॥
याही बिधि दुहुँ राज, पागे परम प्रमोदमें ॥
अमितबार बहु साज, देत सकल पूरित तऊ ॥ ८० ॥
दुहूँ भूप कर दान, देखि सकल सुर नर चकित ॥
भेद न कोऊ जान, सिय प्रभाव प्रगटो कहा ॥ ८१ ॥
छायौ अमित अनंद, सीताराम विवाह को ॥
मुदित नारि नर वृंद, जैजैजै सब करत हैं ॥ ८२ ॥
पुनि सुवासिनी नारि, दूलह दुलहिनि चारहू ॥
सुंदर समय निहारि, कर गहि कुहवर लैगईं ॥ ८३ ॥
लै रनिवासमझार, कियो नेग लहकौरिको ॥
गावैंगीत सुढार, रीति सिखावैं दंपतिहि ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कलित कटोरा स्वच्छ हीरक अमोल गोल तामें क्षीर ओदन सु-धारो सुखहेतहै॥ होत लहकौरि नेग आनँद अपार छायो लगत सुहायो

अति सकल निकेतहै ॥ राम सिय शोभा अविलोकितिहि औसरकी भाषिवेको हरषि हिलोर हिय लेतहै ॥ रसिकविहारी जनु चंदते पियूष लैलै रतिसुख मैनरति मैन सुख देतहैं ॥ ८५ ॥

सो०–इमि बहु सहित उमंग, व्याहरीति सबही भई ॥
जनक सदन रसरंग, छायो नेह अपार लखि ॥ ८६ ॥
पुनि चारहु वर बंधु, पितु ढिग आये सकुच युत ॥
दशरथ नृप सुखसिंधु, निरखि हीय प्रमुदित भये ॥ ८७ ॥
बहुरि भई जिवनार, षटरस व्यंजन चतुर विधि ॥
वरणि लहै को पार, सो सब अमित अनूप सुख ॥ ८८ ॥
गारी विविध प्रकार, गावैं तिय आनँद भरी ॥
हास विलास अपार, भये भई जिवनारवर ॥ ८९ ॥
करि भोजन सानंद, एक सरिस सब छोट बड़ ॥
संयुत सुत सुखकंद, आये नृप जनवासमें ॥ ९० ॥
नृत्य गान चहुँ ओर, होत कुतूहल विविध बहु ॥
मचो नगरमें शोर, घर घर होत अनंद अति ॥ ९१ ॥
इहि विधि राम विवाह, भयो भये प्रमुदित सबै ॥
प्रतिदिन होत उछाह, दोऊ दिशि आनंदमय ॥ ९२ ॥
भोजन दान विनोद, गीतवाद्य कौतुक विविध ॥
हास विलास प्रमोद, होत रहत नित रैनि दिन ॥ ९३ ॥

दोहा–कौसल पुरवासी सबै, भूलिगये निजधाम ॥
मिथिला अवध लखात यक, मुदित रहैं वसुयाम ॥ ९४ ॥
होत जनकदिशिते सदा, नित नूतन सतकार ॥
रामविवाह अपार सुख, वरणिलहै को पार ॥ ९५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० विवाह वर्णनो नाम
अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

सोरठा–प्रातसमै सियमात, बोलि पठावत बंधु चहुँ ॥
सखन सहित नित जात, करत कलेऊ मुदित मन ॥ १ ॥

लक्ष्मीनिधि अभिराम, जनक राजके सुत विदित ॥
तिनकी तिय मति धाम, सिद्धा नाम ललाम अति ॥ २ ॥
दोहा—सो चारहु नृपनंद को, सिद्धा सहित सनेह ॥
संग सखिन युत लैगई, कर गहिकै निजगेह ॥ ३ ॥
वर आसन सनमान करि, बैठारे नृपलाल ॥
हास विलास विनोद बहु, करन लगीं सब बाल ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बोली एक वाम श्यामनाम राव रोहै राम याको अर्थ सकल समर्थ इमिलायो है ॥ सबमें रमै जो वही रसिकविहारी राम सो सुनि हमारे हिय अति भ्रम छायो है ॥ सकुच न राखौ नेक सत्य बात भाषौ वेगि आपने सबै हैं इतै कोऊ ना परायो है ॥ सबमें रमौ त्यौं रमौ भगिनी सुमातनमें नाम गुण है कै वंशहीमें होत आयो है ॥ ५ ॥ बोले रघुलाल निमि कुलकी निहारौ चाल जानैं हम हाल सब जैसे मिथिलाके हैं ॥ रसिकविहारी रीति भारी है तिहारी यह एक नामहीते काम राखत सदाके हैं ॥ अंबके जनक वेई जनक कुटुंबहूके जनकपुरीके वेई जनक सभाके हैं ॥ जातके जनक वेई भ्रातके जनक वेई तातके जनक वेई जनकसुताके हैं ॥ ६ ॥ कहत बधूटी एक हम यौं सुनी है लाल मुनि प्रगटाये चार सुत अवधेशके ॥ दूजी हँसि बोली भानुवंशी बल हीन होत आली इनकें तौ यही ढंग हैं हमेशके ॥ बोले मुनि श्याम तुम याहीं भ्रमते सुधाम देखो बल नृपति बुलाय देश देश के ॥ रसिकविहारी नारि मिथिलाप्रवीन सारी जैसी सुनी तैसी भौन देखी मिथिलेशके ॥ ७ ॥ बोले हँसि भरत सुनौ जू सिद्धिप्यारी नेक बात हम बूझैं सो बतावो बहरावोना ॥ नारीको विवाह नारी संग या तिहारी रीति कौन सुख भारी वेगि भाषौ सो सकावोना ॥ लक्ष्मीनिधि सिद्धि तिय नाम हैं प्रसिद्ध यह सिद्धिकाज सिद्धि विधि हमते दुरावोना ॥ रसिकविहारी गुण मंत संत पुत्र वधू इत है इकंत तंत कहत लजावोना ॥ ८ ॥ सिद्धि पुनि बोली बैन

सुनिये कमल नैन सीखे रघुवंशी गुण सकल प्रवीन तें ॥ सबसें अनोखी चोखी चातुरी चलावैं यह भगिनी सुता दै काम लेत हैं ऋषीन तें ॥ रसिकविहारी कही लखन न कोऊ काज साधक उदंड निमि वंशके बलीन तें ॥ बलते बनैना कल छलते बनैना तब हलते सलोनी सुता काढत जमीन तें ॥ ९ ॥ कोऊ सखी बोली अली सुंदर सबै हैं तऊ कौशला दुलारे क्यों सुरूप सरसाये हैं ॥ कही तब कौऊ कीन जानै महरानी भौन कीनो रतिनाथ गोन सोई छबि छाये हैं ॥ रसिकविहारी बाल कोऊ हुलसाय भाषी मधुर सुबैन कैसे बोलत सुहाये हैं ॥ कोऊ हँसि बोली याते बोल अति मीठे भये इनकी सुमाय इनें खीर खाय जाये हैं ॥ १० ॥

सवैया–कवित्त ।

बोले तबै रिपुसूदन यों जिय भाये तुमैं यह क्यों पहिचानैं ॥
संग चलो सबही जुरिकै हम सत्य सनेह तबै तुव जानैं ॥
जो न चलौ तौ कछू घरहीं सतकार करौ अतिही मन मानैं ॥
हैं अनव्याह किशोर घने रसिकेश सखा वे कहो इत आनैं॥ ११॥
वेगहि सिद्धि कही हँसिके निमिवंशीकहा गुण रावरे गावैं ॥
सो रसिकेशकरौ जिहिते मिथिला पुर वासी सबै समुझावैं ॥
चारन नंद अनंद समेत दई हमतौ तिहिते हुलसावैं ॥
होंय तिहारी जिती भगिनी तिन देहु विवाहि इहाँ सुख छावैं१२॥
राम कही सिधिसों मुसक्यायकै नारि घनी रघुवंशिहिचाहैं ॥
हौं निमिवंशी महा तपसी तिय एकहीको वरियाँई निवाहैं ॥
याते न राखौ विचार कछू रसिकेश बुलावहु वेगि कहाँहैं ॥
होयँ जिती मिथिलेश सुता हम चारहु बंधु तिती सबव्याहैं१३॥
सिद्धि कही तब श्याम सुनो बहु तीव्र भये जिय चैन लहैना॥
याते जुहो रसिकेश भली इक तौ पुनि दूजिहि पाणि गहैना॥
नारि घनी जिहिके तिहिके मन और कछू वर चाह चहैना ॥
ताहू पै सोरस भंग महा सब माहिं समान सनेह रहैना ॥१४॥
सो सुनिकै रघुराय कही है सही यह पै सब एकसेनाहैं ॥

कोउ लखैं सुख स्वारथको अरु कोउ घनो शुचि प्रेमहिंथाहैं॥
सुंदरि सिद्धि सुबैन सुनौ कछु नीकोबुरो जिय रंच न चाहैं ॥
ऐसो सुभाव परो है सदा हमतौ हिय सत्य सनेह निबाहैं १५॥
राजकुमारके बैन सु[illegible]भरे सुनिकै सबही उमगानी ॥
प्रेम प्रवाह बढ़ो हियमें तब सिद्धि कही गहिके मृदुपानी ॥
लाल निहोरति हौं तुमको मम चूक क्षमौ अति नारि अयानी॥
मोहिंनभूलियो श्याम सुजान कबौंरसिकेशसदा निजजानी १६
तिय एक हिये उमगाय सुधायकै आय दुहूं पदकंजगहे ॥
सकुचाय कछू अकुलाय सकाय सुनेह बढाय सुबैन कहे ॥
हम रावरे संग चलैं अबतौ जु वियोग कलेश न जै है सहे॥
रसिकेशजुपै तजिजैहौ लला छिनमें सुनिहौ नाहिं प्राण रहे १७॥
करजोर निहोर कही इक लाल विहाल करी सिगरी तियको ॥
मृदुबैन सुनाय छटा दरशाय सनेह लगाय हरो हियको ॥
रसिकेश कियो जिमि छोह घनो तिमि मोह सदा रखियो जियको॥
न सुहाय विहाय तुमैं रघुराय धरावहि धीरकहौ वियको॥१८॥
दोहा–सुनि सिद्धा बोली विलखि, जिय सनेह सरसाय ॥
हेली इनके हीयमें, निठुराई दरशाय॥ १९॥

कुण्डलियाछंद।

जाके नामहिं लेतहीं, मोह सकल मिटि जात ॥
सुत वित गृह तिय मीतसे, फेरि न प्रीति रहात ॥
फेरि न प्रीति रहात दुखसुख सम दुहुँ सोवैं ॥
लोक और परलोक, चाह आशा सब खोवैं ॥
रसिकविहारी राम जपत, ममता नाहिं ताके ॥
नेह ताहि क्यों होय, नाममें यह गुण जाके ॥२०॥
लागे जाके हीयमें, प्रिय वियोगको तीर ॥
आप सरिस सोई तबै, लखै पराई पीर ॥
लखै पराई पीर हिये दाया कछु लावै ॥
ये बे पीर सुवीर जिये, शंका कह आवै ॥

रसिकविहारी सहज चाप भंजो अनुरागैं ॥
इनै विरहको भार कहो, भारी किमि लागै ॥ २१ ॥
दोहा—यों कहि सिधि पुनि श्याम दिशि, हेरि नीर भरि नैन ॥
लै उसाँस बहु नेह युत, बोली मंजुल बैन ॥ २२ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

सरससनेहसने मधुर सुधासे बैन मंद मुसक्याय फेरि कबधौं सुनावोगे ॥ रसिकबिहारी बलिहारी या तिहारी छबि मंजुमनहारी फेरि कब दरशावोगे ॥ रूपकी उपासी हमैं दासी जानि खासी लाल यौंही फेरि कबधौं अनंद उर छावोगे ॥ येहो श्याम सुंदर सुजान प्राणप्यारे छैल साँचि कहो फेरि मिथिलामें कब आवोगे ॥ २३ ॥
दोहा—ताछिन बोली एक तिय, सुनौ छबीले लाल ॥
यह अधार है प्राणकी, प्रिया जानकी बाल ॥ २४ ॥

सवैया कवित्त ।

है सबको अति नेह सिया महँ सो रसिकेश विलंब न लैयो ॥
बारहिं बार बुलावहिंगे इहिते मिथिलेश ललीही पठैयो ॥
फेरि हिये हुलसाय लला मिथिला पुरवासिनको सुख दैयो
राजकिशोर सदा तुमहीं इत सीतहि आप लिवावन ऐयो२५॥
सत्य सनेह सने सुनि बैन कहै अनुराग भरी वर नारी ॥
देखि दशा तिनकी रघुनंद पगे दुहुँनैन भरे सुख वारी ॥
धीरज दै तिन श्याम कही रसिकेशरहौ सब भाँति सुखारी ॥
ज्यौं तुम मोहिं धरो उरमें तिमि हौं सबही अपने हिय धारी२६॥
आवहिंगे हम बार घनी मिथिला रसिकेश लहैं सुख भारी ॥
ऐसो सनेह को ठौर न और कहूँ जगमाहँ रुचै जहँगारी ॥
सत्य विचार करौ अपने अपने उर जानतिहौ गति सारी ॥
होय कोऊ नरनारी सदा तिहि लागत है ससुरार पियारी ॥२७ ॥
दोहा—इहि बिधि सुख सरसाय बहु, कहैं परस्पर बैन ॥
डीठ बचाय सखीन दिशि, सिद्धि करी हगसैन ॥ २८ ॥

पाय सिद्धि रुख तीयगन, गहे बंधु चहुँधाय ॥
बहु विनोद भरि मोद सब, करन लगीं हुलसाय ॥ २९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

कोऊ नारि सहित उमंग रंग डौरें अंग कोऊ भाल बेंदी दै तियाके साज साजे हैं ॥ कोऊ गुलचायकै कपोल मुख चूमै धाय कोऊ आय औचक गुलाल मलि भाजे हैं ॥ कोऊ गाय गारी करतारीदे बिलोकैं रूप कोऊ दूरहीतें फूल घालैं फेरि लाजैं हैं । रसिकविहारी कोउ दुलही बखानि भेट करहिं अनंद रघुनंद सुखकाजे हैं ॥ ३० ॥ सिद्धि हुलसाय आय बीरी मुखदीनी फेरि अतर लगायो अंग वसन सुरंगमैं । गजरा प्रसूननके चारू पहिराये लखि लाल हरषाये बोल आनँद उमंग में ॥ तुम अलबेली चारहूके जयमाल मेली काह यह कीनो छकिनेह रसरंगमें । रसिकविहारी सुकुमारी अब साँची कहो चारौ बीचैरहो कै रहोगी एकसंगमें ॥ ३१ ॥ सुनि सकुचाय सिद्धि बोली हँसिये हो लाल चारौ नृप लाल बहु ख्यालनमें तीखेहौ । नीके श्याम गोरे हौन कोरे रस बोरे छैल कोऊ नाहिं थोरे भेष भोरे शुद्ध दीखे हौ ॥ रसिकविहारी औध नारी हैं प्रवीन सारी तिन ढिगजाय जाय सब रस चीखे हौ । नैननके सैननके बैननके चैननके पूरे रघुचंद छलछंद बंद सीखे हो ३२ ॥ श्याम हँसि बोले हम सीखे वह सीखे जो न सीखे तिन सीखबेकी चाह उरलाये हैं॥रसिकविहारी गुणकीरति तिहारी सुनि सीखिबेको चारौ बंधु आज इत आये हैं ॥ जो पै कृपा करिकै सिखावो अधिकावो मोद जग यश छावो बहु दूरि ते सिधाये हैं। कहो हियराखैं कहौ भाषैं अभिलाषैंसब पूजें रावरेसे गुण मंत संत पायेहैं ३३॥

दोहा–इहि विधि हास विलासमें, मध्य दिवसभो आय ॥
समय निरखि पितु निकटको, हरषि उठे रघुराय ॥ ३४ ॥
पुनि सिद्धा रुखपायकै, सब धाई सखि वृंद ॥
द्वार आय वर सखनकों, गहि लीने सानंद ॥ ३५ ॥
भरि भरि रंग गुलाल सों, करि करि नारि सिंगार ॥
अतर पानदै मान युत, पहिराये उर हार ॥ ३६ ॥

अमित अली चहुँ बंधुकों, सखन सहित लै संग ॥
यथा रूप जनवासमें, लाई सहित उमंग ॥ ३७ ॥
अपर सखन को टेरि कै, सौंपे राजकुमार ॥
कही लेहु वर वीर ये, सकुचे सकल निहार ॥ ३८ ॥
इत सबही मंजन कियो, सजे अनूपम अंग ॥
सिद्धि निकट सब उत गईं, आली भरी उमंग ॥ ३९ ॥
सब रघुवर गुण रूप मद, छकीं तीय हुलसाय ॥
कहति परस्पर रुचिसरिस,उर अभिलाष दृढाय ॥ ४० ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवध महलकी धूरि ॥
तौ परसों नित श्यामके, चरण सजीवन मूरि ॥ ४१ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर तरु पात ॥
तो परसौं तन लालको, कुंजन आवत जात ॥ ४२ ॥
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधनगर मधि मोर ॥
उड़ि महलन पै बैठितो, निरखौं नवल किशोर ॥ ४३
कोउ कहैं सखि होउँ जो, अवधबाग बिच फूल ॥
तौ सुमाल मिलि लाल हिय, लगौं मिटै सब शूल ॥ ४४ ॥
कोउ कहैं अलि होउँ जो, अवध मध्य मृग रूप ॥
तौ खेलौं सँग लाड़िले, शोभा लखौं अनूप ॥ ४५ ॥
कोउ कहैं अलि होउँ जो, श्रीसरयूमाधि मीन ॥
तौ मज्जत परसों लखौं, रघुवर अंग नवीन ॥ ४६ ॥
सिद्धि कही तब सखि सुनौ, मैं यह चहौं सदाहि ॥
बसै श्याम मो हीय नित, छिनहु नहीं बिलगाहि ॥ ४७ ॥
इक सखि बोली प्रेम भरि, बड़भागिनि है सीय ॥
जाहि अनूपम वर मिलो, रघुवर सों कमनीय ॥ ४८ ॥
येही विधि सब सिद्धि युत, छकीं नेहरसरंग ॥
निशिदिन रघुवर रूप गुण, ध्यावैं सहित उमंग ॥ ४९ ॥
जनक भवन यौं रैनि दिन, नित प्रति होत उछाह ॥
सब हरषे जबते भयो, सिया रामको व्याह ॥ ५० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० हासविलासवर्णनो-
नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

तोटक छंद।

इहि भाँति वने दिन बीत गये ॥ सबही जन प्रीति अधीन भये ॥
नहिं काहु कछू सुधि धामहुकी ॥ तनकी धनकी सुत वामहुकी ॥१॥
बहुबार कही अवधेश जऊ ॥ न विदेह बिदा तिन कीन तऊ ॥
तब कौशिक भूपहि आय कही ॥ अब राज बिदा दृढ लेन चही ॥२॥
सुनिके मिथिलेश कहो वर है ॥ मिथिला अवधेशहिको घर है ॥
पुनि जो कछु राज रजाय करी ॥ सबही विधिसो हम शीशधरी॥३॥
कहि यौं पुनि साज सजाय सबै॥ पठये चहुँ बंधु बुलाय तबै ॥
यह बात सुनी पुर लोग जहीं ॥ अकुलाय उठे अतिहीं सुतहीं॥४॥
नर नारि सबै यह जीय चहैं ॥ रघुचंद इहाँ अब नित्य रहैं ॥
पुरवाम परस्पर बोलति हैं ॥ अभिलाष हिये वह खोलतिहैं॥५॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ कहैं हेली निज दोऊमें श्रवण कुंड वचन सुधाते हौं भरौंगी-जोरि बूंद बूंद॥कोऊकहैं हौं तौ सखी गुण गण साँवरेको उरबिच धा-रौं कंठ माल मधि गूंद गूंद ॥ कोऊ कहैं रसिकविहारी छबि नीलमणि धरि हौं हिये सो दृग तारनमें फूंद फूंद॥कोऊ कहैं वेतौ अली अवध सिधावैं याते हम गहिरावैं मन मंदिरमें मूँद मूंद ॥ ६ ॥

तो० छंद।

इहि भांति सबै तिय बैन कहैं ॥ रघुनंदनको न वियोग चहैं ॥
जुरिकै वनिता रानिवास चली ॥ लखिये छवि औरहु आज अली॥७॥
इहि भाँति चहूं बहु शोरबिछयो ॥ अब आज विदाकर साज भयो ॥
सब नैनन नीर विमोचत हैं ॥ किहि भांति रहैं इमि सोचत हैं ॥८॥
कह बालक वृद्ध कहा तरुणा ॥ मिथिला सब छाय गई करुणा ॥
पशु पक्षिहुते अतिहीं विलपैं ॥ मनही मन सोच भरे कलपैं ॥ ९ ॥
सिय मातु इतै सिय गोद लई ॥ करि हाय विलोकि उसास लई ॥
बहु नैनन ते जलधार चली ॥ तिहि औसर धीर अपार चली॥१०॥
तब रानिहि धीर धराय अली ॥ बहु बात कही समुझाय भली ॥
सिय मात महा मनमोह मली ॥ उरलाय लई करि छोह लली ११ ॥

पुनि हीय लखी जगरीति यही ॥ इमि सोचि कछू जिय धीर रही ॥
जननी मुख चूमि कपोल गहे ॥ तिय धर्म सिखाय सुबैन कहे ॥ १२ ॥
तिहि औसर आय विदेह तहाँ ॥ लखि सीतहि कीन विलाप महाँ ॥
छिनही छिन अंक लगावत हैं ॥ बहु नैनन नीर बहावत हैं ॥ १३ ॥
नृपनीति सुरीति सिखावतहैं ॥ उमगावत हैं अकुलावत हैं ॥
सुविदेह विदेह विदेह चहे ॥ तब कौन विदेह विदेह कहे ॥ १४ ॥
तिहि औसर तीन हुँ बालतहाँ ॥ द्रुत आय मिलीं करि शोर महाँ ॥
रनिवास जुरी तिय वृंद घनी ॥ दृग नीर ढरैं सब शोक सनी ॥ १५ ॥
चहुँ राजसुता सब नारिनके ॥ उर लागि रहैं सुकुमारिनके ॥
छिन धाय मिलैं गहि मातन को ॥ विलपाय मिलैं छिन भ्रातनको १६ ॥
दुहुँ बंधु नरेश समाज सबै ॥ लखि सो गति होय अधीर तबै ॥
पुनि लाय हिये समुझाय घनी ॥ अपने अपने उर धीर ठनी ॥ १७ ॥

पद्धरी छंद ।

तिहि समय चहूँ नृप सुत ललाम । आये अनंद युत जनक धाम ॥
मिथिलेशरानि सन्मान कीन । भोजन कराय बहु साज दीन ॥ १८ ॥
बहु भाँति कीन विनती अपार । सौंपी सुतान करि अमित प्यार ॥
मिलि चहूंबंधु सबसों सप्रीति । परितोष यथोचित रीति नीति ॥ १९ ॥
आये उताल जनवास माह । भेजो दहेज पुनि जनकनाह ॥
बहु साज वित्तदासी सुदास । दीने अपार नृप युत हुलास ॥ २० ॥
नरनारि नगरवासी अनेक । जिन उचित सरस इकतें इकेक ॥
तिन अमित वस्तु सिय रामहेत । दीनी सप्रेम लीनी सहेत ॥ २१ ॥
आये समाज युत अवधनाथ ॥ मिथिलेश मिलै गुण वरणिगाथ ॥
बहु दान मान दुहुँ दिशि अपार । कीने नरेश दोऊ उदार ॥ २२ ॥
दासी सुदासधन अमित साज । दीने बहोरि मिथिलाधिराज ॥
शुभ समय जानि पुत्रिन बुलाय ॥ दीनी चढाय रथ अंक लाय २३ ॥
इहि भाँति बिदा कीनी नरेश । वर वसन विभूषन शुचि सुदेश ॥
नृप सकल जान कहँ उचित दीन ॥ युत प्रीति सबहिं परितोषकीन २४ ॥
इमि अवधनाथ गमने सुधाम । युत पुत्रवधू चहुँ सुत ललाम ॥
पहुँचाय फिरे मिथिलानरेश । बहु कहत अवध पति गुण सुदेश २५ ॥

करि राम सीय सुधि बार बार ॥ सब हीय नेह उमगै अपार ॥
पुनि जनक राज सुत दान मान॥ तोषे समस्त याचक महान॥२६॥
पुनि बिदा किये सब लोग भूप ॥ वर उचित रीति संयुत अनूप ॥
चहुँ सुयश शोर भो देश देश । जैजैति जैति मिथिला नरेश॥ २७ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीजनकनंदिनी-
बिदावर्णनो नाम दशमोविभागः ॥ १० ॥

चौ०अवधनाथ उत अवध पधारे ❀ कहत जनक गुण मुदित अपारे॥
पहुँचे आय अयोध्या माहीं ❀ रचना भई अमित चहुँ घाहीं ॥ १ ॥
मंगल साज साजि वर वामा ❀ करत गान आईं नृप धामा ॥
बजत बाजने परम सुहाये ❀ सुत सुतवधुन सहित नृप आये ॥२॥
मोद भरी सब मात सिधारीं ❀ परिछन करि चहुँ बधू उतारीं ॥
डारि पावड़े मंदिर लाईं ❀ जुरीं नारि बहु हिय उमगाईं ॥ ३ ॥
देहिं अमोलनेग वर नारी ❀ मुख देखैं पट घूँघट टारी ॥
चारहु बधू निरखि सब रानी ❀ हिय अपार आनँद हुलसानी॥४॥
नेग देन हित हिय सकुचाहीं ❀ तिहूंलोक संपति कछु नाहीं ॥
हिय लजाय औसर अनुसारा ❀ भूषण दिये अमोल अपारा ॥५॥

दोहा—पुनि रानी चहुँ सुत वधुन, प्रीति अनंद समेत ।
सुंदर मुख दिखरावनी, दीने सुभगनिकेत ॥ ६ ॥
पुत्रवधू जहँ चारहू, प्रमुदित सहित उमंग ।
विलसे रहसि निकेत सो, निज निज प्रीतमसंग ॥ ७ ॥
कनक भवन वर कैकयी, सियहि दियो हुलसाय ।
दियो सुमित्रा मांडविहिं, मुकर भवन उमगाय ॥ ८ ॥
हरषि उर्मिलहि कौशला, फटिक भवन सुचिदीन ।
चंद्र भवन श्रुतिकीर्तिको, दियो मुदित सुख भीन ॥ ९ ॥

चौ०-पुनि करि निवछावर बहु बारा ❀ दई सासु वकसीस अपारा ॥
लोक वेद कुलरीति अनेका ❀ कीनी सरस एकते एका ॥ १० ॥
निशि जागरन करैं सब नारी ❀ होत गान कौतूहल भारी ॥
पूजन दान मान जिवनारा ❀ करैं अनेक उचित व्यवहारा॥११॥

इहि विधि सब अनंद महँ फूले ❀ रैनि दिवस कब होय सुभूले ॥
राज भवन अरु नगर मँझारा ❀ चहुँ बहु होत मंगलाचारा १२॥
शुभ ग्रह योग वार दिन जानी ❀ तब कंकन छोरन विधिठानी ॥
सकल हास सन बंधिनि नारी ❀ कहैं वचन परिहास सुखारी ॥१३॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

बोली एक नारी सुनौ अवधविहारी यह शंभु धनु है न जाहि वेगे गहि तोरैगे ॥ रसिकविहारी हौं तिहारी चतुराई तब जानौंगी सुकंकनकी गांठ जब छोरौंगे ॥ ताछिन छबीली एक दूजी हँसि बोली श्याम आज धीरताई वीरताई सब भौरोगे ॥ तुम पै न तौ लों कबौं छूटि है छवीलेछैल जौलोंनाहिं जनकसुताकों कर जोरौगे ॥ १४ ॥ फेरि इक बोली हम जानी मिथिलामें जाय नीकी नौलनारिनके चित्त चोरि लायेहौ ॥ याते बारम्बार कर कंपत तिहारो लाल करत ढिठाई पैहियेमें भय छाये हौ ॥ कछु जनि मानौं नेक भीति जो भई सो भई हेरौ टुकप्यारे क्यों लजाय शिर नाये हौ॥मति मुखमोरौ वेगि कंकनको छोरो संक छोरौ सब कौशलपुरीमें अब आये हौ ॥ १५ ॥ पुनि इक वाम यौं कहीहो अभिराम श्याम कौशिक कृपाते यश भारी बहु लूटो है ॥ नृपति कुमार हौ सदा ते सुकुमार फेरि खायो तिय जूठो तब और बल खूटो है ॥ हम अबला पै रावरे ते सबलाहैं तऊ जानो पुरुषारथ तिहारो सब झूठो है ॥ रसिकविहारी शंभुचाप किमि टूटो कहौ तुम पै अबैलों नेक कंकन न छूटो है ॥ १६ ॥

दोहा—इहि विधि हास विलास बहु, करैं मुदित मन वाम ॥
सुनि सकुचाय सुवेगहीं, कंकन छोरो राम ॥ १७ ॥
योंहीं प्रति दिन होत बहु, आनँद अमित उछाह ॥
भोजन दान विनोद नित, निशिदिन रहत उमाह ॥ १८ ॥
पुनि दशरथ महिपाल मणि, यथा उचित सानंद ॥
सकल अयाची करिदये, जिते सुयाचक वृंद ॥ १९ ॥
अरु जे जन चहुँ देशके, आये राम विवाह ॥
बहु दिनते प्रिय पाहुने, हठि राखे नरनाह ॥ २० ॥

पुनि सब रुचि लखि अवधपति, संयुत प्रीति सुनीति ॥
किये बिदा सन्मान करि, बहु विधान नृपरीति ॥ २१ ॥
कौशिक मुनिहि निहोरि पुनि, राखे राम नृपाल ॥
प्रीति प्रतीति अपार वश, रहे अवध कछु काल ॥ २२ ॥
पुनि मुनि मुनिन समाज युत, नृप रामहि समुझाय ॥
भये बिदा सानंद अति, यथा उचित सतभाय ॥ २३ ॥
नृपरानी सुत सुत वधू, सकल परे मुनि पाँय ॥
दई अशीश प्रमोद भरि, ऋषिन सहित ऋषि राय ॥ २४ ॥
पुनि वशिष्ठ आदिक सकल, मुनिहि मिले युत प्रेम ॥
अपर समाज प्रणाम करि, आशिष लहो सुक्षेम ॥ २५ ॥
पुनि वशिष्ठ सुत सचिव नृप, कछुक दूर मुनि संग ॥
गये फिरे पहुँचाय गृह, आये सहित उमंग ॥ २६ ॥
रहत सदा सानंद सब, पुर परिजन समुदाय ॥
सुत सुत वधू निहारि नित, नृप रानी हुलसाय ॥ २७ ॥
जे तिय मिथिला वासिनी, नृप सुतानके संग ॥
आईं ते सखि गणरहैं, प्रमुदित भरी उमंग ॥ २८ ॥
जनक लली प्रगटी जबै, जनक नगरमें आय ॥
जनम लियो मिथिला तबै, सकल सखी समुदाय ॥ २९ ॥
यथा योग निमिकुल सदन, लखि निजरुचि अनुसार ॥
सुरी किन्नरी आदि बहु, भईं नरी सुविचार ॥ ३० ॥
ते सिय संग विनोदिनी, वय गुण रूप समान ॥
बाल सखी हैं आठ वर, प्यारी परम प्रधान ॥ ३१ ॥

दोवईछंद ।

चंद्रकला १ उर्वशी २ सहोद्रा ३ कमला ४ विमला ५ मानौ ॥
चंद्रमुखी ६ मेनका ७ सु रंभा ८ आठ मुख्य ये जानौ ॥
प्यारी सखी विदेहसुताकी बाल संगिनी सोहैं ॥
इनहिं आदि सहचरी घनी जिहि देखि शची रति मोहैं ॥ ३२ ॥
दोहा—सप्त सप्त यूथेश्वरी, इक इक सखि स्वाधीन ॥
हैं सहस्र यूथेश्वरी, प्रति अनुचरी प्रवीन ॥ ३३ ॥

सानुचरी यूथेश्वरी, संयुत सखी सुढंग ॥
दीनी जनक दहेजते, आईं सियके संग ॥ ३४ ॥
पुनि इत कौशल्या सियहि, दई सखी दश और ॥
ते मिलि अष्टादश भईं, सब सखीन शिर मौर ॥ ३५ ॥

दोवई छंद।

प्रथम-चारुसीला १ पुनि-राधा २ अरु-सुभगा ३ लष-क्षेमा ४ ॥
मृगलोचना ५ मालिनी ६ हरिणी ७ कहि-सुलोचना ८ प्रेमा ९ ॥
सुधामुखी १० ये विशद सखी दश दई कौशला रानी ॥
सरिस रूप वय गुण सप्रीति सब जनकसुता सुखदानी॥ ३६ ॥
दोहा-दशहू प्रति यूथेश्वरी, आठ आठ हैं और ॥
तिन सबही प्रति किंकरी, द्वै द्वै सहस सुतौर ॥ ३७ ॥
सो०-सखीं अष्टदश सोय, सहस यूथ यूथेश्वरी ॥
सबै मुदित मन होय, बढ़ी परस्पर प्रीति बहु ॥ ३८ ॥
मिथिला वासिनि जोय, अरु कौशल पुर वासिनी ॥
एक प्राण तनु दोय, यौं सम सबहि सनेह भो ॥ ३९ ॥
दोहा-सखी अष्टदश सीयकी, प्यारी परम सुजान ॥
पुनि षोडश ये और हू, सिय पियकी सुखदान ॥ ४० ॥
ये षोडश वे अष्टदश, सकल सखी सुखदाम ॥
दंपति सेवाकिनी सदा, अंतरंगिनी जान ॥ ४१ ॥
कनक भवन वर विशद है, जासम सदन न आन ॥
सीता राम विहार थल, परमानन्द प्रधान ॥ ४२ ॥
महल रहस्य रहस्य सखि, अंतरंगिनी जोय ॥
समय रहस्य रहस्यमें, रहैं तहाँ अलि सोय ॥ ४३ ॥
यदपि सकल दंपति सखी, तदपि विनोद प्रकार ॥
पिय षोडश सिय अष्टदश, करि राखी निरधार ॥ ४४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हेमा १ पद्मगंधा २ वरारोहा ३ चंद्रभागा ४ चारु-चंद्रवती५ हंसिनी ६, मनोरमा ७ उचारिये ॥ चंद्रावली ८ अलसा ९ सु-पद्मा १०मोहनी ११ विचित्र माधवी १२ सुभद्रा १३ गुणवल्लरी १४ निहारिये ॥ वीणा धरी १५ मोदवती १६ रसिकविहारी मंजु

षोडश अनूप अंतरंगिनी विचारिये॥ दंपति रहस्य अधिकारी सुखकारी सदा कौशल किशोरकी सखी ये निरधारिये ॥ ४५ ॥

दोहा—पुनि षोडश षोडश लखौ, यूथेश्वरी प्रवीन ॥
एक एक सखिके निकट, रहैं सदा स्वाधीन ॥ ४६ ॥
सोहैं प्रति यूथेश्वरी, वर अनुचरी अनूप ॥
पंच पंच शत रहत हैं, परम प्रवीन सुरूप ॥ ४७ ॥
यूथेश्वरी सुकिंकरी, सहित सखी सुखदानि ॥
सेवैं दंपति रुचि निरखि, समै समै अनुमानि ॥ ४८ ॥
अपर तिहूँ भगिनीनकी, सखी अनेक प्रवीन ॥
आईं मिथिलाते बहुरि, इतहुँ रानि अलिदीन ॥ ४९ ॥

चौ०—भामा १ रुक्मवती २ शुभकारी ❀ सुमती ३ बहुरि चन्द्रिका ४ नारी॥
ये चारों सुंदर गुणखानी ❀ सखी मांडवीकी प्रियजानी ॥ ५० ॥
चंपावती १ नंदिनी २ वामा ❀ मुदिता ३ कुण्डली ४ सुगुण धामा॥
चारौं चारु अंग शुचिनारी ❀ सखी उर्मिलाकी अतिप्यारी ॥ ५१ ॥
सुभग संयमी १ उत्तम श्यामा ❀ २ बहुरि मादिनी ३ छबिमय कामा॥ ४॥
चारहु प्रीय विशद गुणरूपा ❀ श्रुतिकीरतिकी सखी अनूपा ५२ ॥
द्वै द्वै शत किंकरी सुनारी ❀ प्रति सखीनकी सेवाकारी ॥
या विधि द्वादश सखी सदाई ❀ सिय तिहुँ भगिनी पास रहाई ॥ ५३ ॥

दोहा—ये सब जनक दहेजमें, दीनी पुत्रिन संग ॥
आईं अवध समाज युत, प्रमुदित भरी उमंग ॥ ५४ ॥
निज निज पुत्र बधून पुनि, दुहूँ सासु हुलसाय ॥
चार चार औरहु सखी, तिनहुँ दईं सुखदाय ॥ ५५ ॥
सूर सुंदरी १ सारिका, २ नेह मंजरी ३ जानि ॥
बाला ४ ये चारहु सखी, दईं मांडविहिमानि ॥ ५६ ॥
सखी गोकुला १ जोवना, २ दीपावली ३ अनूप ॥
वृन्दा ४ दीनी उर्मिलहि, ये चारहू सुरूप ॥ ५७ ॥
साखा १ ज्वाला २ गर्विता ३ विशद कदंबा ४ देखि ॥
ये चारौ श्रुतिकीर्तिको, दईं सखी शुभ लेखि ॥ ५८ ॥

ये द्वादश सखियान प्रति, रुचिर अनुचरी और ॥
पंच पंच शत सकल हैं, बिशद रूप गुण तौर ॥ ५९ ॥
अवधवासिनी और सब, मिथिला वासिनि तीय ॥
रहैं परस्पर प्रेमयुत, परम प्रमोदित हीय ॥ ६० ॥
चारहुनृपति सुतानकी, मुख्यसखी ये जान ॥
दासी दासी दासिका, ते न्यारी बहुमान ॥ ६१ ॥
आईं मिथिलाते तिया, ते सब सहितकुटुंब ॥
सो न्यारे पुनि इतर हैं, दासी दास कदंब ॥ ६२ ॥
निज निज स्वामिनिको सबै, सेवैं सहित सुरीति ॥
रहैं सकल सानंद नित, भीति प्रीति युत नीति ॥ ६३ ॥
चहूँवधू निज निज भवन, संयुत सखी समाज ॥
विलसैं परमानंदहिय, सुर दुर्लभ सुखसाज ॥ ६४ ॥
तिहुँ भगिनी निज सखिनयुत,सादर प्रीति बढाय ॥
रीतिनीति मय सीय की, सेवा करैं सदाय ॥ ६५ ॥
राखैं सिय भगिनीन पै, सादर सत्य सनेह ॥
रहै परस्पर प्रेम जनु, एक प्राण द्वैदेह ॥ ६६ ॥
वेद४बाण५अरु-चंद१रस६, भूमि१नैन अनुमान ॥
जनकसुताकी सहचरी, येती मुख्य प्रमान ॥ ६७ ॥
वेद४बान५दृग२नाग८भुज२,गणपतिरदन १विचार ॥
अंतरंग रघुचंदकी,मुख्य सखी निरधार ॥ ६८ ॥
वसु८आकाश०अहि८नैन२कहि, भाषी परम प्रमान ॥
तिहूँ सीय भगिनीन प्रति,मुख्य अली ये जान ॥ ६९ ॥
नभ०सर५वसु८दृग२पंच५गुण३,ये सब सखी प्रधान ॥
अपर सुदासी वेद४रस६,मुनि७ग्रह९शशि१दृग२बान५।७०
पुनि जे सखि दासीनके, सकल कुटुंबी और ॥
तेऊ सेवक सिवकिनी, वर्णनको नाहिं तौर ॥ ७१ ॥

श्रीजानकीजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदीजुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचरी	सखीप्रति यूथेश्वरीन-की अनुचरी सब	सब सखी
१	चंद्रकला	७	१०००	७०००	१
२	उर्वशी	७	१०००	७०००	२
३	सहोद्रा	७	१०००	७०००	३
४	कमला	७	१०००	७०००	४
५	विमला	७	१०००	७०००	५
६	चंद्रमुखी	७	१०००	७०००	६
७	मेनका	७	१०००	७०००	७
८	रंभा	७	१०००	७०००	८

ये सब मिथिलासे आईं सो सखी हैं ५६०६४।

जुदीजुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचरी	सखीप्रति यूथेश्वरीन-की अनुचरी सब	सब सखी
१	चारुशीला	८	२०००	१६०००	९
२	राधा	८	२०००	१६०००	१०
३	सुभगा	८	२०००	१६०००	११
४	क्षेमा	८	२०००	१६०००	१२
५	मृगलोचना	८	२०००	१६०००	१३
६	मालिनी	८	२०००	१६०००	१४
७	हरिणी	८	२०००	१६०००	१५
८	सुलोचना	८	२०००	१६०००	१६
९	प्रेमा	८	२०००	१६०००	१७
१०	सुधामुखी	८	२०००	१६०००	१८

ये सब अवधकी सखी हैं, जो सासुने दीनीहैं १६००९०॥

श्रीजानकीजीकी सब सखी मिथिला अवधकी २१६१५४॥ मिलायके इतनी हैं॥

श्रीरघुनंदनजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

सखीनकी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी यूथेश्वरी	यूथेश्वरीनकी अनुचरी	सखीप्रति यूथेश्वरीनकी सब अनुचरी
१	हेमा	१६	५००	८०००
२	पद्मगंधा	१६	५००	८०००
३	वरारोहा	१६	५००	८०००
४	चंद्रभागा	१६	५००	८०००
५	चंद्रवती	१६	५००	८०००
६	हंसिनी	१६	५००	८०००
७	मनोरमा	१६	५००	८०००
८	चंद्रावली	१६	५००	८०००
९	अलसा	१६	५००	८०००
१०	पद्मा	१६	५००	८०००
११	मोहनी	१६	५००	८०००
१२	माधवी	१६	५००	८०००
१३	सुभद्रा	१६	५००	८०००
१४	गुणबल्लरी	१६	५००	८०००
१५	वीणाधरी	१६	५००	८०००
१६	मोदमती	१६	५००	८०००

श्रीरघुनाथजीकी सब सखी इतनीहैं १२८२६४॥

श्रीमांडवीजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	भामा	२००	१
२	रुक्मवती	२००	२
३	सुमती	२००	३
४	चंद्रिका	२००	४
०	ये सब सखी ८०४ मिथिला की हैं		०
१	सुरसुंदरी	५००	५
२	सारिका	५००	६
३	नेहमंजरी	५००	७
४	बाला	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीमांडवीजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

श्रीउर्मिलाजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	चंपावती	२००	१
२	नंदीनी	२००	२
३	मुदिता	२००	३
४	कुंडली	२००	४
०	ये सब सखी मिथिलाकीहैं ८०४		०
१	गोकुला	५००	५
२	जोवना	५००	६
३	दीपावली	५००	७
४	वृंदा	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीउर्मिलाजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

श्रीश्रुतकीर्तिजीकी सखीनका निर्णय चक्र।

जुदी जुदी गिनती	सखीनके नाम	सखीनकी अनुचरी	एकत्र गिनती सब
१	संयमी	२००	१
२	श्यामा	२००	२
३	मादिनी	२००	३
४	कामा	२००	४
०	ये सब सखी सिथिलाकी हैं		०
१	साषा	५००	५
२	ज्वाला	५००	६
३	गर्विता	५००	७
४	कदंबा	५००	८

ये सब अवधकी सखी हैं जो सासुने दीनी हैं २००४

श्रीश्रुतिकीर्तिजीकी सब सखी दोनों जगहकी इतनी हैं २८०८

दोहा—इहि विधि चारहु नृप सुता, निज निज महलन माहिं॥ सखिन सहित सादर सदा, परमानन्द रहाहिं॥ ॥ ७२॥ राज कुँवर वर चारहू, समय समय युत रीत॥ सकल काज नित-करत हैं, सहित प्रीत नृप नीत॥७३॥ बहु दिन बीते अवधमें, रहत अनंद समेत॥ बहुरि भरत मातुल करी, नृपहि विनय लखि हेत॥ ७४॥ तात बुलायो भरत को, जो दीजिये रजाय॥ तौ हम संग सिधावहीं, सहित शत्रुहनभाय॥ ७५॥ सुनत युधाजितके वचन, दशरथ नृप हुलसाय॥ भरत शत्रुहन बंधु दुहुँ, पठये साज सजाय॥ ७६॥ दुहू बंधु मातुल सहित, पहुँचे केकय पास॥ मिले रहे सादर तहाँ, सहित सुपास हुलास॥ ७७॥ राम लषण इत अवधमें, रहत सदा हरषाय॥ भरत शत्रुहनकी सुरति, नितहि करत दुहुँभाय॥७८॥ रंगभवन रघुचंद ढिग, जुरत सखा हित बंधु॥ करत विनोद विलास नित, उमगि उमगि हिय सिंधु॥ ७९॥ राज काज मरयादमय, पितु अनुशासन पाय॥ राम लषण दुहुँ करत हैं, यथा योग हुलसाय॥ ८०॥ राम रूप गुण धर्म बल, दान मान वर ज्ञान॥प्रीति रीति नृप नीतिको, बनत किये ही ध्यान८१

राम रीति अवलोकिकै, मुदित सबै नर नारि ॥
सकल कहैं अवधेशके, चिरजीवो सुत चारि ॥ ८२ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, नर नारिनके वृंद ॥
राम सुयश सब गावहीं, नित प्रति परमानंद ॥ ८३ ॥
राम दरश हित नित्य प्रति, आवत सुर नर नाग ॥
निरखि रूप गुण अतुल अति, कहैं धन्य नृपभाग ॥ ८४ ॥
मातु पिता तिय बंधु हित, पुर परिजन समुदाय ॥
रहैं सदा सानंद सब, छिन छिन सुख अधिकाय ॥ ८५ ॥

इति श्रीरामरसायन वि० वि० विवाहांत वर्णनो
नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायन ग्रन्थे
विवाहचारित्र वर्णनो नाम तृतीयोविधानः ॥ ३ ॥

दोहा–कौशल पति दशरथ तनय, राम सकल गुणधाम ॥
जाको यश तिहुँलोकमें, छायरहो अभिराम ॥ १ ॥ ॥
करत राज मर्यादयुत, रघुवर परम समर्थ ॥
समै समै साधत सबै, धर्म काम अरु अर्थ ॥ २ ॥
नीति रीति लखि रामकी, भूपति कियो विचार ॥
अब रघुवीरहि कीजिये, राजतिलक सुखसार ॥ ३ ॥
तब महीप गुरु सचिव हित, पुर परिजन बहु लोग ॥
जोरि सभा निज रुचि कही, कही सबै अति योग ॥ ४ ॥
मुदित नृपति आज्ञा दई, वेगि सजौ सब साज ॥
अविलोकौं निजनैन भरि, राम होय युवराज ॥ ५ ॥

चौ० भूप वचन सुनि सब हुलसाये ❀ वेगि सचिव शुभ साज सजाये॥
रचना भई विचित्र अपारा ❀ कौशलपुर नृप सदन मझारा६॥
सुनि रघुवर कर तिलक प्रसंगा ❀ सकल मातु हिय बढी उमंगा ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा ❀ करहिं दान मुद विविध विचित्रा ७
अपर मातु बहु वित्त लुटावैं ❀ राम तिलक लखिबे हुलसावैं ॥

पुर नर नारि अमित हिय हरषे ❀ देव वृंद मनहीं मन करषे ॥ ८ ॥
रघुवीरहि नृप निकट बुलाई ❀ कहि रुचि राजनीति समुझाई ॥
पुनि गुरु कनकभवन मधि आये ❀ सिय रामहि संयम करवाये ९ ॥
मुदित सकल साजें सब साजा ❀ प्रात होय रघुवर युवराजा ॥
सीता लषण हीय सुख भारी ❀ परमानंद सबै नरनारी ॥ १० ॥
कोउ न कछू देव गति जानी ❀ सब निज निज स्वारथ मति ठानी॥
है यक भरत मातकी दासी ❀ नाम मंथरा तिहि मति नासी ११॥
सो कैकेयीकी बुधि भोरी ❀ कपट कथा कहि करी ठगोरी ॥
दासी वचन मानि कै रानी ❀ कियो मान बहु कुमति सुठानी १२
लखि तिय मान भूप अकुलाये ❀ भावी वश विचार नहिं लाये ॥
राम शपथ करि कही नृपाला ❀ कहौ प्रिया सो करौं उताला १३॥
राम शपथ संयुत नृप वानी ❀ सुनि कैकयी अधिक हरषानी ॥
जानी अब न तजै प्रण राजा ❀ भयो समस्त सिद्ध निज काजा १४
बोली मो अभिलाष जु कीजे ❀ द्वै वर देन कहे सो दीजे ॥
सुनि नृप कही वेगि किन भाषौ ❀ इती बात हित इमि मन माषौ १५
तब तिय कही एक यह दीजे ❀ भरतहि राजतिलक वर कीजे ॥
द्वितिय राम मुनि वेष बनाई ❀ चौदह वर्ष वसैं वन जाई॥१६ ॥
रानी वचन सुनत महिपाला ❀ गिरे भूमिहै निपट विहाला ॥
लखि नृपदशा नारि झहरानी ❀ कही बहोरि विविध कटुवानी १७
सुनि महीप धीरज उर लाई ❀ तियहि अनेक भाँति समुझाई ॥
नहिं मानी तब नृप दृढ़ जानी ❀ अब मम मृत्यु आयनगिचानी १८
पुनि मूर्छित ह्वै दशरथ भूपा ❀ धरणी परे सु विहवल रूपा ॥
प्राण कंठगत कौशलराई ❀ बिलपतही सब रैनि बिताई १९॥
इत सब पुर परिजन नरनारी ❀ रामतिलक हित करहिं तयारी ॥
सो न भेद कछु काहु जनायो ❀ कहैं सकल अब औसर आयो२०
ताछिन कीनो सचिव विचारा ❀ जगे न भूप भई बहु वारा ॥
तबै सुमंत द्वारपर जाई ❀ दासी टेरि विनय करवाई ॥२१ ॥
सुनि कैकयी सुमंत बुलाई ❀ बोली इत आनहु रघुराई ॥

चकित सचिव नृपदशा निहारी ❀ भो अनर्थ कछु हीय विचारी२२
पाय राय रुख वेगि सिधाये ❀ रथ चढ़ाय रामहि लै आये ॥
लखि पितुगति रघुवर अकुलाने ॥ धाय भूप चरणन लपटाने २३॥
नृपहि सकल तन मन सुधि भूली ❀ पुत्र वियोग शूल हिय हूली॥
सो विलोकि मातहि अकुलाई ❀ पितु दुखहित बूझो रघुराई २४॥
निठुर हृदय कैकयी कराला ❀ कही कथा सब अमित उताला ॥
पुनि बोली नृप दई रजाई ❀ भयवश कहि न सकत रघुराई२५ ॥

सो०—मात वचन सुनि राम, हिय हरषे परषे सकल ॥
कहे बैन सुखधाम, पितु आज्ञा मैं शिरधरी ॥ २६ ॥
यों कहि गहि पितु पाय, कहो तात दुख त्यागिये ॥
भरतहि वेगि बुलाय, राजतिलक तिन कीजिये ॥ २७ ॥
तात इती लघुबात, हेत शोक इहि विधि कियो ॥
हौं अबहीं वन जात, आशिष दीजे मुदित मन ॥ २८ ॥
परी वचन धुनि कान, पहिचानी वाणी कछू ॥
नृपति चेत उर आन, निरखे नैन उघारि तब ॥ २९ ॥
उठि महीप सुत प्यार, अंक लगाये रामको ॥
चली दृगन जलधार, मुखते कढ़े न बैन कछु ॥ ३० ॥

दोहा—राम निरखि पितु मोहवश, बहु विधि धीरज दीन ॥
मातहि मिलि आऊं अबै, यो कहि गमन सुकीन ॥ ३१ ॥
राम गमन लखि अवधपति, विलपत भये अचेत ॥
परे मौन महि छिनहि छिन, दीह उसास न लेत ॥ ३२ ॥
देखि सुमंत नृपाल गति, भरे नैन दुहुँ नीर ॥
कैकेयी प्रति जोरि कर, बोले बैन सुधीर ॥ ३३ ॥
महरानी हठ त्यागि अब, यतन कीजिये सोय ।
राम भरत नृप रावरो, जिहि विधि सब भल होय ॥ ३४ ॥
सुनि बोली दृढ कैकयी, हौं जु कही दुहुँ बात ॥
भली बुरी कछु होय पै, सोई मोहिं सुहात ॥ ३५ ॥

पयंगम–छंद ।

कैकेयी मति देखि सचिव चक्रित भयो ॥ रही न ऐसी रानि काह कीनो नयो ॥ आई सुरति सुमंत हिये मुनि बातकी ॥ सुनी कंडु मुनि कथित मंथरा घातकी ॥ ३६ ॥ तब सुमंत कर जोरि विलखि रानिहि कही ॥ जानि पैरे कछु आज मंथरा मतिगही ॥ हैराउरिरिपु याहि चेरि जनि जानहू ॥ याकी गति सब कहहुँ सत्यकरि मानहू ॥ ३७ ॥ एक समै तवतात अहेर विनोदमें ॥ मृगमारो वर हेरि लियो निजगोदमें ॥ ताहि देखि मृग नारि विकल रोवन लगी ॥ पतिवियोग दुखपाय प्राण खोवन लगी ॥ ३८ ॥ मृगीमात सुनि रुदन सुता ढिग धाय कै ॥ आय सुनो तिहि मरन गिरी मुरझाय कै ॥ पुनि उठि पुत्रिहि धीर दई समुझाय कै ॥ कही अबहिं तुव कंत सुदेहुँ जिवाय कै ॥ ३९ ॥ यौं कहि धाई वेगि गई नृप पाससो ॥ बोली बैन अधीन सुदीन हिराससो ॥ दाया करि नरनाथ मृगा मुहिं दीजिये ॥ मैं इहि करहुँ सजीव इतो यश लीजिये ॥४०॥ सुनि नरेश मुसक्याय कही तू ईश है॥सत्य चारि भुज प्रकट शृंग पै शीशहै ॥ बोली तबहि रिसाय भूप मैं यक्षिणी ॥ और मृगी सम नाहिं शक्ति मुहिं रक्षिणी ॥ ४१ ॥ है यह मृग जामात यक्ष मृगतनु धरो ॥ विचरत विपिन निशंक तबै तुव कर मरो ॥ यौं सुनि केकय भूप घात अनुमानिकै ॥ औचक ताहि कृपाणहनी कर तानिकै ॥ ४२ ॥ मरत कही रे भूप जान मम बात को ॥ हौंहू लैहौं प्राण सुतुव जामात को ॥ यौं प्रण करि तनु त्यागि दास गृह जाय कै ॥ जनमि मंथरा भई चेरि तुव आय कै ॥ ४३ ॥ सो अब औसर पाय करी यह घात है ॥ दीनो भेद बताय सत्य सब बात है ॥ याते तिहिकी सीख न उर बिच धारिये ॥ सकल शुभाशुभकाज सुहीय विचारिये ॥ ४४ ॥ सुनि सुमंतके बैन कैकेयी चुप रही ॥ निरखि सचिव दृढ कीन सत्य भावी वही ॥ हेरि भूप भरिनैन बैन बोलत भये ॥ भली चेरि सिख मानि प्राण पतिके लये ॥ ४५ ॥

पद्धरीछंद ।

यौं कहि सुमंत हियह्वै हिरास ॥ लीनी अधीर जिय दीह श्वास ॥
तिहि समय भूप दुहुँ खोलि नैन ॥ हासीय राम्र बोले सुबैन ॥ ४६ ॥
जब लखो सचिव कछु नृपहिचेत ॥ तब कहे बैन सविनय सहेत ॥
राजाधिराज वर ज्ञान मान ॥ कीजे विचार सम समय मान ॥ ४७॥
नृपनीति रीति युत होत धर्म ॥ सो धर्म काह जिहिहो अकर्म ॥
भूपालधर्म यह है सदाय ॥ राखै प्रजाहि आनँद बढाय ॥ ४८ ॥ इहि
भाँति अमित सिख सचिव दीन ॥ नृप धर्मपाल उत्तर नदीन ॥ लखि
प्रभु हि सोच वश बहु अधीर ॥ अतिही सुमंत हिय बढत पीर ॥४९
पुनि पुनि सुमंत बहु मंत्र देत ॥ नृप रटतराम छिन छिन अचेत ॥
तब सचिव मौन गहि भूपपास ॥ बैठो उदास हिय ह्वै हिरास ॥५०॥

चौ०-यह चरचा सब नगर मँझारी ❀ फैली चहुँ बिलपैं नर नारी ॥
राजमहल कोलाहल भारी ❀ सकल देहिं कैकेयिहि गारी५१॥
उत रघुवीर मात ढिग जाई ❀ युग पद गहि वर विनय सुनाई॥
कौशल्या सुत अंक लगाई ❀ बोली वचन विकल बिलखाई५२
हा सुंदर जीवन वर प्यारे ❀ कित ह्वै चले नैन ते न्यारे ॥
हा नृप सुवन मनोहर ललना ❀ तुमबिनपरै मोहिं छिनकलना५३
हा रंगालय विहरणशीला ❀ मित्र हृदय रंजन कृतलीला ॥
हा मंदस्मित सुखमा सागर ❀ हा प्राणेश रूप गुण आगर५४॥
हा अभिराम श्याम रघुनंदन ❀ हा सुमित्र हृदयागर चंदन ॥
हा रघुवंश सुवंश दिवाकर ❀ हा विरहातप शमन सुधाकर५५
हा मम सुवन हाय नृप वारे ❀ हा पुर परिजन प्राण अधारे ॥
हा सनेह रज बंधन कर्ता ❀ हा प्रवीन सुंदर सुख भर्ता ५६॥
इमि कौशला रुदन करि भारी ❀ विकल भई सुत वदन निहारी॥
नृप तिय सुनि विलपति हैं सारी ❀ आई बहु कौशलपुर नारी ५७॥
सो सुनि कनक भवन ते सीता ❀ अंतरपथ तहँ गई सभीता ॥
देखि दशा सिय हिय अकुलाई ❀ गिरिमात चरणन परधाई॥५८॥
राम मात सिय अंक लगाई ❀ कहि मृदु बैन सुधीर धराई ॥

पुनि कौशला वधू गति जानी ❀ बोली सुतहि मनोहर बानी॥५९
तात तिहारे संग जानकी ❀ दृढधारी निज हीय जानकी ॥
जो अब उचित होय रघुलाला ❀ सो सिष देहुँ सियहि इहिकाला६०

सोरठा–सुनि बोले रघुचंद, कानन अमित कलेशहैं ॥
यातै इत सानंद, तुव पद सेवैं जनकजा ॥ ६१ ॥

चौ०–सुनि सुत वचन वधुहि उर लाई ❀ भवन रहन हित बहु समुझाई
तब सिय हीय अधिक अकुलाई ❀ बोली विकल सकोच विहाई ६२॥

दोहा–धर्मचारिनी तियनकी, गति है पति सुत ज्ञात ॥
तीन विहीन चतुर्थ नहिं, अवलंबन यह ख्यात ॥६३ ॥
याते हौं प्रण सत्य करि, कहौं शपथ मय बैन ॥
नाथ मोहिं तजि जाहिं जो, तौ मम प्राण रहैं न ॥ ६४ ॥
सत्य प्रेम गुणि सीयको, सकुचि कही रघुनाथ ॥
जननी कहौ विदेहजा, चलैं विपिन मम साथ ॥ ६५ ॥
सुनि पति आयसु जानकी, परमानंद अघाय ॥
गहे चरण पति मातके, सो लीनी उर लाय ॥ ६६ ॥

चौ०–ताही छिनसुनि लछमनधाये ❀ अतिहिय शोकराम ढिगआये॥
नाय माथ बूझो वन कारन ❀ रघुवर कीनो सकल उचारन॥६७॥
सुनतहि भयो क्रोध अति भारी ❀ बोले लषण वीर धनुधारी ॥
नाथ सत्य जानी यह बाता ❀ करी अनीति दोउ पितु माता ६८

घनाक्षरी कवित्त ।

आजलों न ऐसी कोऊ कीनी जो नृपाल करैं, रीति रघुवंशिन की सकल मिटावैं हैं ॥ बुद्धि सब नाशी अति जरठ भये हैं अब काम वश ह्वैकै तियसीख उरलावै हैं ॥ रसिकविहारी किमि सत्य व्रतधारी भूप राजदैन भाषो और वनहिं पठावै हैं ॥ याते रघुराज राजगादी गहि बैठौ फेरि देखैं तात मात भ्रात कैसे तौ उठावैंहैं ॥६९॥

सो०–सुनि सुबंधुके बैन, कही धीर रघुवीर तब ॥
लषण धर्म यह है न, पितु आज्ञा किमि त्यागिये ॥७० ॥

घनाक्षरी कवित्त।

गुरु पितु मात वृद्ध स्वामी नृप आयसु जो होय सो अनंद मानि माथे धरि लीजिये ॥ कामक्रोध लोभ मोह काहू वशभाषैं बैन तोऊ तिन दोषनमें चित्त नहिं दीजिये ॥ रसिकविहारी सुनौ सीख या हमारी बंधु निज दुख भारी देखि नेकहू न खीजिये ॥ परम सुधर्म सत कर्म व्रत सत्य येही आपतें बड़ेनकी न आज्ञा भंग कीजिये ॥ ७१ ॥

दोहा—राम वचन सुनिकै लषण, कही क्रोधवश बात ॥
ज्ञान रावरो या समै, मोहिं न रंच सुहात ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

बैठो राजगादी नाथ लीजे धनुबान हाथ दास हौं तिहारे साथ देखिये लरतको ॥ तात बाँधि डारौं मात गहिकै निकारौं सैन सकल सँहारौं लखौं सामुहे अरतको ॥ रसिकबिहारी धनुधारी या विचारी काह ऐसो वीर भारी वनचारी यौं करतको ॥ आवें यमराज देवराज तौ न पावें राज हेरौं फेरि होवें को सहायक भरतको ॥ ७३ ॥ धरम यही है सत करम यही है ज्ञानपरम यही है सुख शत्रुनको मोड़िये ॥ तात मात भ्रात जात पात हित मीत कोऊ करहि अनीत लाज ताकी सब तोड़िये ॥ रसिकबिहारी छल बलको न दोष कछू साधिये सुकाज औ कलेश अंग ओडिये । वनिता वसुंधरा बडाई वित्त वीरताई वीर रघुवीर येते कैसहू न छोडिये ॥ ७४ ॥ लैबो राज साजको दिढैबो न्याय काजको सुदैबो दान येही सदा आपनो करम है ॥ वैरिनको घालिबो औ पालिबो सुदीननको युद्धमें निरुद्ध सत्य संतत परम है ॥ रसिकबिहारी राजगादी हठि बैठें वीर यामें रघुवीर कहा काहूकी शरमहै॥ त्यागि धनुबाण औ कृपाण तपस्वी है जाय डोलै वन ऐसो नाहिं क्षत्रीको धरम है ॥ ७५ ॥ धनते सुधर्म होवै धनते सुकर्म होवै धनते सुयश लोक धन ही को काज है ॥ तात मात भ्रात हित पुत्र औ कलत्र लखौ रसिकबिहारी सबै धनको

समाज है ॥ होवै रूपमान गुणमान कुलमान तोऊ धन विन कोऊ ताकी राखत न लाज है ॥ कैस हू निकाम धनमान सो प्रधान हेरौ धन है समस्त मूल धन मूल राज है ॥ ७६ ॥

दोहा—सो लघु राज न कोउ तजै, यह तौ कौशल राज ॥
हौं नहिं त्यागन देउँगो, तुमैं राज रघुराज ॥ ७७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मारि मारि बाणन कृपाणन ते झारि झारि मान बलवाननके प्राणन नशावैंगे ॥ भूरि भानुवंशी चंद्रवंशी वर वीरनके झुंड झुंड भारी रुंड मुंड माहि छावैंगे ॥ क्षत्री छत्रधारी क्षोणिपालनके शोणितसे कुंडभरि सकल दिशान क्षिति छावैंगे ॥ रसिकविहारी रघुराज सब साधौ काज जियत हमारे राज भरत न पावैंगे ॥ ७८ बाणन विदारि सैन सकल संहारौं अबै गहिके कृपाण तात मात दुहुँ मारौं मैं॥ भरत समेत शत्रुशाल दलिडारौं वेगि केकय नरेशको सुदेशतें निकारौं मैं॥ सुर नर नाग करैं कोऊ शत्रु पक्ष तिनैं करिकै विपक्ष तिहुँ लोक ते उजारौं मैं॥ रसिकविहारी होय आयसु तिहारी नेक, फेरि वर वीरनकी वीरता निहारौं मैं ॥ ७९ ॥

दोहा—पुनि बोले रघुवर लषण, उर आनौ अब तोष ॥
रोष विवश अनुचित किये, होत अयश अरु दोष ॥
कही लषण सुनि नाथ हौं, सत्य कहौं यह बात ॥८०॥
राज लीजिये कैसहू, कछू न दोष लगात ॥ ८१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

छलमें न दोष कलबलमें न दोष मंत्रतंत्रमें न दोष विष यंत्रमेंनदोषहै॥ तातके न मारे दोष मातके न मारे दोष भ्रातके न मारे दोष दोषमें न दोषहै॥ मित्र पुत्र कुटुम कलत्रके न मारे दोष धर्मकर्म सकल निवारे हू न दोष है ॥ रसिकविहारी काज साधौ रघुराज राज राज राज लेवे हेत काहूमैं न दोष है ॥ ८२ ॥ एक नृप घालैं तौं अनेक नृप पालैं एक भ्रातहि नशावैं बहु भ्रातन बसावैंगे ॥ एक मात मारैं तो अनेक मात ज्यावैं एक अयश उठावैं तो अनेक यश पावैंगे ॥

रसिकविहारी नेक न्यायते विचारो नाथ रीति रावरेको हम काह स-
मुझावैंगे ॥ धरम जिते हैं तिते पातक न यामें जो न दोऊ तो समा-
न पाप पुण्य होय जावैंगे ॥ ८३ ॥

दोहा—यौं कहि बोले लषण पुनि, राम चरण शिरनाय ॥
नाथ दोष जनि कीजिये, दीजेमोहिं रजाय ॥ ८४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

धर्म नहिं जानौं औ अधर्म नहिं जानौं रंच सत्य नहिं जानौं औ
असत्य नहिं जानौं हौं ॥ तातको न जानौं मात भ्रातको न जानौं गु
रु ज्ञातिको न जानौं जात पाँतको न जानौं हौं॥ देवको न जानौं औ
अदेवको न जानौं लेव देवको न जानौं सेव भेवको न जानौं हौं ॥
रसिकविहारी करौं शपथ तिहारी नाथ हौं तौ एक रावरी रजाय दृढ़
जानौं हौं ॥ ८५ ॥

दोहा—यौंहीं अमित प्रकार बहु, कही लषण रिसठान ॥
वाल्मीकि आदिक विविध, ग्रंथन माहिं प्रमान ॥ ८६ ॥

प्रमाण ॥ वाल्मीकीये अयोध्याकांडे ॥ सर्ग ॥ २१ ॥

श्लोक।

यावदेव न जानाति कश्चिदर्थमिमं नरः ॥ तावदेव मया सार्द्धमा-
त्मस्थं कुरु शासनम् ॥ १ ॥ मया पार्श्वे सधनुषा तव गुप्तस्य राघव॥
कः समर्थोऽधिकं कर्त्तुं कृतांतस्येव तिष्ठतः ॥ २ ॥ निर्मनुष्यामिमां
सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ ॥ करिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैर्यदि स्थास्यति
विप्रिये ॥३॥ भरतस्याथ पक्ष्योवायो वास्य हितमिच्छति ॥ सर्वांस्तां-
श्च वधिष्यामि मृदुर्हि परिभूयते ॥ ४ ॥ प्रोत्साहितोयं कैकेय्या संतु-
ष्टो यदि नः पिता ॥ अमित्रभूतो निःसंगं वध्यतां वध्यतामपि ॥
५ ॥ गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ॥ उत्पथं प्रतिपन्नस्य
कार्यं भवति शासनम् ॥ ६ ॥ हनिष्ये पितरं वृद्धं कैकेय्यासक्त
मानसम् ॥ कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धभावेन गर्हितम् ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ॥ २३ ॥

धर्म दोषप्रसंगेन लोकस्यानतिशंकया ॥ कथं ह्येतदसंभ्रांतस्त्व-
द्विधोवक्तु मर्हति ॥ ८ ॥ यथा ह्येवमशौंडीरं शौंडीरं क्षत्रियर्षभ ॥

किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि ॥ ९ ॥ पापयोस्ते कथं नाम तयोः शंका न विद्यते ॥ संति धर्मोपधासक्ता धर्मात्मन् किं न बुध्यसे ॥ १० ॥ कथं त्वं कर्मणाशक्तः कैकेयीवशवर्तिनः ॥ करिष्यति पितुर्वाक्यमधर्मिष्ठं विगर्हितम् ॥ ११ ॥ द्रक्ष्यंति त्वद्यदैवस्य पौरुषं पुरुषस्य च ॥ दैवमानुषयोरद्यव्यक्ताव्यक्तिर्भविष्यति ॥ ॥१२॥ अद्य मे पौरुष हतं दैवं द्रक्ष्यंति वै जनाः ॥ यैर्दैवादाहतं तेद्य दृष्टं राज्याभिषेचनम्॥ १३ ॥ लोकपालाः समस्तास्ते नाद्य रामाभिषेचनम् ॥ न च कृष्णास्त्रयो लोकाविहन्युः किं पुनः पिता ॥ १४॥ मद्बलेन विरुद्धाय न स्याद्दैवबलं तथा ॥ प्रभविष्यति दुःखाय यथोग्रं पौरुषं मम॥१५॥न शोभार्थाविमौ बाहू न धनुर्भूषणाय मे॥ न शिरा बंधनार्थाय न शराः स्तंभहेतवः ॥ १६ ॥ अमित्रमथनार्थाय सर्वमेतच्चतुष्टयम् ॥ न चाहं कामयेत्यर्थं यः स्याच्छत्रुर्मतो मम ॥ ॥१७॥ बहुभिश्चैकमत्यस्य नैकेन च बहून् जनान् ॥ विनियोक्ष्याम्यहं बाणान्नृवाजिगजमर्मसु ॥ १८ ॥ अद्य मेस्त्रप्रभावस्य प्रभावः प्रभविष्यति ॥ राज्ञश्चाप्रभुतां कर्त्तुं प्रभुत्वं च तव प्रभो॥१९॥ अद्य चंदनसारस्य केयूरामोक्षणस्य च ॥ वसूनां च विमोक्षस्य सुहृदां पालनस्य च ॥ २० ॥ अनुरूपाविमौ बाहू राम कर्म करिष्यतः ॥ आभिषेचनविघ्नस्य कर्तृणां ते निवारणे ॥ २१ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—लषण वचन सुनिकै कही, धर्मधुरंधर राम ॥
पातक लागै बंधु जिहि, करिय नहीं सो काम ॥ ८७ ॥
निज कीनी कछु होत नहिं, दैव करी सब होय ॥
याते सोई सत्यहै, प्रबल दैव रुचि जोय ॥ ८८ ॥
सुनत राम वाणी भये, लषण नैन दुहुँ लाल ॥
भौंह बंक फरके अधर, बोले बैन उताल ॥ ८९ ॥
पातक दैव दुहूँनकी, बड़ी नाथको भीति ॥
बारबार सोई कहत, यह न वीरकी रीति ॥ ९० ॥
को है पातक कित रहै, पुनि कैसो बलमान ॥

बहुरि दैव को है कहाँ, कीजे वेगि बखान ॥ ९१ ॥
कै इत दुहुँन बुलाइये, कै बताइये धाम ॥
हौं तिनते धनुबाणलै, करौं जाय संग्राम ॥ ९२ ॥
बली दैव है अबल पै, करै रुचै तिहि सोय ॥
सबल सामुहे दैवको, जात सकल बल खोय ॥ ९३ ॥
रामदासकी दासता, दैव देवता जोय ॥
अधिक न्यून सम होय सो, आज लखै सब कोय ॥९४ ॥
हौ निज बलते नाथको, करौं राज अभिषेक ॥
फेरि लखौं बलवान ह्वै, आवैं दैव अनेक ॥ ९५ ॥
धनु शर शोभा बाहुबल सफल करौं मैं आज ॥
दैव भरत नृपके अछत, नाथ होय युवराज ॥ ९६ ॥
तात भ्रात कह दैव कह, कहा धर्म कह पाप ॥
तृण समान जानो इनैं, इक रावरे प्रताप ॥ ९७ ॥
यौं कहि धनु शर साजिकै, माथ रामपद टेक ॥
कही हाथ गहि चलिय हौं, करों राज अभिषेक ॥ ९८ ॥
राम मात सिय हिय रुचे, लषण वचन तिहि काल ॥
धर्मधुरंधर राम तब, बोले अतिहि उताल ॥ ९९ ॥
लषण कही तुम प्रथम हम, जानैं नाथ रजाय ॥
तौ मम आयसु है यही, रोष तजौ सब भाय ॥ १०० ॥
लछमन राम रजाय सुनि, मौन रहे शिरनाय ॥
स्रवित वारि दुहुँ नैनते, पुनि बोले अकुलाय ॥ १०१ ॥
लाभ हानि सुख दुख समय, कीजे हृदय विचार ॥
बहुरि रजायसु दीजिये, लखि सब सारासार ॥ १०२ ॥

चौ०—बंधु विनय सुनि पुनि रघुनाथा ❀ वरणे विविध धर्म यश गाथा॥
कही लषण करगहि वरवानी ॥ ❀ तजौ रोष मम आयसु मानी १०३
सुनि बोले लछमन करजोरी ❀ भलहि नाथ पुनि विनती मोरी॥
हौहूं वन चलि हौं तुव साथा ❀ न तरु प्राण तजिहौं रघुनाथा १०४
तब रघुवर बहु विधि समुझाये ❀ लषण हृदय कछु वचन न आये॥

रामबंधु जियकी गति जानी ❀ कही चलौ धनुशर गहि पानी १०५
सुनि सौमित्र अधिक हुलसाये ❀ मोदभरे जननी ढिग आये ॥
माँगी बिदा चरण शिरनाई ❀ हरषि सुमित्रा दई रजाई ॥ १०६ ॥
अंक लगाय कही बलि ताता ❀ राम सीय तुव दुहुँ पितु माता ॥
जाहु संग सेवौ सतभाये ❀ सुनि शिर नाय लषण उठि धाये १०७
देवराचित धनुशर असि धारे ❀ तूण त्रान वर विशद अपारे ॥
विपिन गमन हित हिय हुलसायो ❀ आय रामपद शीश नवायो १०८
ताछिन भयो कुलाहल भारी ❀ नृपतिय आय जुरी तहँ सारी ॥
तब रघुवीर मात पग लागी ❀ विपिन गमन हित आयसु माँगी १०९
धर्म धुरीण सुतहि जिय जानी ❀ बोली बिकल कौशला रानी ॥
जाहु तात मुहिं भूलि नजैयो ❀ वेगि आय फिर बदन दिखैयो ११०॥
यौं कहि मात गोद सुत लीने ❀ पढि रक्षा अभिमंत्रित कीने ॥
करि अघ्रानशीश अकुलाई ❀ आयसु दई सुअंक लगाई ॥ १११॥
येही विधि सिय लषणहिं रानी ❀ करि अभिमंत्रित रक्षा ठानी ॥
उर लगाय बहु कियो विलापा ❀ दई रजाय सहित संतापा ११२॥

दोहा—सिय सासुनके पग परी, दीनी सबहि अशीश ॥
सुखसुत वित अहिवातयुत, जीवो विपुल बरीश ॥ ११३ ॥

चौ०सकल सियहि निज अंक लगाई ❀ विलपीं नैन नीर अन्हवाई॥
सीतहि मिलीं सखी पुरनारी ❀ रोवैं सब तिय निपट दुखारी ११४

दोहा—इहि विधि सिय रघुवर लषण,सहित सकल रनिवास ॥
करुणा प्रेम वियोग वश, निज निज होय हिरास ॥ ११५ ॥
मातु सुमित्रा कौशला, विकल भई जिहि भांति ॥
ताछिन जो गति दुहुँनकी, सो कछु कही न जाति ॥ ११६ ॥
तब रघुवीर सुधीर धरि, लछमन सीय समेत ॥
सकल मातु पग नाय शिर, आये द्वार निकेत ॥ ११७॥
चहुँ दिशि कौशल नगरमें, मचो रुदनको शोर ॥
दुखी भये सिय सहित सुनि, दोऊ राज किशोर ॥ ११८ ॥
सखा वृन्द ताही समै, विपिन गमनको हाल ॥
सुनि विलपत धाये सबै, आये अतिहि उताल ॥ ११९ ॥

तिनहिं निरखि दुहुँ बंधुवर, भरि आये जलनैन ॥
सो सबही लपटाय उर, कहे नेहमय बैन ॥ १२० ॥
भोजन वसन विनोद मुद, संग भये सब काज ॥
जात अकेले विपिनको, यह न उचित रघुराज ॥ १२१ ॥
चलैं संग सब रावरे, अवधरहैं किहि काम ॥
तुम विन प्राण न मानि हैं, याते तजौ न श्याम ॥ १२२ ॥
सुनि सखानके वैन वर, करि सनेह रघुवीर ॥
नीति रीति बहु भाँति कहि, तिनहि देत बहु धीर ॥ १२३ ॥
ते सब विरह विहाल ह्वै, कहन लगे रघुराय ॥
भये निठुर इमि मीत किमि, गमनतहाय विहाय ॥ १२४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

का करैं समाधि साधि का करैं विराग याग का करैं अनेक योग भोगहू करैं सुकाह ॥ का करैं समस्त वेद शास्त्र औ पुराण देख कोटि जन्मलौं पढ़े मिले तऊ कछू न थाह ॥ राज्य लै कहा करैं सुरेश औ नरेश ह्वै न चाहिये कछू सुदुःख होत लोक लाज माह ॥ सात द्वीप खंड नौ तिलोक संपदा अपार लै कहा सुकीजिये मिलौ जु आप सीयनाह ॥ १२५ ॥ हम सब तुव मुख लखि मुदित रहत निशि दिन छिन तजि नहिं पलक परत ॥ बिन दरशन तन मन थिर न रहत छबि निरखत हठि दृग अरनि अरत ॥ कबहुँक जब ललन तनक बिलगत तब यक घरि बहु युग सरिस भरत ॥ नित हिलत मिलत धरि दुहुँ गल भुज तिहि सनमुख सब जग सुख निदरत ॥ १२६ ॥ लागी उर विषम वियोगकी जु आगी अति जागी ताहि नीर ते सँयोगके सिराइयो ॥ हीय ना धरैगो धीर बाढी है अपार पीर लाल रघुवीर नेक दाया चित लाइयो ॥ रसिक विहारी दीन छीन रावरे विहीन सुरति करी जो श्याम बिसरि न जाइयो ॥ ये हो रघुनंदन सुजान प्राणप्यारे मीत वेगही हमारी जियजरनि बुझाइयो ॥ १२७ ॥ सौंह करि भाषैं कोउ प्राण नहिं राखैं जोपै लाडिले सलोने यार तुम बिसरायहौ ॥ कोऊ ना लखाय या

कलेशको हरैया लाल सकल सखान एक जीवन उपायहौ ॥ तनमन प्राणनकी ताप तब दूर ह्वैहै जब निज आनन मयंक दरशाय हौ ॥ ये हो रघुनंदन पियारे मति सांची कहौ कब या हमारी जियजरनि बुझायहौ ॥ १२८ ॥

दोहा–सखा वृन्द इहि विधि विकल, विलपत विरह विहाल ॥
कर जोरत पग परत कहि, तजौ नहीं रघुलाल ॥ १२९॥
बालसखनकी प्रीतवश, विवश भये रघुवीर ॥
धाय धाय सब अंक गहि, मिलत चलत दृग नीर॥१३०॥
लखि सखानकी विकलता, रघुवर भये अधीर ॥
पुनि कुसमय अनुमानिकै, उर धारी कछु धीर ॥ १३१ ॥
उर लगाय समुझाय बहु, सबही धीर धराय ॥
पुनि पितु ढिग सिय लषण युत, वेगि चले रघुराय॥१३२॥
पिता निकट सिय लषण युत, जात पयादे राम ॥
सो विलोकि बिलखात सब, कहैं आज विधि वाम१३३॥
पुरवासी नर नारि सब, वृद्ध युवा अरु बाल ॥
रुदन करत धाये विकल, आये अतिहि विहाल १३४॥
भई भीर भारी तबै, राजसदन चहुँ ओर ॥
हाय राम सिय लषण यह, रुदन शोर अति घोर ॥ १३५ ॥
ताछिन सीता लषण युत, राम गये पितु पास ॥
करि प्रणाम पितु चरण गहि, बोले सहित हुलास ॥१३६॥
तात मोहिं अब गमनकी, दीजे वेगि रजाय ॥
वन मनु वर्ष वितायकै, लखौं चरण पुनि आय ॥ १३७ ॥
सुनत रामके वचन नृप, उठे अतिहि अकुलाय ॥
पुत्र वधू युत पुत्र दुहुँ, लिये गोद बैठाय ॥ १३८ ॥
लषण सीय पुर रहन हित, कहे भूप बहु बैन ॥
रुख लखि जानी राम बिन, ये दुहुँ भौन रहैंन ॥ १३९ ॥
सो गुणि दशरथ नेह वश, विकल गिरे मुरझाय ॥
हाय राम सिय लषमण इमि, कहैं विपुल विलपाय ॥१४०॥

सुनि बैन रानि बोली रिसाय ॥ तुव प्राण जायँ अथवा रहाय ॥
इहि समै मोहिं कछु नहिं सुहात ॥ दीजे बताय वेगै सुबात॥१५६॥
तब विवश भूप है अति अधीर ॥ बोले घरीकद्वै धरहु धीर ॥
अबहीं सुद्वार लगजाय आय ॥ पुनि भेद देहुँ वह सब बताय१५७॥
यौं कहि नरेश द्रुत द्वार आय ॥ गवने तुरंग वेगहि सजाय ॥
मुनि पास जाय व्याकुल नृपाल ॥ पद वंदि कहो निज सकल हाल१५८
सुनि मुनि समस्त बोले सुबैन ॥ विन दिये दंड तिय जिय तजैन ॥
याते महीप गृह वेगि जाय ॥ ताडौ डराय आपहि चुपाय ॥१५९॥
सुनि वचन मानिकै मनुजनाथ ॥ आये सुभौन लैकसहि हाथ ॥
बोले तियाहि सुनि लेहु भेद ॥ आई उताल तजि सकल खेद१६०॥
पुनि कसा हेरि कर भीति मानि ॥ बहु विनै कीन तिय जोरि पानि ॥
तब भूप मष्ट करि प्रातकाल ॥ दीनी पठाय पितु गृह उताल॥१६१॥
पुनि तिहि न भूप स्वीकार कीन ॥ केकयनरेश तिय त्यागि दीन ॥
यौं कहि सुमंत रानिहि बहोरि॥ बोले सुसीख यह सुनहु मोरि१६२॥
हठ सकल छोड़ि वर और लेहु ॥ सब हीय अमित आनंद देहु ॥
नातर कछूक जो करहु आन ॥ तौ सुगति होय जननी समान१६३॥

दोहा—सुनि सुमंत के वचन बहु, मनही मन रिस छाय ॥
उत्तर दियो न रंच कछु, हेरी नैन चढाय ॥ १६४ ॥
पुनि सुमंत महिपाल सों, बोले बैन गँभीर ॥
नाथ तिया जानैं नहीं, नेक पराई पीर ॥ १६५ ॥
जिहि विधि केकय भूपसों, हठकीनी वह नारि ॥
भरत मात सोई करी, लीजे हीय विचारि ॥ १६६ ॥
सुनि वर वचन सुमंतके, नृपहिय रुचे सुदेश ॥
हाय राम कहि चुपरहे, धर्मपाल अवधेश ॥ १६७ ॥
तब रघुवर कर जोरि पुनि, बोले हिय हुलसाय ॥
हौं उताल वन जाउँ अब, दीजे तात रजाय ॥ १६८ ॥
राम वचन सुनि अवध पति, मौन रहे अकुलाय ॥
सिया सहित दुहुँ बंधुको, लीने हृदय लगाय ॥ १६९ ॥

निरखि भूप गति कैकयी, उठी कुपित झहराय ॥
वेगि लाय मुनि साज सब, धरो राम ढिग आय ॥ १७० ॥

चौ०—तब रघुवीर साज मुनि सारे ❀ तूण कृपाण बाण धनुधारे ॥
गहि पितु मातु चरण रघुनाथा ❀ चले मुदित सिय लछमन साथा ॥
द्वार पधारि सुयज्ञ बुलाये ❀ दिये दान बहु द्विजन सुहाये ॥
पुनि बोले करगहि रघुवीरा ❀ गुरु वशिष्ठ सुत तुम मतिधीरा ॥
ये मम सखा प्राण ते प्यारे ❀ हौं इन किये अधीन तिहारे ॥
सुनि सुयज्ञ बोले दृढ़ जानौं ❀ मैं नित लषण सरिस सब मानौं
सुनि सुयज्ञ वाणी रघुराई ❀ लिये प्रेम भरि अंक लगाई ॥
ताछिन भयो शोर चहुँ भारी ❀ राम चले सब कहैं पुकारी १७४
राम गमन लखि नृप अकुलाई ❀ सचिवहि कहे वचन बिलपाई॥
स्यंदन साजि तिहूँ बैठारौ ❀ राम संग तुम वेगि सिधारौ १७५
सुनि नृप वचन सुमंत सिधाये ❀ रथ सजि वेगि राम ढिग लाये ॥
तब तिहुँ गुरु द्विजपद शिर नाई ❀ स्यंदन चढ़े रजायसुपाई १७६
चले राम सँग पुर नर नारी ❀ आरत रुदन शोर चहुँ भारी ॥
ताछिन अवध नगर कर शोका ❀ सो जन जानै जिन अवलोका १७७

घनाक्षरी कवित्त।

पाय पितु आयसु बनाय वेष तापसको बंधु सिय संग राम वनहि सिधारे हैं ॥ ताछिन भो विरह विलापको कलाप महा जेते जड चेतन ते जातना निहारे हैं ॥ भये हैं विहाल सिय रामके वियोग सबै सरसिज वृन्द सूखे मानो हिममारे हैं ॥ रसिकविहारी नृप कौशला सुमित्रा आदि बोलत विकल हाय प्यारे हाय प्यारे हैं ॥ १७८ ॥

दोहा—मात सुमित्रा कौशला, सहित सकल रनिवास ॥
विरह विकल विलपत विपुल, समुझि राम वनवास॥१७९॥
गद गद गर जलनैन भरि, कहति सुमित्रा बैन ॥
अति कठोर मेरो हियो, ऐसहु दुःख फटै न ॥ १८० ॥

चित्र लिखे कपि देखिकै, जो सिय भौंन डराति ॥
पुत्र वधू प्यारी सु क्यों, वन वसिहैं दिन राति ॥ १८१ ॥
पलँग गोद तजि पालना, डगहू अनत न जात ॥
ते मेरे वारे सुक्यों, सहिहैं आतप वात ॥ १८२ ॥
कहति सुमित्रा नैन भरि, विकल वचन ह्वै दीन ॥
हाय कुटिल मति कैकयी, अवध अनाथ जुकीन ॥१८३॥
रे विधि लेत न प्राण क्यौं, कहा कहौं अब तोहिं ॥
राम लषण वन जात सखि, जियत रही धृग मोहिं॥१८४॥
खग मृग गो गज वाजि सब, विलपत राम विहीन ॥
जे जड चेतन ते भये, विरह विवश बहुछीन ॥१८५॥
कनक पिंजरनमें कहैं, शुक सारिका बिहाल ॥
करै राम सिय लषण बिन, को हमरो प्रतिपाल ॥ १८६ ॥
सो०–इहि विधि इत सब मात, दासी दास अनेक युत ॥
राम विरह बिलपात, अरु नृप दुख को कहि सकै ॥१८७
उत रघुवर रथ साथ, चले जात नर नारि बहु ॥
भो अब अवध अनाथ, कहत रुदत इमि विकल सब१८८
तब पुरवासिन राम, समुझाये बहु धीर दै ॥
काहु सुहाय न धाम, रहैं संग सब दृढ़ ठनी ॥ १८९ ॥
तमसातट विश्राम, प्रथम दिवस रघुवर कियो ॥
निरखि रैनि युग याम, गे रथ खोज दुराय तव ॥१९०॥
प्रात उठे नर नारि, रथ न लखो विलपैं विकल ॥
आरत वचन पुकारि, आये सकल सशोक पुर ॥१९१॥
गंगातीर सुठाम, शृंगवेर पुर विमल थल ॥
सचिव लषण सिय राम, द्वितिय वास कीनो तहाँ॥१९२॥
कुल निषाद गुहनाम, राम सखा आयो निरखि ॥
अंकलाय घनश्याम, मिलें ताहि सादर मुदित ॥ १९३ ॥
लषण सचिव सहुलास, उठि निषादपतिसों मिले ॥
सो सब कियो सुपास, सकल रहे सो रैनि तहँ ॥१९४ ॥
प्रात कही रघुराय, तात जाहु रथलै अवध ॥
सुनि सुमंत बिलपाय, बोले वचन विनीत अति ॥१९५॥

चौ०-मुहिं इमि नृप सिख दीन घनेरी ❀ वन दिखाय तिहुँ लावहु फेरी॥
सो पितु वचन मानि रघुनाथा अवध चलौ सिय लछमन साथा १९६
सचिव वचन सुनिकै रघुराई ❀ धर्मरीति बहु नीति बुझाई॥
तब सुमंत ह्वै निपट निरासा ❀ बोले बहुरि दीह लै श्वासा १९७॥
भूपति यहू कही बहुबारी ❀ जौं न राम आवैं प्रणधारी॥
तौ इत आनौ जनकदुलारी ❀ न तरु तजौं तनु निपट दुखारी १९८॥
सुनि सुमंत मुख तात रजाई ❀ राम जानकिहि बहु समुझाई॥
तब सिय कह मम दृढ़ प्रण येही ❀ चलौं साथ कै तजौं सुदेही १९९
ताछिन लषण पितहि कटुवानी ❀ कही अमित रिसपुनि उर आनी॥
बंधुहि वरजि सचिव सन बाता ❀ कही राम कहियो जिन ताता २००
फिरहिं न कोउ सचिव दृढ़ जानी ❀ भयो विहाल कढ़ै नहिं वानी॥
मिलि तिहुँ कहि मृदु वचन घनेरे ❀ धीरज दै सुमंत पुर फेरे २०१॥
तब निषाद रघुवर रुखपाई ❀ तिहुँ पद धोय नाव बैठाई॥
अति अनंद युत पार उतारी ❀ पुनि गमनो निजभवन सुखारी २०२

दोहा-इत रघुवर सिय लषण तिहुँ, सुरसरि मुदित अन्हाय॥
नित्यकृत्य कीने सकल, समय सरिस विधि भाय॥२०३॥
तब गंगहि कर जोरिकै, करी विनै बहु सीय॥
कही कुशल युत दीजियो, वेगि दरश रमणीय॥२०४॥
गंग देवि हौं पूजिहौं, सविध विपिन ते आय॥
मद आमिष पय अन्न फल, संयुत सुमन चढाय॥२०५॥
यौंहीं सिय सुरसरि विनय, कीनी सहित उमंग॥
गमन कियो शिरनाय तिहुँ, राम लषण सिय संग २०६॥

प्र० वाल्मीकीय अयोध्याकांडे सर्ग॥ ५५॥ श्लोक।

सुराघट सहस्रेण मांसभूतौदनेन च॥
यक्ष्ये त्वां प्रीयतां देवि पुरीं पुनरुपागताम्॥२२॥

दोहा-इहि प्रकार सिय लषण युत, रघुनंदन सुखभौन॥
तापसवेष बनायकै, कानन कीनो गौन॥२०७॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० श्रीरामवनगमन
वर्णनो नाम प्रथमोविभागः॥ १॥

दोहा—रघुनंदन सिय बंधु युत, कीने तापसवेश॥
चले मुदित गहि विपिन मग, रंच न ह्रदे कलेश॥ १॥
मगवासी रामहिं मिलैं, ते लखि होहिं अधीर॥
कहैं कहाँके कौन ये, श्याम गौर दुहुँ वीर॥ २॥
सुनैं जबै वन गमन तब, अधिक हिये बिलखाय॥
कहैं चलैं हम रावरे, संग जु होय रजाय॥ ३॥
कोऊ रघुवर संगही, होत प्रेम वश धाय॥
फेरे फिरैं न कहत हैं, हम मग देहिं बताय॥ ४॥
कोल भील सिय राम हित, लावत भेट अपार॥
कंद मूल फल फूल अरु, खग मृग मीन सिकार॥ ५॥
तिन सराहि सनमानहीं, कहि रघुवरवर बैन॥
सो सुनि सब सुख पावहीं, छबि निरखैं भरिनैन॥ ६॥
कछुक दूर सँग जात हैं, कानन पंथ बताय॥
फिरत नहीं रघुवंश मणि, तिन फेरत बरियाय॥ ७॥
याही विधि रघुवंश मणि, सीता लषण समेत॥
प्रमुदित कानन जातहैं, मगवासिन सुख देत॥ ८॥
राजकुँवर फिर फिर चितव, प्रिया बदनकी ओर॥
ह्वै अधीन मृदुवचन कहि, विनवैं सबहि निहोर॥ ९॥

घनाक्षरी कवित्त।

ये हो भूमि तजिकै कठोरता मृदुल होउ ये हो भानु सीत सबै तपन विहाय हो॥ डोलौ हो त्रिविध पौन लघुता गहो हो मग कानन गिरीशजाहु बाटते पराय हो॥ मो सँग सिधारी वन जनकदुलारी प्यारी रसिकविहारी हो सुखारी सो उपाय हो॥ होवै ना दुखारी सुकुमारी ये विदेह वारी इन हितकारी तुम सकल सहायहो॥ १०॥

दोहा—रघुनंदन सिय लषणको, मुख निरखत फिर फेर॥
सीय लषण इत श्यामके, रहैं वदन दिशि हेर॥ ११॥
सेवत हैं सिय रामको, लषण सनेह समेत॥
दंपति प्राणनते अधिक, करत लषणपर हेत॥ १२॥

इहि विधि सिय रघुवर लषण, कियो बिपिन विश्राम ॥
प्रात होत पुनि उठि चले, दिवस चढो द्वैयाम ॥ १३ ॥

दोवई छन्द ।

सिय तन चितै श्यामसुंदर वर श्रमित जानि सुकुमारी ॥
रघुनंदन मृदु वचन लषण सों कहे समय अनुसारी ॥
तात लखौ तरुछांह मनोहर तहँ बिश्राम करीजे ॥
थकित भई अति जनककिशोरी अब न पंथ चित दीजे ॥ १४ ॥
लषणलाल इत उत निहारिकै इक वट विटप सुहायो ॥
सीतल सघन छाँह सुंदर शुचि ठाम अधिक मनभायो ॥
तातर जाय मृदुल पत्रनकी रचि साथरी बिछाई ॥
कियो तहां विश्राम मुदित मन सिया सहित रघुराई ॥१५ ॥
कंद मूल फल आनि लषण पुनि शीतल जल भरि लाये ॥
बंधु सिया संयुत रघुनंदन अतिरुचि भोग लगाये ॥
तामगह्वै निकसीं पुर वनिता श्याम गौर लखि जोरी ॥
प्रमुदितभई चकितसी चितवैं कहो कहांके कोरी ॥ १६ ॥
ते सब जाय सहेलिनमें निज यह चरचा जु चलाई ॥
पथिक दोय आये अति सुंदर मैं अबहीं लखि आई ॥
बैठे सखी सुभगवट छँहिया जबते मैं अविलोके ॥
तब ते जिय अकुलात अलीरी नैन रुकत नहिं रोके ॥ १७ ॥
कोधौं सखी कहां ते आये तापस वेष बनाये ॥
जाकी छवि अवलोकि सहेली कोटि अनंग लजाये ॥
कानन सुनी न नैनन देखी रूप छटा अलि ऐसी ॥
पुनि सजनी तिन संग मनोहर नवल नारि यक तैसी ॥ १८ ॥
तिनके बचन सुनत वनितनके उर अनंद अधिकायो ॥
दरशलालसा लगी घनेरी तन मन सब हुलसायो ॥
गुरुजन डीठ बचाय संगकी जुरि मिलकै सब वामा ॥
देखन चलीं श्यामसुंदरकी छटा अनूप ललामा ॥ १९ ॥
आई जहाँ रहे मनमोहन निरखि प्रीति अति बाढी ॥

चकित चित्त ह्वै रहीं नबेली मनो चित्र लिखि काढी ॥
इकटक रहीं निहारि ठगीसी भई निमिष नहिं देहीं ॥
लै उसाँस उर ससकि छबीली नैनन जल भरिलेहीं ॥ २० ॥
कोऊ रहीं चिबुक गहि अँगुरिन भई थकीसी कोऊ ॥
कोऊ कर कपोल धरि ठाढीं रहीं जकीसी कोऊ ॥
कोउ दबाय दंतन ते रसना लखैं कनौखिन दैकै ॥
कोऊ शीश हाथ दे नवला सोचैं कुँवर चितैकै ॥ २१ ॥
काहूके जिय राजकुँवरकी चितवन पैठ गईहैं ॥
भूली सकल चातुरी सुधि बुधि विह्वल दशा भईहैं ॥
काहूके उर लगी लालके नैन बाणकी गाँसी ॥
काहूके गर परी कठिन यह श्याम प्रीतिकी फाँसी ॥ २२ ॥
काहूके वेणी बँद छूटे भूली सो न सुधारै ॥
काहूके सारी शिर सरकी सोऊ कछु न सम्हारै ॥
काहूकी आँखिनते अतिहीं आंसुन धार बही है ॥
काहूकी गति भई बावरी धीर न रंच रही है ॥ २३ ॥
कोऊ लाज त्यागि रघुवरको रूप निहारि रहीहै ॥
कोऊ कछु सकुचाय प्रगट पै हिय बिच जात दही है ॥
कोऊ सुरति सम्हारि हेरि छबि पुनि अधीर ह्वै जाहीं ॥
कहि न सकैं कछु डर सकोच ते मनहीं मन बिलखाहीं ॥ २४ ॥
कोऊ कहैं सखी ये को हैं आये इतै कहाँ ते ॥
जैहैं कितै किधौं अबरैहैं ऐहैं फेरि यहाँते ॥
कोऊ कहैं चलौ ढिग चलिये भेद सबै मिलि जैहैं ॥
कोऊ कहैं अलीरी हम तौ नैननको फल लैहैं ॥ २५ ॥
ताछिन राजकुँवर सिय ढिग ते सहजहिं उठे प्रवीने ॥
निकटहि कछुक दूरि चलि विरहने लगे बिपिन चित दीने ॥
रहो कछूक दिवस चहुँघाई लागै समै सुहायो ॥
लषणलाल वर लै धनु शर कर बन अहेर जिय लायो ॥२६ ॥

लखि अकेलि सकुचति ठुठकति तिय जुरि सब सिय ढिग जाई ॥
परि परि पाँय आय मिलि बैठीं बोलि न सकैं सकाई ॥
दुहुँ करजोरि धीर धरि इक तिय कहत भई मृदुबानी ॥
हे स्वामिनि कछु पूछन चाहैं हम हैं नारि अयानी ॥ २७ ॥
बनवासिनी गमारि नारि हम नीति अनीति न जानैं ॥
चूक क्षमा कीजो अजानको कोऊ बिलग न मानैं ॥
मधुर वचन बोलीं सिय तिनसों तुम मम प्राणपियारी ॥
बूझौ कहा कहति हौ नागरि का अभिलाष तिहारी ॥ २८ ॥
बोलीं ग्रामबधू प्रमुदित ह्वै द्वै तापस ये को हैं ॥
जिनकी छटा निहारि अनूपम कोटिकाम रतिमोहैं ॥
जैहैं कहाँ कहाँते आये येहैं कौन तिहारे ॥
कहा नाम कहँ ग्राम धाम कहँ हैं किहिके दुहुँ बारे ॥ २९ ॥
कहा तिहारो नाम छबीली कौन हेत वन आई ॥
हमहि अयानी जानि सयानी कहिये सकल बुझाई ॥
ग्रामबधुनके वचन सुनतहीं जनकसुता मुसकानी ॥
करि सकोच शिरनाय तियनते बोलीं मधुर सुबानी ॥ ३० ॥
नाम अयोध्यानगर तहाँके दशरथ नृपति सुने हैं ॥
श्याम गौर द्वै राजकुँवर वर सखि तिनके सुत येहैं ॥
इनकी मातु कौशला रानी सो हैं सासु हमारी ॥
अरु ये बंधु जु देवर गोरे लछमन नाम पियारी ॥ ३१ ॥
सीता नाम हमारो सजनी पिता जनक नृप ख्याता ॥
जिनकी पटरानी जु सुनैना सोईहैं मम माता ॥
सकल कथा वरणी वैदेही ग्रामवधुन समुझाई ॥
त्यागि सकल कुल राज काज बहु जिहि कारण बन आई ॥ ३२ ॥
सुनि चरचा सब ग्राम वधुनके लोचन जल भरि आये ॥
गदगद कंठ परस्पर लखिकै कहैं वचन बिलखाये ॥
कही न जाय कछू सुन सजनी बिधि गति बाम घनेरी ॥
अनुचित उचित रंच नहिं जानै करत जु मनै ठनेरी ॥ ३३ ॥

पुनि सजनी उन मात पिताको निपट कठोर हियो है ॥
जिन दोऊ सुकुमार सुवनको हठि बनवास दियो है ॥
राजकुमारि मनोहर ऐसी पुत्र वधू वर पाई ॥
कानन ताहि पठावत जियमें रंच दया नहिं आई ॥ ३४ ॥
एकै कहैं सखी नृप भोरे तिय चरित्र नहिं जाने ॥
बचन बद्ध ह्वै गये प्रथम कह होत बहुरि पछिताने ॥
एकै कहैं कुटिल कैकेयी अति मतिमंद अभागी ॥
राम लषण सिय बनहि पठाये चेरि सिखापन लागी ॥ ३५ ॥
एकै कहैं सुनौं री आली भाग आपने जागे ॥
ठई बुद्धि नृप रानिहि ऐसी हम सबके हित लागे ॥
कितै राम सिय कितै अयोध्या कित हम बिपिन निवासी ॥
विधि संयोग पुण्य पूरवले भई चरणकी दासी ॥ ३६ ॥
एकै कहैं अवधवासी सखि एकौ जियत न ह्वैहैं ।
एकै कहैं अली जड चेतन सब इन बिन जिय ख्वैहैं ॥
एकै कहैं भटू जो इनको विधि काननै पठाये ।
तौ सजनी वे सदन मनोहर जगमें वृथा बनाये ॥ ३७ ॥
एकै कहैं सखी री जो ये कंद मूल फल खाहीं ॥
तौ षटरस व्यंजन बहु आली जगमें रचे वृथाहीं ॥
एकै कहैं सहेली ये मगचलैं पयादे जोपै ।
शिबिकादिक गज वाजि यान बहु बादि बनाये तोपै ॥ ३८ ॥
एकै कहैं सखी जो इनको विधि बन अटन दियोरी ।
मृदुल प्रसून बिछाय सकल मग कोमल कसन कियोरी ॥
एकै कहैं उसासन लै कै जो आपनो बसाहीं ।
दुहुँ वर बंधु सिया संयुत तो राखिय आँखन माहीं ॥ ३९ ॥
एकै कहैं सुनौ सिय स्वामिनि बचन कहत हम डरहीं ॥
निरखिरावरी कृपावनेरी तबहिं ढिठाई करहीं ॥
राजसुता यह ग्रामवधुनकी विनती सुनि चित दीजे ।
जानि गँवारि न विलग मानिये, चूक क्षमा सब कीजे ॥ ४० ॥